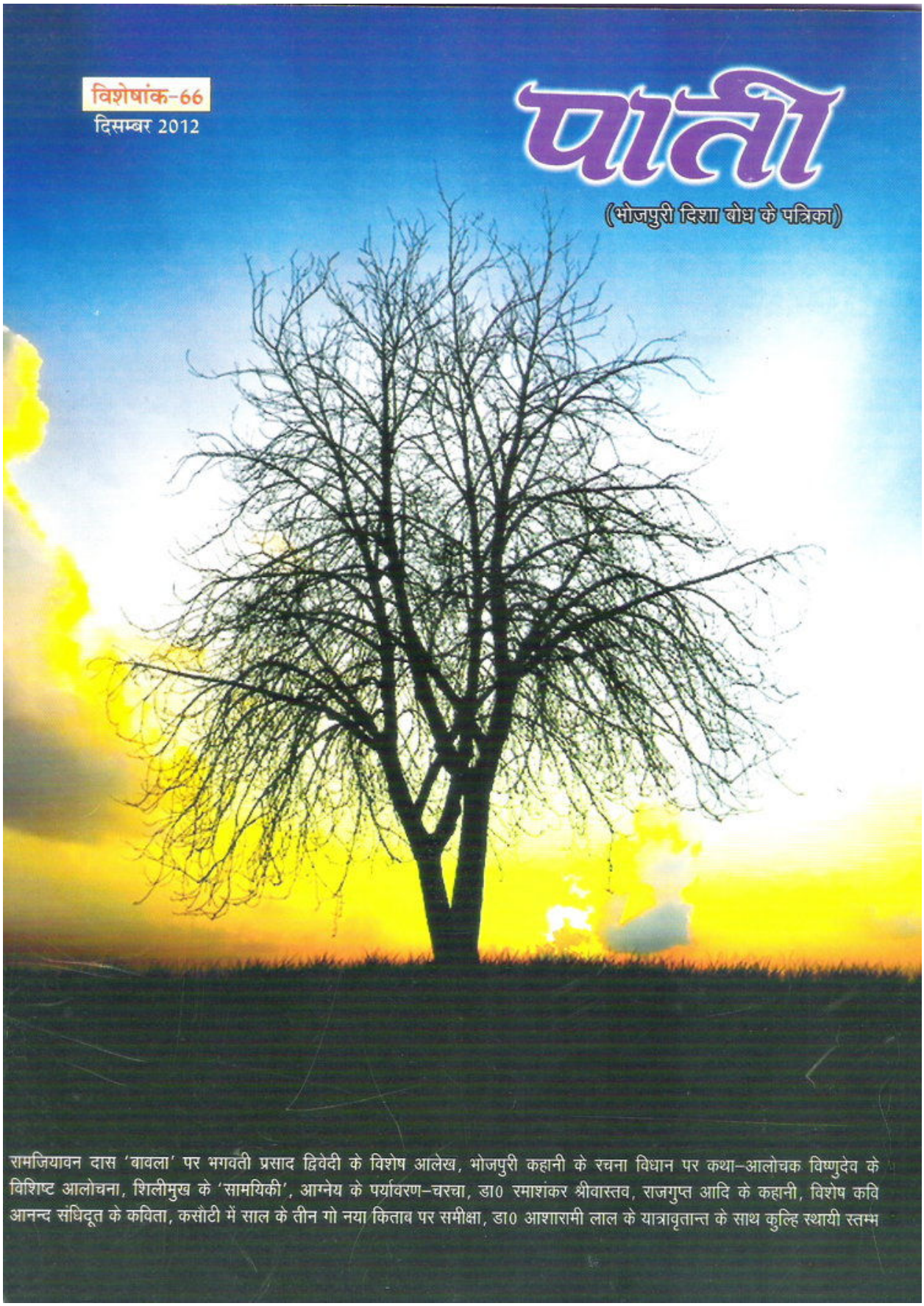
विशेषांक-66
दिसम्बर 2012
पाती
(भोजपुरी दिशा बोध के पत्रिका)
रामजियावन दास 'बावला' पर भगवती प्रसाद द्विवेदी के विशेष आलेख, भोजपुरी कहानी के रचना विधान पर कथा–आलोचक विष्णुदेव के विशिष्ट आलोचना, शिलीमुख के 'सामयिकी', आग्नेय के पर्यावरण–चरचा, डा0 रमाशंकर श्रीवास्तव, राजगुप्त आदि के कहानी, विशेष कवि आनन्द संधिदूत के कविता, कसौटी में साल के तीन गो नया किताब पर समीक्षा, डा0 आशारामी लाल के यात्रावृतान्त के साथ कुल्हि स्थायी स्तम्भ

कुछ आग.....कुछ राग

■ *अशोक द्विवेदी*

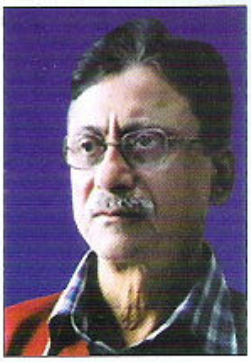

(एक) जहरपिरकी घाम कि उमड़ल घटा लिखिहऽ तनी।
गाँव के नइखे मिलत कुछुओ पता लिखिहऽ तनी।

ना खुशी ना चैन मन के, शहर सब कुछ खा गइल,
लोग उहवाँ, याद करतो बा कि ना लिखिहऽ तनी।

गुरमुसाइल बा सभे, हमसे उहाँ, बाकिर अबो,
भइया-भउजी करत होइहें आसरा, लिखिहऽ तनी।

अराजकता बा पुलिस सँग, राज मनसरहँग क बा,
रूख बदलले बा उहाँ कइसन हवा, लिखिहऽ तनी।

'खेत घूमत खा मराता जान', सुनलीं हाँ, उहाँ
खतम कब होई, इ खूनी सिलसिला, लिखिहऽ तनी।

हंस बाबा, लियाकत खाँ रहले ना अब, गाँव में,
अब करी के उहाँ, दुखियन के भला लिखिहऽ तनी।

यार तूँही बस अकेले जमल बाड़ऽ गाँव में
हमन में कहिया जगी ऊ हौसला, लिखिहऽ तनी।

(दू) संग सबका जिये-मरे लवटऽ!
अबकी लवटऽ त कुछ करे लवटऽ!

अपना माटीऽ क गंध खींचत बा
अब तऽ तूँ ओकरे आसरे लवटऽ!

तहरा असरा में बा दिया-बाती
हो गइल साँझ तूँ घरे लवटऽ!

बह-बिला जाव ना पुरुखन के घर
कम से कम एहू का डरे लवटऽ!

बूढ़ कबले लड़ी हुँड़ारन से
पुत्र बन, पितृ-दुख हरे लवटऽ!

जिन्दगी में अभी बहुत कुछ बा
रंग ओकरा में तूँ भरे लवटऽ!

अब इहाँ आगि में जरि के तप के
बन जा सोना अउर निखरे लवटऽ!

पाती

(भोजपुरी दिशा बोध के पत्रिका)

www.bhojpuripaati.com

अंक 66 **दिसम्बर 2012**

प्रबन्ध संपादक

प्रगत द्विवेदी

सह-संपादक

विष्णुदेव, सान्त्वना,

सुशील कुमार तिवारी, हीरा लाल 'हीरा'

सज्जा

आस्था

कंपोजिंग

कम्प्यूटर्स प्वाइण्ट

भृगु आश्रम, बलिया

इन्टरनेट मीडिया सहयोगी

डा० ओम प्रकाश सिंह

संचालन, संपादन

अवैतनिक एवं अव्यावसायिक

संपादक

अशोक द्विवेदी

विशेष प्रतिनिधि

गिरिजा शंकर राय 'गिरिजेश' (गोरखपुर), सुशील कुमार तिवारी (नई दिल्ली), भगवती प्रसाद द्विवेदी (पटना), विष्णुदेव तिवारी (बक्सर, आरा), विजय राज श्रीवास्तव (लखनऊ), गंगा प्रसाद 'अरूण', अजय कुमार ओझा (जमशेदपुर), डॉ० ब्रजभूषण मिश्र (मुजफ्फरपुर), डा० कमलेश राय (मऊ, आजमगढ़), डा० वशिष्ठ अनूप, विनोद द्विवेदी (वाराणसी), आकांक्षा (मुम्बई), आनन्द सन्धिदूत (मिर्जापुर), मिथिलेश गहमरी, कुबेर नाथ पाण्डेय (गाजीपुर), हीरालाल 'हीरा'(बलिया), प्रभात कुमार तिवारी (तूरा, मेघालय), रामानन्द गुप्त (सलेमपुर, देवरिया) प्रशान्त द्विवेदी (कोलकाता)

संपादन-कार्यालय :-

टैगोर नगर, सिविल लाइन्स, बलिया-277001 एवं

श्रीराम बिहार कालोनी, जिला जेल के पीछे, बलिया

फोन- 05498-221510, मो0- 08004375093

e-mail :- ashok.dvivedipaati@gmail.com

एह अंक पर सहयोग- २५/-

सालाना सहयोग राशि १३०/-

(पत्रिका में प्रगट कइल विचार, लेखक लोग के हऽ : ओसे पत्रिका परिवार क सहमति जरूरी नइखे)

एह अंक में.....

हमार पन्ना
- साल 2012 के बिदाई आ गलचउर/3–4

सामयिकी
- शान्ति बनवले राखीं/शिलीमुख/5–6

पर्यावरन –
- जल संकट आ पर्यावरन/भोला प्र0'आग्नेय'/7–8

अंक के कवि –
- आनन्द संधिदूत/9–13

कहानी –
- लावा–ठूरी /डा0 रमाशंकर श्रीवास्तव /14–18
- लोर से भींजल एगो सांझि /रामेश्वर प्रसाद वर्मा/19–20

कविता/गीत/गज़ल
- अशोक द्विवेदी/कवर पृ0 – 2 ● रामेश्वर प्रसाद सिनहा 'पीयूष' /कवर–3
- शशि प्रेमदेव/38 ● ओम जी 'प्रकाश'/39 ● हीरा लाल 'हीरा'/40
- बृजमोहन प्रसाद अनाड़ी /40, ● शिवजी पाण्डेय 'रसराज' /41

स्मरण –
- लोक परिपाटी के कवि : रामजियावन दास 'बावला'/भगवती प्रसाद द्विवेदी/21–25

लघुकथा –
- मंत्री के लोड/शिलीमुख /13 ● चानी के गोड़हरा/ राजगुप्त/18
- के घर–बाहर / राजगुप्त / 25

आलोचना –
- रचना विधान के बहाने भोजपुरी कहानी के पड़ताल /विष्णु देव तिवारी/26–37

यात्रा वृत्त –
- बद्री धाम/ डा0 आशारानी लाल/42–46

कसौटी –
- जिनिगी के बहुत करीब के कथा : 'अमर कथा'/डा0 अरूण मोहन'भारवि'/47–48
- लोकधर्मी काव्य–परिपाटी के कविता संग्रह : 'सूखि गइल नेह के नदी'/सान्त्वना/49–51
- 'चिमनी के धुआँ' : एगो पठनीय कहानी संग्रह/सुशील तिवारी/ 51

साहित्यिक–गोष्ठी –
- मैथिली भोजपुरी अकादमी दिल्ली के चार दिनी संगोष्ठी/सान्त्वना/52–53

- **राउर पन्ना** /54

साल (2012) के बिदाई आ गलचउर

जुग बदलल। सोच–विचार क पैंतरा बदलल। केहू सोचले ना रहल होई कि 'टू जी' आ ''थ्री जी'' अतना भूचाल ले आई। दरियें बइठि के, बिना भूइं पर गोड़ धइले मय काम हो जाई। वोट खातिर नोट बरिसी आ, बे नोकरी कइले, बइठले बेरोजगारी भत्ता पाई। वोट दिहले मोबाईल आ 'टेबलेट' मिल जाई। कबो केहू का मुहें सुनले रहलीं कि टेबलेटवा में दुनिया बन बा। अब कहां बइठले–बइठल दुनियां–संसार क मजा आ कहां ए बिना बिजुली पानी वाला पिछड़ा इलाका में खेती बारी?

सांचो ए भाई एह 'टेबलेटवा' में कमाल बा। धरती आ ओकरा प मौजूद चीजन के पता ठेकान त एमे बटले बा। अकासो क जनकारी बा। सरकार एकर नॉव 'आकाशे' ध लेले बा। **वोट खातिर धरती छोड़ि ''अकास'' बॅटाये क जोजना बा। पेट्रोल, डीजल, किरासन आ महॅगाई में मचल गैस सिलेन्डर गेम बहुत भइल अब जनता के कुछ नया सौगात ना मिली त जनता का कही? एही से 'आकास' बँटाई, 'कैश सब्सिडी' मिली माने वोट खातिर नोटो मिली। माने राजनीतियो अब एह हालत में पहुँच गइल बिया कि नाजायजो के जायज बना दिहल जाई।**

सरकार चाहऽतिया कि लोग खीस आ चिन्ता छोड़के एकदमे पटा जाव। चुका–मुका बइठि जाव कम्पूटर अस भा 'टेबलेट लैपटाप'' बनके काँखि का झोरा में लटक जाव। देहिं हिलवला आ काम कइला के जरूरते नइखे। जाही विधि राखे राम ताही विधि रहिये। रामोजी त कंप्यूटर में बन बाड़न। गूगल से खोजा जहें आ ई मेल भा जीमेल से भेजा जइहें। बाप रे बाप! एम्मे सज्जी देवता पित्तर आ देबी दुरूगा झलकिहें। कम्पूटर अदिमी खातिर एक लेखा कल्पवृक्षे बा। लइकन के जनमते टीपन बना लीं, भविस्य देखाइ लीं। लइकनो के ढेर मजा 'कम्पूटर–गेम' में आई आ पढ़ल चाहे त ओही प पढ़ि ली। ताजा समाचार से लेले हर विषय के जानकारी बा। इंटरनेट से जोरला क देरी बा ओकरा बाद दुनिया जहान मुठ्ठी में। लइकी के बियाह खातिर लइका आ लइका के बियाह खातिर लइकी कम्पूटरे में पसन हो जाई। बियाह–शादी, दोस्त दोस्तिन खोजाइ जाई। एमे 'फेस बुक', 'ई बुक' न जाने कवन कवन बुक आ खिड़िकी (विन्डो) बा। मन करे त, घरे बइठल बजार हाट, खरीद–बेची हो जाई। खुसी भा दुख के सनेसो भेजा जाई।

साँच पूछऽ भइया त ई लैपटाप कम्पूटर देस के किसानो मजूरन के मिल जाये के चाहीं। संगे संगे नेट कनेकसनवो फ्री रहे। तबे न ऊ जनिहें सऽ कि सरकार उनहन खातिर आ उनहन का लड़िकन खातिर बहुत कुछ कर रहल बिया। बेचारा ऊहो तनी आराम–विराम क लँ सऽ । ढेर दिन से काम करत करत खिया गइल बाड़न सऽ। डिस्कवरी चैनल में दुनियां क अजगुत–अचरज खाली शहरी लइके लोग काहें देखी? काहें ऊहे लोग कम्पूटर गेम खेली? ओइसहूँ ई देखि–देखि के ससुरन क आँख क रोसनी घट जाता, रीढ़ टेढ़ हो जाता, कुबराह बना देता। कतने जाना के गर्दन आ कपार में दरद बढ़ गइल बा। **ओह लोगन के फील्ड में उतारे के चाहीं। कुछ दिन खेती–बारी, पसुपालन सीखो। ओह लोगन का जगहा गाँव का लड़िकन के, शहर भेजाये आ पढ़ावें लिखावे के इन्तजाम होखे के चाहीं, जेसे पूरा देस में समानता आ समाजवाद के लहर पैदा होखे। हो सकेला कि ए लहर से कमजोर आ गरीब जनता जनार्दन के स्वास्थ, शिक्षा, न्याय आ सुरक्षा बिना भेदभाव के, संपन्न लोगन लेखा, समान रूप से मिले लागे। हो सकेला कि एह लहर**

से ऊँच–नीच आ छोट बड़ के असमानता आ भेदभाव मिटि जाव आ रोज रोज सुरसा का मुँह लेखा बढ़त आरक्षण के बेमारियो खतम हो जाव। हमन क देस के बड़ बड़ नेता जवाहर लाल नेहरू, इंदिरा जी एह राहे चले के बड़ा कोसिस कइल लोग। ओह लोगन क पछलगुवा समाजवाद से पता ना काहे मुँह मोड़ लिहल?

एह घरी त हमनी क सरकार अतना आधुनिक आ नया प्रगतिशील सोच वाली बिया कि देस त देस, बिदेसियो कंपनियन के इहवाँ आपन रोजिगार बैपार फइलावे क सुबिधा देले जातिया। उदारवादी बाजार में सबके ढुकवले जातिया/कुछ राष्ट्रवादी, समाजवादी आ देसी उद्योग व्यापार में लागल सर्वहारा क राजनीति करे वाला लोग चिहुके–चिचियाये लागल आ सब जगह 'बंद' आयोजित कइलस/**संसद में बहस का बाद, बहुमत के जोगाड़ कइके सरकारो ए लोगन के लहेंठ दिहलस। एही तरे एक बेर 'परमाणु' करारो पर हंगामा मचा के ए लोगन के कुछ ना भेंटाइल रहे। कम्पनियो अमरीका के हऽ त हथकंडो अमरीके लेखा। लोग कहत बा कि 'वालमार्ट' कंपनी एइजा बिल का 'फेवर' में गोलबंदी (लाबींग) कइलस आ एहमें करोड़न रूपया पहिलहीं फूँकि दिहलस। अब ई कूलि कहल–सुनल बेकार बा भाई। पहिलहूँ तऽ संपन्न आ शक्तिशाली समूह आ लाबी सरकारी कामकाज में आपन दखल आ प्रभाव राखते रहली स। तनी अउर बढ़ गइल त का भइल? आखिर जनतो के त फायदा होई। पहिले 'लोकतंत्र' पर 'दल तंत्र' हावी भइल अब ओकरा सँगे कंपनी आ कारपोरेटो तंत्र चढ़ि जाई त का बिगरे के बा? जइसे एक मन क बोझा तइसे डेढ़ मन।**

ई जमाना ''प्रान जाय पर बचन न जाये'' वाला थोरे हऽ कि बचन देके केहू, बन्हा जाई आ भीखम पितामह आ राजा दसरथ लेखा दुख उठाई। इहाँ सॉझ–बिहाने में लोग मुकर जाता। राजनीति करे वाला दल काहे ना कथनी–करनी में फरक करी? देखावे खातिर जनता का पक्ष में सरकार के विरोध करी, फेर बाद में सरकार का तरफ खड़ा हो जाई। जनता एतना देखे–सुने आ इयाद राखे जातिया? '**जइसन राजा ओइसने परजा'' अब एघरी ''सूट'' नइखे करत। अब ''जइसन प्रजा ओइसने राजा'' ढेर ''सुटेबुल'' लागऽता। काहेंकि सब देखियो जानि के परजे (जनता) न एह नेतन आ दलन के सरकार बनावे खातिर चुनत भेजत बिया। लोगन के देस ले ढेर अपना जाति–वर्ग आ फायदा के चिन्ता बा; ऋण राहत, अनुदान, आरक्षण, आर्थिक मदद, मोबाइल आ टेबलेट से मतलब बा।** वोट खातिर नोट मिले, एहले बढ़ के का बा ? आर्थिक सुधार, विकास, सुशासन आ हल्ला बोल रैली से हवा बान्हे वाला पार्टी आ नेता जनता का नस आ मन–मिजाज के पकड़ लेले बाड़न सऽ। त जवन भइल तवन भइल अब अगिला साले जवन होई तवन होइबे करी। चिन्ता फिकिर कइला के ना, फेंकला के चीझु हऽ ! जतने फेंकाई, ओकरा दोबरी आई ! आई त आवो !!

अशोक द्विवेदी

सामयिकी

शान्ति बनवले राखी ! धीरज से काम ली !!

❑ शिलीमुख

साल के सुरूआत से, ओकर आखिरी पख आवत आवत देश में आ देश के राजधानी में, सुरक्षा, नागरिकता, सोच आ सभ्यता के जवन विकृत बदरंग रूप देखे के मिलल, ऊ लोगन के बहुत क्षुब्ध आ दुखी कइलस। लइकियन आ औरतन का साथ बदसलूकी, छेड़छाड़, खुलेआम अभद्र आचरन आ बलात्कार त आम बात रहल, बाकिर जोर–जबरदस्ती आ समूह–बलात्कार के जवन घिनौना दरिन्दगी देखे सुने के मिलल ओकर बयान करे में कवनो संवेदनशील आ प्रानवान इन्सान के जबान लड़खड़ाई आ लिखत खा हाथ काँपे लागी। ई समाज, ई राज, ई बेवस्था (सिस्टम) मूक दर्शक, सुन्न श्रोता का भूमिका में आ ओकर आन्हर कानून, हृदयहीन निरदय क्रूर पुलिस, राजनीति सबकर ढुलमुल रवैया में पल्ला झारल देखि के लाजो लजा गइल। सहनशीलता के एगो सीमा होला। धीरज क परीक्षा रोज रोज होई त का होई ? सबुर क बान्ह टुटबे करी !

जहाँ साँस लेबे भर हवा खोजत, ठिठुरावत सर्दी का खिलल घाम में कुनमुनाये क उपाय खोजत लइकी (बेटी भा बहिन) अपना अगरी–कगरी (इर्द–गिर्द) सरसरात बिखधर साँपन का बीच डेराइल–सहमल असुरक्षित महसूस करीं; उहाँ घुटन का आक्रोस ना होई त का होई ? जहाँ, ट्रेन, बस, आटो, टेक्सी, रेक्सा से सफर करत, इस्कूल, कोचिंग आ आफिस जात लड़की के अबला, असहाय आ निरूपाय समझ के समाज का भीतर के भेड़ियन आ इन्सान का भीतर छिपल दरिन्दन के बहशीपन, असभ्य नवजवानन के मनसोखई आ छिछोरापन उमड़ि के ओकरा सम्मान आ मरजादा के तार–तार करे लागी त आन्हर आ गूँग बहिर समाज में बाँचल खुचल इन्सान का भीतर उबाल आ खीसि उपजबे करी। जहाँ बेइज्जत होत एह लड़की के बाप, भाई, दोस्त आ शुभचिन्तक के खुलेआम मारल–पीटल आ कतल कइल जाई आ सत्ता, अधिकारी आ संपन्न लोगन का हाथे बिकाइल, चाकर पुलिस अनदेखा करी, पकड़इला प कुछ ना करी, उहाँ आम शहरी शान्त कइसे रही ? देश में कवन जगह सुरक्षित बा, जब राजधानी के ई हाल बा ?

कानून–बेवस्था आ पुलिस अइसहूँ आम लोगन के आ ओकरा मौलिक अधिकारन के रक्षा कइला, पीड़ित के मदद कइला, इहाँ तक कि ओकर फरियाद सुनला आ रिपोट लिखला में, कबो ओतना तेजी आ तत्परता नइखे देखवले, जेतना शान्ति से विरोध करे वालन पर भा निर्दोस के मरला–पिटला में देखवले बिया। दमन अत्याचार आ भ्रष्टाचार का दिसाईं आगा रहला में ओकर शान आ पहिचान बा। नेता, मन्त्री, अधिकारी आ अपना अफसरन के सेवा सुरक्षा कइला से परेशान पुलिस, जब अपने विभाग के इन्सपेक्टर के अपना बेटी से छेड़खानी के विरोध करत पिटात मरात आ कतल होत रोके में असमर्थ असहाय आ ढुलमुल हो जातिया, त भला ओसे का उमेद कइल जाव ? हमनी के समूचा सिस्टम अइसहीं लटर–पटर चलत आइल बा, बस हुक्मरानन के नीन में खलल ना परे के चाहीं। टोक–टाक आ विरोध कइल त जुलुमे बा !

दिसम्बर का आखिरी पख मे, चलती बस में छव घंटा तक एगो लइकी अपना सम्मान आ आबरू खातिर जूझल ओकरा साथ 'गैंगरेप' भइल, ओकरा साथ के लइका के बुरी–तरह मारल–पीटल गइल। चेहरा से छाती, पेट से पैर तक खून से लथपथ, भँभोरल–नोचल गइल अधमरी लड़की सड़क से उठा के, हास्पीटल का वेन्टिलेटर पर जिनिगी आ मउवत का बीच टँगा गइल। पुलिस के लापरवाही, अधिकारियन आ अफसरन के ढुलमुल रवइया, नेता मंत्रियन के भरमावे वाला आश्वासन से उबियाइल, असुरक्षा से बौखलाइल यथास्थिति से क्षुब्ध खिसियाइल

होग, आखिरकार सड़क पर उतरिये आइल। एह बर्बर–सामूहिक दरिन्दगी पर तत्काल तेज 'ऐक्शन' के भरोसा देबे में हिचकिचात सरकार कुछ ठोस करित, एकरा पहिलहीं मुख्यमंत्री के आवास, राष्ट्रपति भवन, इन्डियागेट, नार्थब्लाक का तरफ पढवइया लइका लइकी, घरेलू औरत आ आफिसन में काम करे वाला मर्द–मेहरारून के भीड़ 'न्याय' के गुहार करत उमड़ि गइल। देंहि कँपावत शीत लहरी आ ठंडा का बावजूद राजनीति से हमेशा दूर रहे वाला आम–युवा आ घरेलू लोगन के एतना बड़हन विरोध प्रदर्शन दिल्ली का राजपथ पर आजु ले कबो ना देखल गइल रहे।

एह रोंआ खड़ा करे वाला बर्बर कांड पर पूरा देश में गुस्सा फूटल। हर जगह विरोध प्रदर्शन भइल बाकि देश का राजधानी में अपने से उपजल, ई 'जन–विरोध' असाधारन, अतना भावुक आ अतना प्रबल रहे कि सत्ता के शिखर ले हिलि गइल। **इन्साफ आ सुरक्षा माँगत, 'अभी नहीं तो कभी नहीं' के भीतरी संकल्प का साथ जब हजारन का संख्या में राजपथ इन्डियागेट आ बिजय चौक प लोग उमड़ल, तबे सरकार के आला नेतन, मंत्री आ प्रधानमंत्री के दखल देबे आ, भरोसा जगावे के चाहत रहे बाकि देरी भइला के नतीजा में लोग अउर भावुक हो गइल। प्रशासन, पुलिस, रैपिड फोर्स लोगन के हटावे, भगावे आ आगा बढ़े से रोके खातिर सैकड़न राउन्ड आँसू गैस क गोला छोड़लस, लाठी चार्ज कइलस, ठिठुरावत जाड़ में, दमकल से बरफ नियर पानी के तेज धार फेंकलस। शान्ति से विरोध करत लोगन के इहे धैर्य–परीक्षण महँग परल आ लोग अड़िया, जिदिया गइल। जाड़ा में रात भर मोमबत्तियन का साथ, जनता के टीस जरल, खीसि जरल आ आखिर में बर्बर तरीका से लइका–लइकी, औरत, बूढ़ सबकर धुनाई– धुलाई का बाद, घरन में सुरक्षित मंत्री, अधिकारी, बुद्धिजीवी, कननूची आ मानवतावादी बड़का लोग अपील कइलस....''शान्ति बनवले राखीं!'' धीरज से काम लीं !! हमके अफसोस बा !! बाकिर शान्ति बनवला में हमार सहजोग करीं !!!**

ताजा समाचार ई बा कि दिल्ली में, राजपथ, इंडियागेट, विजय चौक, नार्थ, साउथ ब्लाक जइसन सरकारी एरिया के रास्ता बंद बा। धारा 144 लागू बा। मेट्रो बस सब बंद। बाकी एरिया जाम बा। कहीं आइल–गइल कठिन बा। चप्पा चप्पा पुलिस बैरीकेटिंग, चेकिंग चालू बा। एगो तनाव भरल चुप्पी आ शान्ति बा। आप सभ से फेर अपील बा कि ''शान्ति बवले राखीं!! प्रधानमंत्रियो जी अंत में इहे अपील कइले बानी!! रउरा सभ के धनबाद कि रउवा सरकार के जगवनी आ सरकारों के धन्यवाद कि देरिये से सही ऊहो जागल !!!

●●

विशेष अनुरोध–

अपना मातृभाषा के स्तरीय, कला संस्कृति आ भाषा–साहित्य के संरक्षा आ विकास खातिर, भोजपुरी दिशाबोध के पत्रिका ''पाती'' के सालाना सहयोग राशि भेजि के नियमित ग्राहक/सहयोगी बनीं। सालाना सहयोग, डाक व्यय सहित रु0 130/ एकल भा सामूहिक रूप से नाम, पता (पिन कोड सहित), मोबाइल नम्बर का साथ, मनीआडर भा ''ड्राफ्ट'' डा0 अशोक द्विवेदी, संपादक ''पाती'', बलिया के नाम से भेजीं। जवना भाई लोग के पास डाक से पत्रिका पहुँच रहलि बा, ओहू लोग से आगा सहयोग के उमेद पत्रिका परिवार करत बा।

●●

पर्यावरन

जल संकट आ पर्यावरन

❑ भोला प्रसाद 'आग्नेय'

विश्व के सबसे पुरान ग्रन्थ, वेद, पुराण भा उपनिषद् आदि में जल के विशेष महत्व क उल्लेख मिलेला। खाली आदमिये नाहीं बल्कि हर जीव, जन्तु भा बनस्पति के जीवन के आधार जले हऽ। कवनो क्षेत्र में जल के प्रदूषित भइला प हर जीवधारियन के जीवन संकटमय हो जाला। विज्ञान आ प्रौद्योगिकी के विकास हमहन खातिर आनन्दमय आ सुखकर जरूर बा, बाकिर ओकर दुष्परिणाम ई बा पूरा वातावरणे प्रदूषित हो रहल बा। आ ओमे जल प्रमुख बा। जवन मुख्य नदी बाड़ी स, ऊ कारखाना के कूड़ा–कचड़ा से प्रदूषित हो रहल बाड़ी सऽ।

हमहन के रहनो–सहन आज अवैज्ञानिक आ प्रकृति से दूर भइल जाता, जवना के प्रतिफल ई बा कि गाँवन के पोखरा भा ईनार या त सूख जाता आ चाहे प्रदूषित हो जाता। एकरे अलावे जल के उपयोग के तरीका बहुते बदल गइल बा, जवना कारन विश्व के अनेक नदियन के हाल ई बा कि ओकर पानी समुद्र तक ले पहुँचते नइखे। मछलियन के संख्या में लगभग तीस प्रतिशत के कमी आ गइल बा। एगो अनुमान के आधार पर ई कहल जाता कि बीसवीं शताब्दी में विश्व के लगभग आधा नम भूमि नष्ट हो गइल। एकर कारन ई बा कि नदियन में गिरे वाला ताजा जल के मात्रा में गिरावट आ डेल्टा क्षेत्रन में लवणीय जल के मात्रा में बढ़ोत्तरी। ताजा आ लवणीय जल के संतुलन बिगड़ गइल बा।

आवे वाला समय में जल के संकट अउरी गम्भीर होखे वाला बा। पिछला पचास बरिस में विश्व के जनसंख्या तीन अरब से बढ़ के लगभग छः दशमलव पाँच अरब हो गइल आ जल के प्रयोग लगभग तीन गुना बढ़ गइल। जल संकट खातिर जिम्मेदार जनसंख्या से अधिका रहन–सहन के तरीका में परिवर्तन बा। खेती के काम में जल के प्रयोग पहिले के अपेक्षा अब ढ़ेर हो रहल बा। पहिले धान भा गेहूं के खेती ओइजे होखे, जहाँ कवनो झील भा जल के प्राकृतिक स्रोत रहे, नाहीं त अइसने अनाज बोवात रहे, जवना में जल के जरूरत कम होखे। एह तरे आज तीन चउथाई जल खाली खेती के काम में खर्च होता। शोध के आध ाार पऽ एगो खाद्य कृषि संगठन ई अनुमान लगवले बा कि अगर जल के अधिक प्रयोग पऽ प्रतिबंध ना लगावल जाई, त सन् 2025 ले जल के आवश्यकता साठ प्रतिशत अउर बढ़ जाई।

जल संकट के कारनन में से एगो कारण जलवायु के परिवर्तनों बा। ई ध्रुव सत्य बा कि भूमण्डलीय उष्णता जल चक्र के बुरी तरह प्रभावित क रहल बा। जलवायु परिवर्तने के कारण कुल्ही क्षेत्र गँवे–गँवे सूखल जाता आ सूखा अउर बाढ़ के विभीषिका बढ़ल जाता, एह प्रकार के परिवत्रन हमनी के तीन तरह से प्रभावित क रहल बाटे। पहिलका ई कि वनस्पतियन के बढ़े के तरीका बदल गइल, दुसरका ई कि जल प्रबंधन के समस्या बढ़ि गइल आ तिसरका ई कि पश्चिम देशन के सरकार बायो ईंधन के सब्सिडी देबे लागल जवन जल संकट के अउर बढ़ा रहल बा।

आपन देश भारत के हाल ई बा कि सिंचाई, उद्योग आ घरेलू कामन खातिर भूमिगत जल के दोहन खूब हो रहल बा। उपग्रह से प्राप्त आँकड़न के आधार पर हम ई कह सकऽतानी कि जमीन के अन्दर पानी के स्तर तेजी से नीचे गिर रहल बा। अगस्त 2002 से अक्टूबर 2008 के बीच चार सेंटीमीटर प्रतिवर्ष

के दर से पानी के स्तर नीचे गिरल बा। ई बात अमेरिका के नासा आ जर्मनी के एयरोस्पेस केन्द्र के संयुक्त तत्वावधान में छव बरिस के शोध के आधार पर कहल जा सकेला। सन् 1960 के दशक से पानी के उपयोग बहुते बढ़ गइल बा। एकर कारण बढ़त आबादी आ हरित क्रान्ति बा। काहें कि हरित क्रान्ति से अन्न के उत्पादन त बढ़ल जरूर बाकिर पानियों के दोहन बहुते भइल जाता। विचारणीय विषय ई बा कि अगर पानी के गिरत स्तर पर ध्यान नाही दियाई त ओकर दुष्परिणाम् बहुत जल्दिये सोझा आ जाई।

जल संकट आ पर्यावरण दुनों एक दोसरा के प्रभावित कर रहल बा। पर्यावरण में परिवर्तन के कुल कई गो कारण बाड़न स, ओमे प्रमुख बा मरकरी के प्रयोग। मरकरी नियंत्रण खातिर केन्या के राजधानी नैरोली में यू0एन0 इनवायरमेन्ट प्रोग्राम के गवर्निंग काउन्सिल के पचीसवां सत्र में एगो आयोजन भइल जवना में 120 देशन में मरकरी से फइले वाला प्रदूषण के नियंत्रित करे खातिर आपसी सहमति भइल। एह कान्फ्रेन्स में अमेरिका के तरफ से न्युरोटाक्सिक तल पर रोक लगावे के बात कहल गइल आ एगो नया संधि के पक्ष में आपन मत रखल गइल। ओ घरी भारत के ओर से मरकरी मुक्त टेक्नालोजी अपनावे खातिर आर्थिक मदद के बात कहल गइल। एपर सभकर सहमतियो बन गइल बाकिर ओकरे बाद ओह दिशा में हमहन किहाँ कवनो सार्थक पहल ना भइल।

समुद्रो में अति सूक्ष्म पादप नीयर जीवधारी बाड़न स, जवन पादप प्लवक कहालन स। संसार के कुल्ही महासागरन में ई खाद्य शृंखला के आधार हउवन स। ई पर्यावरण परिवर्तन खातिर बढ़िया संकेत बा। एकर विश्वव्यापी प्रभाव जलवायु पर पड़ेला। आई0आई0टी0 कानपुर में एगो अइसन कीटनाशक तैयार कइल गइल जवन पर्यावरण हितैषी भइला के साथे, आर्गेनिक खेती खातिर महत्त्वपूर्ण रहल। वर्तमान रासायनिक खाद से मिट्टी के ऊर्वरा शक्ति कमजोर पड़े लागता बाकिर ई कीटनाशक मिट्टी के रसायन आ पी0एच0 मान में संतुलन बनवले राखे में सहायक बा।

ग्लोबल प्रोजेक्ट के तहत वैज्ञानिकन के अध्ययन का बाद अनुमान ई लगावल गइल कि इक्कीसवीं सदी के आखिर तक संसार के तापमान के छव डिग्री तकले बढ़े के सम्भावना बा। एके रोके खातिर आपन कल–करखाना से निकले वाली कार्बन डाई आक्साइड गैसे के रोके के पड़ी, नाहीं त पर्यावरण आ जल संकट के भयावह स्थिति हमरा सोझा जल्दिये आ जाई। लगातार जंगलन के कटाई से धरती के सोखे के शक्ति कम होत जाता। जीवाश्म इंधन से निकले वाली कार्बन डाई आक्साइड गैस 2002 से 2008 के बीच 29 प्रतिशत बढ़ल बा।

एही कुल कारनन से प्रबाल भित्ती खतम होखे के कगार पर बाड़िन स। अगर कवनो सार्थक कदम ना उठावल गइल त हमरे सोझा इक्कीसवीं सदी के आखिर तक प्रवाल भित्तियन के समस्या खड़ा हो जाई। आखिर में ईहे निष्कर्ष निकलत बा कि एह तबाही के रोके खातिर ग्रीन हाउस गैसन के उत्सर्जन में भारी से भारी कटौती आवश्यक बा आ संगे–संगे तटीय क्षेत्रन पर नियंत्रणो जरूरी बा।

●●

आनन्द संधिदूत के कुछ कविता

[एक] : पराजित पीढ़ी के इतिहास

विजयगीत गावत कविता
जब पराजित पीढ़ी का उत्तराधिकार में आवेले
मुँह अन्हारे राजपथ से हटा दिहल जाले
आ दबा के रख दिहल जाले
गहन अन्धकार से भरल गली–कोली में
सताब्दियन–सताब्दियन खातिर।

विजयगीत गावत कविता
जब पराजितपीढ़ी का उत्तराधिकार में आवेले
त ज्ञान ना श्रद्धा बन जाले
राजनीति में अचरज भरल क्रिया
धर्म के कर्मकाण्ड बन जाले
उत्साह में मर मिटे के घटना
कवनो तरह जीवित रह लेबे के तमन्ना बन जाले
सताब्दियन–सताब्दियन खातिर।

ईहे ना
विजयगीत गावत कविता
जब पराजित पीढ़ी का उत्तराधिकार में आवेले
त आपन अर्थ खो बइठेले
अच्छर–अच्छर अपठ्य हो जालन स
कथा अज्ञेय हो जाले
बड़े–बड़े महानायकन के नाँव
घिस के जानवर के नाँव हो जाला
आ कविता
जन्तर–मन्तर नियर
ताबीज में दुबक के
गर्दन में झूल उठेले
सताब्दियन–सताब्दियन खातिर।

विजयगीत गावत कविता
जब पराजित पीढ़ी का उत्तराधिकार में आवेले
नारियल फोरि के नहवावल जाले
कपूर जराइ के सुखावल जाले
सुख–समृद्धि आ सन्तान कऽ
मान मनौती बन के रह जाले
सताब्दियन–सताब्दियन खातिर।

●●

[दू] आई मइल छोड़ावल जाव !

बल्टी–गगरा लोटा–थरिया जवन मिले, घुड़कावल जाव।
आवऽ जिनगी, भर अँकवारी हँसी–खुसी परिचावल जाव।
चहलीं लोकप्रियता, डललीं हाथ बील में, पा गइलीं
एह नागिन के खींच सड़क पर सइ–सइ नाच नचावल जाव।
एक अकेले निकलत–निकलत बड़ा काफिला बन जाला
सभे बराबर, जिन केहू के एकर श्रेय, थमावल जाव।
कदर भावना के जिन चाहीं, पड़ जाइब परसानी में
होइ सके त आपन इच्छा, अपने बइठ पोल्हावल जाव।
हम अगुतइलीं रोज–रोज के प्रेम परीक्षा दिहला से
ए मन बइठऽ ई 'फरमेल्टी' अब केतना दोहरावल जाव।
जवन सामने ना उड़ पावे, तवन बाद में जम जाला
रगर–गर के जमल हँसी पर आई मइल छोड़ावल जाव।
क्रूर न रहलीं, ना बोललीं, कि रहुए नशा अकेलापन
एह अरिआइल भोलापन के क्षमा करत, गोहरावल जाव।
कइसन खल, कइसठ शठ, कइसन दुष्ट–क्रूर हम का जानीं।
सबका सुख–सम्मान लतर तर आईं ठाट लगावल जाव।
हमरा हाथे बस मुसकाइल जिनगी बिया, न मउअत बा।
संधिदूत एही जादू के जेतना सगड़ जगावल जाव।

[तीन] एटम बम का राखी से

हीरा–मोती–साफा मस्तक रचले चन्नन काठी से।
उज्जर ना इतिहास बने लिखले बकुला का पाँखी से।
चोरनी–चटनी–लबजी फइलल बिया हुकूमत देसे देस
हम देखलीं सम्प्रभुता रेंगत यू0ए0स0 का बइसाखी से।
ना दिमाग, अँगुरी का बल पर, सबके सधले अदिमी बा
रहित पशु का, अँगुरी देखतीं के जीतित तब हाथी से।
अँगुरी जवन उगौले बाटे खेते–खेते केसर–फूल
ऊ अँगुरी जिन खेत बिगाड़ो एटम–बम का राखी से।
आपन–आपन दीठि कहीं कि बिना हाथ का कीरा के
केहू लावा–दूध चढ़ावे, केहू पीटे लाठी से।

[चार] कइके जतन दबा देहीं

हरफे–हरफे काजर–टीका अंग–अंग नोक्ता देहीं।
हमरो एगो शे'र समय का पहिया पर लिखवा देहीं।
हम का लिखीं बसीयत हमरा आव–जाव हइये ना
बा खाली बदनामी ओके गंगा में सेरवा देहीं।
चाहीं इहे पसर भर भोजन, सूतत बेर पहर भर ठौर
एतनो नाहीं मिली त आगे चाहे जवन सजा देहीं।
पढ़ला पर सत्ता के कहनी दुनियाँ समझ में आइल ना
ओह कहनी में अपनो कहनी हीरा अस जड़वा देहीं।
रोवत–हँसत अतीत देख के चक्कर आइल गिर पड़लीं
हमरो आँखी कोल्हू पशु के नजरबन्द चढ़वा देहीं।
घृणा रेत पर माथ पटक के लवटे लहर मोहब्बत के
एह पटवन में, दुइयो पतई कवनो तरह उगा देहीं।
नजर कबूतर के सन्देसा जिन बइठल दउरावल जाव
एह पुतरी पर धइ तरहत्थी उमगल नदी दबा देहीं।
गम पर डाल हँसी के परदा जी लिहला में इज्जत बा
हमरा बाद उदासे केहू कइके जतन हँसा देहीं।

[पाँच] : ओझाई

जै–जैकार मनाईं
गाँधी महराज के गोहराईं
जवाहिर के बोलाईं
मौलाना आजाद के कसम खाईं
कि, दोहाई भगवान बुद्ध के
राजा असोक के
कि, जेकरा परताप के बाजे डंका
कि, ध्वजा फहराले कीरति के
फिरल दोहाई साबरमती के
पवनार के सदाकत आश्रम के
कि, नाँव लेत रोआँ फरफराय
जीव गनगनाय
कि, दोहाई राजेन्दर परसाद आ सरदार पटेल
ऊलल–भूलल, छूटल–छटकल
नेता पुरनिया के
देस–दुनिया के
कि, जेकर खाईं
ओकर जै–जैकार मनाईं
कि, जै हो गीता–कुरान
दोहई बारम्बार
गुरु की जै
कि, जै मौलाना मोहम्मद अली
तोड़ दऽ दुसमन के नली
कि, तोहरा परताप से ऊ गोता लगाईं
कि, समुन्दर सोख जाईं

कि, हिमाले हींग के माफिक उड़ाईं
कि, पुरुबे रछपाल करें सि. आर.दास. बलिस्टर
पछिमे लाला लजपत राय
उतरे मदन मोहन मालबी
मोती लाल नेहरू
दखिने राजगोपालाचारी
कि, नाँव लेत कठया मार जाय
बकार न आवे
कि, फिरल दोहाई सरोजिनी नायडू
कमला नेहरू
कस्तूरबा माई के
कि, जेकरा परताप से बिजय पाईं
मुँहे चन्नन लागे
लाज रहे
चढ़ बइठीं दुश्मन का कपार पर
मँहगाई के झोंटा कबारीं
बेरोजगारी के आग लगाईं
गरीबी के नटई दबाईं
करेजा पर चढ़ बइठीं
पूछीं–बोल !
हीत के कि नात के
कूल के खूँट के
अमेरिका के रूस के
पूरब के पच्छिम के
बोल कहाँ के हई
बामति हई कि चुरइल ?
सि.आइ.ए. के करामात हई
कि, के.जी.बी. के पाप हई ?
दोहाई बाबा बिनोबा के
बोल भूदान से मनबी
कि, सर्वोदय से मनबी
कि, अन्तोदय से मनबी
कि, जै समाजवाद के अखाड़ा
बाजे गल बजउअल के नगाड़ा
कि लगाईं बैकवर्ड के तड़ातड़ चटकना
चलाईं समग्र क्रान्ति के गरमे गरम सिंउठा
दोहाई हिरिया–जिरिया
ट्वन्टी प्वाइन्ट प्रोग्राम के छूऊऊऊऊ।

XXX XXX XXX

लौंग खड़ा हो गइल
भिलाई के लवर लागऽता
तारापुर के बिजलीघर जागऽता
थुम्बा क राकेट नाचे लागल
सुबास बाबू आँख का सोझा खड़ा बाड़न
कहऽताड़न
कि घरे क बामति हऽ
कुमति–विमति हऽ
चउदह सौ बरिस से तंग कइले बा
दस बरिस अउर तंग करी
परिवार नियोजन माँगऽतिया।

अरे !
रउरा के हईं ?
दुपट्टा धइले
पगरी बन्हले
दोहाई सरकार के
आइल हईं त नाँव बताईं !
सेवक चिन्हलस ना !!
ओ होऽ ।
रउरा हईं
लोकमान तिलक
गोपाल कृश्न गोखले
महरसी अरबिन्द
कि दोहाई
लछिमी बाई
कुँअर सिंह
ताँतिया टोपे के
कि रउरा के सेवक भुलाइल नइखे

सेवा में दसो नोंह जोड़ले खड़ा बा
रउरा नाँव पर परैमरी स्कूल खोलब
चन्दा सोसैटी बनाइब
अनाथालय चलाइब
नाँव उजागिर करब
चउरा बान्हब
स्टैचू लगाइब
बरम्ह नियर पूजब
कि जेकर चुन्न ओकर पुन्न
जै हो बाबा रइछा करऽ
छू ऊ ऊ ऊ .....।
(अन्त में)
हई लऽ
ओबरा क भसम खिया दीहऽ
मथुरा के तेल रिफाइन पिया दीहऽ
नीक भइला पर भाखड़ा नंगल में नहवा के
पाँच गो विश्व बैंक का इन्स्पेक्टर के
घरे भोजन करा दीहऽ
राम चहिहें त पूरा मुलुक के
आराम मिल जाई। ●●

लघु कथा

मंत्री के ' लोड ' आ सड़क

❑ **शिलीमुख**

बिन्हाचल अपना दहेजू मोटरसाइकिल पर अपना सुधाकर काका के बइठा के शहर का बैंक खातिर निकललन। बरसात के दिन रहे। झींसी में हवा के झटाँस से बूनी क छिटकी अँखियो ले पहुँच जाव। ऊ भुसुराये सुरू कइलन, 'रामेजी बेड़ा पार लगावसु.....एह दिन में, अइसन जनमारू सड़क पर.....आज एह नई गाड़ी के त जवन दुर्गति होई, होइबे करी हमनियो के जवन बाँचल होई पूरे हो जाई...।

'गाड़ी चलावत खा अंट–शंट ना सोचे के चाहीं। सुधाकर काका समझवलन। खड़ंजा का बाद सड़क आवते गाड़ी जइसहीं इस्पीड पकड़लस सोझा से आवत हिचकोला मारत एगो जीप लउकल। सड़क का दूनो ओर गड़हा आ पाँक रहबे कइल, ओह पातर सड़कियो पर कम गड़हा आ पाँक पानी ना रहे। ब्रेक मारत मारत, बिन्हाचल के एगो गोड़ गड़हा का कनई में ढूकि गइल। जीप के पछिला टायर गड़हा के पाँक–पानी सहोंथि के छिटका मारत निकल गइल। आपन कुर्त्ता पर छिटंका देखि बिन्हाचल जीपवाला के गरियावे लगलन, 'देखलऽह नू काका, सरवा कतना दबाइ के गइल हा?'

'ओकरा प हमनी के का अख्तियार बा? एइसन सड़क पर तनी बाँचिये के चले के चाही।' सुधाकर काका समझावे के कोसिस कइलन। आगा थोरिये दूर गइला का बाद दूनो ओर से धँसल सड़क में बीच के डँड़ार लेखा राह से, मोटरसाइकिल तनिकी सा बिछिलल आ गहिर गचकी वाला गड़हा में हेल गइल। भरल पानी से थाह ना लागल कि एतना गहिर गड़हा सड़कों पर होई। टेक लेबे में, बिन्हाचल के दूनो गोड़ पानी में। फेर कइसहूँ गड़हा में से गाड़ी बढ़ावत बिन्हाचल के धीरज जवाब दे दिहलस '' तूँ ही बताव ऽ सड़क प हइसंन नाला खोनाला? ई ठीकेदरवो कुलि लूट लेत बाड़न सऽ। बताव ऽ एह जिला में चार गो मंत्री बाड़े स...एगो मंत्री त हमनिये के विधायक बा। तब्बो ई हाल बा...' बिन्हाचल झुँझलाते कहलन।

–'ओही से नू।' सुधाकर काका अटकि गइलन

–का ओही से बिन्हाचल क गोड़ फेरू पाँकी में परल

–ओही से गड़हा अउर बढ़त जाता.. सुधाकर काका, चिहाइल बिन्हाचल के समझावे के कोसिस कइलन. .....मान ऽ तानी कि सड़क पर जीप बस चलला से ढेर लोड बा, नू बाकि हमरा समझ से एही सब लोड में मंत्रियनो के त लोड बा, तबे नू सड़की पर एतना गहिर गड़हा बा।

बिन्हाचल कुछ ना समझलन ''तुहऊँ नू काका गजबे बात करेल ऽ!' सुधाकर फरियाइ के समझवलन '' देख ऽ गाड़ी आ सड़क पर जनता के लोड बा आ जनता पर मंत्रियन क लोड बा। पहिले पाँच–जिला में एकाध गो मंत्री रहलन अब खाली हमरे जिला में चार गो बाड़न, त लोडवा अउरी बढ़ल कि ना?''

●●

कहानी

लावा-ठूरी

❑ डॉ0 रमाशंकर श्रीवास्तव

भर घरे चर्चा होखे लागल कि सूरत से बाबूजी के लगे फोन आइल रहल ह। खुश भइल बाबूजी अंगना में अइनी। अंगना में त केतना लोग रहे – चाची सिलवट पर मसाला पीसत रहली, दाई आटा सानत रहली, भउजाई अपना बड़कू बेटा के पीठ में तेल मलत रहली, उनकर छोट–बहिन हँसते घर में ढुक गइली। मगर बाबूजी केहू से कुछ ना कहनी। हमरा माई के पुकरनी– 'एजी केने बानी ? हेने आईं, एगो खुशखबरी बा।'

माई बीचिला घर में पलंग पर बइठ के धोबी के घर से आइल धोअल कपड़ा के मिलान करत रहली। आ शायद बड़बड़ातो रहली कि मंगरू बो फेन हमरा बाबू के डोरिया कमीज भुलवा देहलस का दोनी, तले बाबूजी के दोसरका हाँक पर अंगना में आके माई कहलस– 'कहीं ना, का कहत बानी। रउआ त इचकी–इचकी बात के खुशखबरिए कहीले। परसों चार गो सिरफल कीन के ले अइनी त ओहू के खुशखबरी कहत रहनी।

माई के कमेंटरी पर बाबूजी तनी मुस्कुरइनी– आरे ना जी, आज बात दोसर बा। अबे बड़ जाना के सूरत से फोन आइल हऽ कि उ परसों घरे आवत बाड़े। भइया के अवाई के खबर सुन के माई खुश हो गइल। सब लोग चर्चा करे लागल– ना मालूम कइसे–कइसे देवता पाटे अइलन ह। पर साल के कातिक में बड़कू जाना खिसिया के गइले। कहले – रसूलपुर में अब लौट के ना आएब, केहू मरो, भा जिओ।

उनकर बात पर बाबूजी के खीस चढ़ गइल। जा जा, धमकावत केकरा के बाड़ ? कोढ़िया डेरावे अपना थूक से। पाँख लाग गइल, अब जेने चाहऽ उड़ऽ, घूमऽ। हम पढ़ा दिहनी। नीमन नौकरी लाग गइल, झोरी–भर तनखाह बटोरत बाड़ऽ। अब माई–बाप के काहे पूछबऽ ? बीमारी में हमरा के देखे आ गइलऽ इहे ढेर कइलऽ ए बाबू। आपन घर हऽ, तनी ऊँच–नीच होइए गइल त का हो गइल। तनिकी सा में फन उठावे लागेलऽ।

जब से नौकरी लागल, भइया के मिजाजे बदल गइल बा। एही घर में पलइले–पोसइले, अब इहे घर बाउर लागता। बाबूजी हमरा से कहनी – जगदीश, परसों सवेरे ही तहरा इस्टीशन जाए के होई। मार्केट जाके रिजर्व टेम्पू लेले जइहऽ, लोकेश आवत बाड़े।

टेम्पू लेले हम रेलवे इस्टीशन चहुँपनी। पता चलल आज गाड़ी दू घंटा लेट आई। रास्ता में काल्ह के आँधी–तूफान में रेल लाइने पर एगो गाछ–गिर गइल। काटकूट के हटावल जा रहल बा। तले पीछे से केहू पुकारल–'का हो जगदीश ! कहीं जाए के बा का ? हम बता देहनी कि एही गड़िया से लोकेश भइया आवे वाला बाड़े।

शिवकुमार बाबू हमरा कान्हा पर हाथ धइले–एगो बेंच के ओर ले गइले। बइठ गइनी सन। पुछले–तब ताहार नौकरी–वोकरी के कवनो जोगाड़ भइल ह ?

हम तीन साल से बेकारे बइठल बानी। नौकरिए के कारन बियाह–शादी रुक गइल। दूनू

भाई पार घाट लाग गइल लोग। देखीं अब हमार का होला। अब त शादी के पहिले लइका के नौकरी देखल जाता। बाबूजी अपना बेटा–लोग के दू नजर से देखनी। पढ़े के टाइम में बाबूजी हमरे के ढेर डाँटी। जिनिगी भर तू नालायके रहब। तहरे दुनू भाई केतना तेज बाटे लोग। अब हम का जबाब दीं– 'हाथ के पाँचों अंगुरी एक बराबर त होले ना।'

– 'ना होले बाकिर कानी अंगुरी नियर तहरा के काहे छटका दिहल गइल बा ? तूहूं त सहोदरे भाई हउवऽ। वाह रे इंसाफ, सभे मकई के लावा नियर खिलल–फूलल बा आ तूं तलछट में ठूरी नियर पड़ल बाड़ऽ। दुनिया लावा के पूछेला, ठूरी के अलगा देला।'

शिवकुमार बाबू के बात गलत ना रहे। सब सहत रहऽ त कवनो बात ना, हमरा खानी त आदमिये ना आ तनिको विरोध करऽ एने ओने करऽत बात के बनौरी देह पर गिरे लागेला। कबो–कबो मन त करेला कि घर–दुआर तियाग के हमूं सूरत, मद्रास भा दिल्ली चल जाईं। भगवान मुँह देले बाड़े त खाहूं के कसहूं देबे करिहें। एहीजा बइठल एह बूढ़–पुरनिया लोग के सेवा हम करत रहीं। बेटा त उहो लोग ह। बाबूजी के बीमारी में दू दिन खातिर आ गइले त बड़का एहसान क देहले। जात समय कांड मचा देहले। अब पता ना काहे खातिर आवत बाड़े। भीतरे–भीतर कवनो पूआ पाकत होई।

रेलगाड़ी के अवाई के लाइन क्लीयर अब तकले ना भइल। शिवकुमार बाबू पता ना केने चल गइले। तले खबर मिलल कि रेललाइन क्लीयर हो गइल, अब गाड़ी आवहीं वाला बिया। टेम्पोवाला जान पहचान के रहले तबे एतना देर ले ठहरले नाहीं त कबे लउट गइल रहते।

बड़का भइया–भाभी फेन इयाद आवे लागल लोग। भाभिए कम चालू कई। कवनो काम करवावे के होई त बड़ी मोलायमें–मोलयमें हमार–तारीफ करिहें। दू हाली कह चुकली कि जगदीश बाबू के बियाह हम अपना नइहर के पटिदारी में लगाएब। बाकिर गाँव से जाते सब भुला गइली। छोटकी भाभी भी एगो लड़की के बारे में बतवले बाड़ी। लड़की बड़ा सुन्दर–बिया, कामकाजी ओइसने। ओकरे राउर बियाह हम लगाएब।

कबो–कबो बहरा के सुनल बात भीतर समा के सपना बन जाला। मन में गुदगुदी होखे लागेला। लड़की सुंदर बिया, कामकाजी बिया त एकरा से जियादे का चाहीं। भाभी कहतारी कि लड़की के चाचा कलकत्ता रहेले, हम उनको से कहले बानी। मन बेर–बेर हुमके – ए भाभी, अब रउए हमरा के पारघाट लगाएब। बाबूजी त अपना दू बेटन के बियाह क, के एकोराह हो गइनी। हमरा के उहाँ का पइया धान नियर अलगिया देलेबानी। सोचत होखब – एह बुरबक के बियाह में के दान दहेज दी। एगो साइकिल मिल जाव उहे ढेर बा।

छोड़ीं बाबूजी के बात। मरद के मिजाज तनी अलग होखबे करेला। मगर माई के कुछ फरज बनत बा कि ना। अपना कोख में नौ महीना त उ हमरो के पलली। बाकिर हमरा कवनो चिंता–फिकिर ना कइली। हमूं त ओही खून–बून के बनल हईं। जब कवनो काम–धाम करावे के होला त मांई के बोली साफ बदल जाला। अइसन मीठ बोलेले जइसे कुल्हवाड़ी में पेराइल ऊख के

महिया होखे। तनिकी सा जीभ से छुआवते भर मुँह मीठे मीठ हो जाई। गउंवा के कुछ लोग हमरा के हँसते कहेला – ए जगदीश, सांचो ए दादा तू बुरबके रह गइल। आरे गाँव में बइठ के सड़ला से कौनो फायदा बा ? बूढ़ महतारी – बाप भला कब चाहीं कि अइसन लइका परदेस ध लेव। तू ही त ओ लोग के लाठी बाड़। वो लोग के बतिया गलत नइखे। बाहरा नौकरी लाग जाव त हमरो आवाई पर बाबूजी माई के खुशखबरी सुनावे लागेब। तब हम आपनो रोब देखायेब। आज हमार केतना बात के ओल्हा क दीहल जाता। एक बेर कहनी कि बाबूजी मूंजवानी वाला खेतवा के बीचे बीच सिरफल के गाछ बा। ओकरा रहला से डेढ़ कट्ठा जमीन के फसल के गछौंधी मार देता। ओह गाछ के कटवा दीं। फसल के मनी बढ़ जाई।

हमार बात सुन के बाबूजी हमरा ओर तकनी आ तनी हँसियो देहनी। कहनी – तहरा बुझाला ना जगदीश, उ गछिए बा जे बगल के खेतवाला के रोकले बा। नाहीं त गाछ कटाते उ आपन मेड़ तूर आ तार के हमरा खेत में कई हाथ कब्जा क लीहें। जमीन खातिर शहर–देहात सगरी जगहे त चढ़ा–ऊपरी लागल बा। आदमी के दूर तकले सोचे के चाहीं।

इहे बतिया अगर बड़का भइया कहले रहते त बाबूजी फटाक से मान जइतीं। हमूं सोचनी एह घर में हमरा बारे में का सोचनी हं ? भाभी उठ के आपन बक्सा खोललली, ओमे से एगो चिट्ठी निकाल के कहली – जगदीश बाबू, जेतना रउआ अपना बियाह के फिकिर नइखे ओह से ज्यादा हमरा अपना नवकी देवरानी के फिकिर बा। राउर भइया जब से मद्रास गइलन ह, हमरा एहीजा रहेके पड़ता। बूढ़ सास–ससुर के देखभाल कइल कम कठिन काम ना ह। दसगो टिटिमा – दुलहिन गरम पानी चाहीं, दुलहिन दांत बथत बा, तनी डॉक्टर से देखा द। हमार धोती–कुर्ता फींच द। बुध के जगनाथ के बेटा के तिलक आई। नेवता में हमरा जाएके पड़ी। अउर केतना–केतना बात बा। हई देखीं, चिट्ठी में लिखल बा कि चाचा, लड़कीवाला के लेके अगिला फरवरी में अइहें। लड़िका देखला के बाद बात फाइनल हो जाई।

सूरत से जब भइया–भाभी आ गइल लोग त उमीद रहे कि सगरी समाचार के साथे हमरा बियाहो के बारे में पूछी लोग। बाकिर भइया ए बात पर शीत बसंत ना पुछले। भाभी कहली – कुंवारे रहला में सुख बा ए बाबू। बियाह होते जंजाल में पड़ जायेब। बड़की भाभी हँसे लगली। बुझाइल ना कि उ सांचो के कहतारी कि अपना देवर से मजाक कर तारी। मजाक क के उ हमरा घाव के दरद अउर उपटा देहली। चिरई के जान जाव, लइका खेलावना। उ कुंवार मरद के दरद का बूझिहें। अपने मरद आ बाल–बच्चा में लागल रहेगी।

बाकिर छोटकी भाभी में इंसानियत बा। उ हमार दरद समझेली। उनकर बात से हमरा चैन मिलेला। फरवरी आवत उमेद बा जे बात फाइनले हो जाई।

भाभी ठीके कहतारी बिना लइका देखले के अपना बेटी के बियाह तय करेला। अच्छा आवस, हम कवनो लूल लांगड़ त नइखीं, बोले–बतियाबहू में कमजोर नइखीं। हं भाई लोगिन नियर बी.ए. पास ना कइनी। दसवां में पढ़त रहनी तले गोड़वे पर एगो भारी संदूक गिर गइल। दहिना गोड़ के हड्डी टूट गइल। पलस्टर चढ़ गइल। पूरा डेढ़ साल बरबाद हो गइल। पढ़ाई के सिलसिला एक

बार जे टूटल से फेन ना जुटल। इम्तहान छूट गइल आ ओकरे साथे हमार पढ़ाइयो।

बाबुओ जी कुछ ना बोलनीं। पहिले त हमरा पढ़ाई पर थोड़ी बहुत जोर देहनी। अब हमरा के एने ओने के अढ़वना में लगवले रहिले। एहीं तरे समय बीतत गइल। कबो–कबो देखनहरू आवस त पढ़ायी–लिखाई आ नौकरी के बात पूछस आ मुँह बिचका के चल जास। हमरे गाँव में तीन जाना के बियाह ना भइल। बांड़े रह गइल लोग आ गते–गते बुढ़ा गइल लोग। एक जना के बारे में हल्ला रहे कि उ अपना भउजाइए से फंसल बाड़े। कुंवार बनके ब्रह्मचर्य भी ढेर दिन ढोअल बोझे ह। धीरज टुटला पर गोड़ एने पड़िये जाला। ओह टोला के बड़की बेर–बेर पूछेले – तोहार उमिर केतना भइल ?

माई एक दिन गाँव के एगो मेहरारू से कहत रहे – कहीं से कवनो लूलो लांगड़ लइकी मिल जाइत त हमरा जगदीश के घर बस जाइत। एक दिन मन में आइल कि अब हमं घर के बहरा निकलत बानी। कवनो दोसरे शहर में शादी–बियाह के जोगाड़ लगावल जाई। आपन अटैची सइहारत रहनी, तले माई के भनक मिल गइल। उ जाके बाबूजी से कह अइली। बाबूजी पहिले त तनी तमतमइनी, फेन नरम होके बोलनी – तू कवना भवमंडल में पड़ल बाड़ऽ ? गाँवहीं रहऽ। एहीजा कवनो खाए–पीए के गंजन नइखे। तहरो शादी होई नू। हम जोगाड़ में बानी।

एक दिन भनक मिलल कि बाबूजी हमरा खातिर लड़की कीने गइल बानी। काल्हे रेलगाड़ी से गइनी। सुतार पड़ी त लइकी कीनिए के बियाह होई। हम त हैबत में पड़ गइनी – आहि बाल हमार बियाह कीनल लइकी से होई ! कौनो टूअर–टापर होई। हमरो करम लोढ़ा से कुचाइल बा।

बाकिर भाभी हमरा के समझवली – ए बबुआ, अपने मुँह बान्ह के सब सुनत रहीं। एह परिवार में हम अइसन धुरखेल ना होखे देब। हमार देवरानी घूरा पर के बीगल ना अइहें। इ बुढ़ऊ लोग ढेर एने–ओने करी त हम रउओ के अपना साथे मद्रासे ले ले चलेब। रउरा भइया चहिहें त ओहीजा कौनो मद्रासिन लड़की से राउर बियाह हो जाई।

हम चिहइनी – इ का कहतानी भाभी ? मद्रासी से बियाह करेब त लोग का कहीं।

– जे कही उ अपना घरे रही। जमाना बदल गइल बा। लोग त बिलायत जाके बियाह क लेत बा। रूस से मेहरारू लीआवत बा। रउआ तनी दम धरीं। भगवान पर भरोसा करीं। हमरा हते एह परिवार में घूरा पर के फेंकल औरत ना आई। बाबूजी आ माई के मन में त एके बात बा कि एहीजा बइठल ए लोग के सेवा करत रउआ जिनिगी बिता दीं।

भाभी हमरा डूबत मन के उबार लेहली। उनकरे नइहर के रिश्तेदारी में एगो गरीब घर के लड़की मिल गइल, हमार बियाह हो गइल। बियाह ढेर धूमधाम से ना भइल। सांच कि झूठ बाबूजी छितरा गइनी। एतने कहनी – ए घरी रुपया पइसा के बेंवत ठीक नइखे। आ हे महंगाई में भोजभात दीहल कवनो जरूरी बा ? लोग त खा–पी के ढेकार मारी आ अपना घरे चल जाई। एने कर्जा हमरा नू उतारे के पड़ी।

हमार बियाह होते ओकरा कान्हा पर बइठल एगो दोसरे समस्या आ गइल। हमनी दूनू बेकत के रहे के कवनो अलगा कमरा ना रहे। हम माई से कहनी – दूनू भइया लोग के

अलगा–अलगा कमरा दीयाइल बा। हमरो एगो कमरा चाहीं। ओसारा में चदरा तान के हम ना नू रहेब। बाबूजी से कहके अंगना के उत्तर में एगो कमरा बनवा दे। भाभी कहली – रउआ आ दुलहिन हमरे कमरा में रहीं। मगर इ बात हमरा जायज ना लागल।

शिवकुमार बाबू एक दिन मिल गइले त कहले – ''ओह घर–दुआर में तहरो त हिस्सा होला। पंचायत में बात जाई त तहरा हिस्सा मिलिए जाई। हम उनकर बात पर कुछ ना बोलनी – हमार जनाना कहली – लोग गलत का कहत बा। एह घर–दुआर में आपनो हक त बड़ले बा।

बाकिर अइसन लमहर बात बाबूजी – माई के आगे रखे के हमार हिम्मत ना भइल। जवना अंगना में हमनी का तीनू भाई एके साथे खेलनी–कूदनी सन ओमें बाँट–बखरा नीमन नइखे लागत।

गाँव के कुछ लोग मनेमन इन्तजार करे लागल कि एह घर में बाँट–बखरा होखबे करी। एक जाना हमरा पर टिहुकारी मरले – तूहूं जगदीश ठुरिए बनल रह गइलऽ, लोग लावा लूटके ले गइल। अपना जनाना लगे बइठल रहनी तले दुअरा से केहू पूछल – ठूरी बाड़े ?

हमार नाम अब ठूरी पड़ गइल। हमरा मेहरारू के ई ना अच्छा ना लागल। खूब कोसली। रउआ अपना पढ़ाई–लिखाई पर धेयान देले रहतीं त आज लोग के ठूरी कहेके हिम्मत ना पड़ित।

बाबूजी त चाहते रहनी कि रउआ ठूरी नियर बेकार पड़ल रहीं आ सेवा करत रहीं। जे पढ़ल लिखल आ नोकरी–चाकरी पर धेयान दीहल उ त लावा नियर फूटके बहरा चल गइल। नीचे बच गइल ठूरी। अब का करेब ? ठूरी दोबारा से लावा ना नू बनी। अब अगिला पीढ़ी के सोचीं – हमनी का अपना संतान के ठूरी ना बने देब सन। बेकार बइठ के जिनिगी काटल जीए के कवनो ढंग ना ह।

हमरा बुझाइल जे संगीता ठीके कहत बाड़ी। ●●

लघु कथा

चानी के गोड़हरा

❑ राजगुप्त

सोना चाँनी के दोकान पर खरीदार मेहरारु बइठल रहली स। अपना अपना पसन्द के जेवर बिखो देखत, मन माफिक छाटत–बीनत रहली स। एही बीचे एगो मर्दाना गँहकी दोकान में आइल। दोकानदार के सुना के जोर से कहलसि 'ए भइया, हमरा के एगो जेवर चाही''। दोकानदार कहलसि कइसन जेवर, केकरा खातिर जेवर, सोना के चाही कि चाँनी के ? खँखारि के बोलऽ।''

''दोकानदार के बाति सुनि गँहकी छुटते कहलसि। घोड़दउड़ में हमरा घोड़ा के भाग लेबे के बा। हमरी घोड़ा खातिर चांनी के गोड़हरा चाहीं।''गँहकी के बाति सुनि दोकान में बइठल सज्जी मेहरारु ओकर मुँह ताके लगली स।

दोकानदारो बड़ी फेरा में पड़ल। कुछ कहे के पहिले थथमि गइल। मने मन सोचलसि विचरलसि तब जाके थाहि के कहलसि, ''देखीं हमरी किहाँ हाथी के हँसुली, कंगारू के कंगन, शेर के सिकड़ी, चीता के करधनी, हुराड़ के झुमका पायजेब, बिछिया तइयार मिल जाई। बाकी गहना बिखो फुरमाइस पर गढ़वा के दे देइब। जदि तत्काल के जरूरत बा त अउरियो दोकान पर सवाचि लीं।''

कहानी

लोर से भींजल एगो सांझि

❑ रामेश्वर प्रसाद वर्मा

दिन बीतल आ सांझि भइल त मीरा के बेचैनी अउर बढ़ि गइल। आजु दिन भर में एको बेरा श्यामजी ना लउकलन। का बात बा ? एने एक महीना से अइसन कबहूँ ना भइल रहे। ना त रोज ऊ आवत–जात लउकिये जात रहन। आखिर अइसन कवन बात पड़ल, जे आजु ऊ ना लउकलन। उनका के खलिसे देख भर लेला से मीरा के मन भरि जाला।

ऊ कबहूं भीतर जाताड़ी ता कबहूं बाहर आवताड़ी। आ फिर चउखठ पर आके खड़ा हो जाताड़ी। दूर–बहुत दूर तक टकटकी बांध के श्यामजी के देखे खातिर बेकरार बाड़ी। बाकी श्याम जी बाड़न कि आजु कतहूं नइखन लउकत।

मीरा जानऽताड़ी जे उनका नियन बीस बरिस के जवान विधवा खातिर एह तरीका से कौनो जवान मरद के इन्तजार कइल ठीक ना होखे। ना त समाज में तरह–तरह के काना–फूसी शुरु हो जाला। आ लोगन के मुँह देखावल मुश्किल हो जाला। बाकी तबहूं ऊ श्याम जी खातिर बेचैन बाड़ी। उनका बुझाला जइसे श्याम जी से उनकर कवनो पूर्व जनम के रिश्ता होखो। एही से उनका के जीउ भर के सामने देखे के उनकर मन करेला। कबहूं–कबहूं त उनका से बतिआवहूं खातिर ऊ तड़प के रहि जाली। जब ना तब श्यामो जी उनका के देख के खड़ा हो जालन आ फिर बिना कुछ बतिअवले मुसकुरा के आगे बढ़ि जालन। उनकर मुसकुराइल चेहरा देख के ऊ जइसे अघा जाली।

मीरा के त अब इहो इयाद नइखे कि उनकर आपन पतिदेव कइसन रहलन। ऊ जब बुचिया रही, तबे उनकर बियाह हो गइल। कहेला लोग जे बियाह के कुछे दिन बाद उनका ससुराल से खबर आइल जे सांप काट देला से उनकर पतिदेव के देहांत हो गइल। ओह दिने घर भर रोअल आ उनका मांग में पड़ल चुटकी भर सेनुर धो दिहल गइल। हाथ में के चूड़ी जबरन फोड़ दिहल गइल आ उनकर बदन पर के लाल चुनरी हटा के सफेद कपड़ा पेट दिहल गइल आ ओही घरी से ऊ विधवा हो गइली।

ससुराल से नाता टूटके नइहरे अब उनका खातिर सब कुछ बा। सामाजिक मर्यादा के बीच रह के उनकर जिनगी कबहूं बहकल ना। मन जरूर बहकेला। बाकी खाली श्यामजी खातिर।

एक महीना पहिले के बात ह। सांझि भइल रहे आ मीरा आपन आंगन बहारत रहली... कि उनका कान में एगो मधुर गीत सुनाई पड़ल। झाडू छोड़के ऊ चउखठ पर आ गइली। देखली, बाहर दलान में, ठेहुना के बल बइठ के, एगो नौजवान गीत गावत रहे। गायक त सुन्दर रहले रहे, ओकर गीतो ओतने मधुर रहे। मीरा के बड़ा अच्छा लागल। ऊ ओकर गीत ध्यान से सुने लगली। बड़ा सुरीला स्वर रहे। लय के उतार–चढ़ाव अपना आप में काफी आकर्षक रहे।

गीत खतम भइला पर लोग वाह–वाह करत चल दिहल। दलान खाली भइल त गायको चल देलस। जात–जात ओकर नजर मीरा पर पड़ल। दूनों एक दूसरा के देखल... आ कुछ देर ले देखल...। फिर गायक मुसकुरा के चल देलस। ओकर मुसकुराइल सूरत मीरा के हृदय में उतर गइल।

दलान में आके ऊ अपना बुढ़ऊ बाबा से पूछली – ई के गावत रहल हा बाबा ? त बाबा कहलन– बघार के ओह पार जलगांव के मंगलजी के नाती श्यामजी रहले हां। कलकत्ता से आइल बाड़न। अब ई गांवहीं रह के अपना नाना के खेतबारी संभरिहें। – फिर अपना चेंट से खैनी निकललन आ चुनौटी से चूना निकाल के हथेली पर मलत कहलन – जब ना तब मंगल जी बाते–बात में एकर चरचा कर देत रहन। आजु अपना आँखे देख लेनी। बड़ समझदार आ होनहार लइका बा। अभी ले एकर बियाहे नइखे भइल।

बुढऊ बाबा के ई अंतिम बात – अभी ले एकर बियाहो नइखे भइल – मीरा के मन में रह–रह के उमड़े–घुमड़े लागल। ओकरा ठीक दुसरे दिन दुपहरिया में मीरा गोबर पाथत रही। ऊ देखली, दुआर पर से एगो आदमी सिर झुकवले चलल जा रहल बा। गोबर पाथल छोड़के ऊ उठ खड़ा भइली।

अरे !.... ई उहे श्यामजी हवन। – आ मीरा के छाती जोर–जोर से घड़के लागल। उनका कुछ घबराहट नियन भइल। बुझाइल, जइसे उनकर केहू आपन नजदीकी आदमी वापस जा रहल बा। ऊ कुछ कहे चाहके भी कुछ ना कह सकली। श्यामजी उनका ओर मुड़के देखलन आ फिर बिना कुछ बतिअवले मुसकुरा के आगे बढ़ गइलन।

सूते के बेरा रात के अन्हरियों में श्यामजी के ऊहे मुसकुराइल चेहरा मीरा के सामने आइल। सपना में एगो नदी के किनारे ऊ श्याम जी से सट के बतिआवे लगली। दूनो लोग एक–दूसरा के हाथ अपना हाथ में लेके इहे कहल – अब ई हमार जिनगी तोहरे खातिर बा।

ओह दिन के बाद से अब अइसन कवनो दिन ना रहे, जब मीरा के श्यामजी से मुलाकात ना होखे। बाकी खाली देखादेखी – परसो मीरा अपना काने सुनली – श्यामजी उनका बुढ़ऊ बाबा से कहत रहन – 'रउवा हमरा से कवनो संकोच मत करब। हम रउवा खातिर समरपित बानी। जब कभी जरूरत पड़े हमरा के बुलवा लेब।'

श्यामजी के अपनत्व से भरल ई बात मीरा के बड़ा अच्छा लागल। उनकर अइसन सुघर बात सुनके मीरा के बाबा खुशी से भर गइलन।

दलान में से निकलत–निकलत श्यामजी चउखठ पर खड़ा मीरा के खूब गौर से देखलन आ मुसकरा देलन। का जाने काहे, ओह दिन मीरा के बड़ा संकोच भइल आ ऊ आपन नजर झुका लेह ली।

आजु ओही श्यामजी के देखे खातिर मीरा चउखठ पर खड़ा बेचैन आ बेताब बाड़ी।

अचके उनका सामने कुछ दूर से 'राम नाम सत्य है' के साथ एगो अर्थी आवत दिखाईं पड़ल। ऊ अर्थी जब मीरा के दुआर के पास आइल त बहरी दलान में बइठल लोग पुछलन – केकर मैजल हऽ भाई ?

अर्थी के पीछे चले वाला लोगन में से केहू कहल –

जलगांव के मंगल जी के नाती श्यामजी के अर्थी हऽ। आजु सबेरे उनका सीना में कसके दरद उठल आ अईंठा के शान्त हो गइलन। डॉक्टरो–वैद्य के बुलावे के मोका ना देलन बेचारू !

मीरा सुनली त उनकर करेजा धक् से हो गइल। उनका जइसे कठवा मार देलस। ओने दुआर के सामने से श्यामजी के अर्थी गुजरल... आ एने उदासी में डूबल मीरा के ढलकत लोर से सांझि भींज गइल।

●●

स्मरण

लोक परिपाटी के जियतार लोककवि रामजियावन दास 'बावला'

❑ भगवती प्रसाद द्विवेदी

अक्टूबर, 2012 में जब ई सूचना मिलल कि एह साल के साहित्य के नोबेल पुरस्कार एगो अइसन चीनी साहित्यकार के दिहल जा रहल बा, जे कबो मदरसा के मुँहों ना देखले रहे आ पहाड़ पर माल–मवेसी के चरवाही करत अकेलपन से निजात पावे बदे साहित्य रचल शुरू कइले रहे, त हमरा सुखद अचरज भइल। लोककथा–लोकगाथा से लेले समकालीन साहित्य तक में फइलल भ्रमजाल के हटावल आ उकेरल अन्हुकर मकसद रहे। लोक से गहिर जुड़ाव राखे वाला नोबेल पुरस्कार विजेता ऊ रचनाकार बाड़न मोयान। 'मो' के मतलबे होला मौन रहेवाला। ओह मौन साधक, चरवाह रचनाकार का बिसे में खबर पढ़िके हमरा दिल–दिमाग पर छा गइलन – हू–ब–हू ओइसने भोजपुरी के एगो समरथ कवि राम जियावन दास बावला जे चकिया जिला (उत्तर प्रदेश) के भीखमपुर गाँव के अभावग्रस्त लोहार परिवार में पहिली जून 1922 के रामदेव–सुदेश्वरी के जेठ बेटा का रूप में जनम लेके जंगल–जंगल कुसुंमर, रमरैया, मुरलिया, डुगडुगवा का लगे पहाड़ियन पर भइँसि चरावत तुलसी के रामचरितमानस आ कबीर के पद–साखी बाँचत, कोल–भील–मुसहर का सँगे रहिके लोक–परिपाटी के विरासत से जुड़ल जियतार गीतन के सिरिजना ताजिनिगी करत रहलन आ जेकर वाचिक परम्परा से गहिर–गझिन जुड़ाव रहे। खाली पढ़ाइए–लिखाई में ना, बलुक लेखनों के स्तर पर ऊ कबीर आ भिखारी ठाकुर के परम्परा के दमदार रचनाकार रहलन आ महाप्रयाण करेके दिन (मई दिवस, 1 मई, 2012) ले ऊ सिरिजना के दिसाईं लवसान रहलन। सोरहे बरिस के उमिर में मनराजी का सँगे बियाह, लमहर–चाकर गिरस्ती, तीन–तीन गो छोट भाइयन आ दूगो बहिन के परिवार, लोहसाई के जातीय पेशा उन्हुका घुमन्तू मन के इचिकियो बान्हि ना पवले रहे। उन्हुकर मन त रमत रहे राम–सिव चरचा में, चरवाही में, आशुकविताई में, गवनई में आ कुल्हि मिलाके लोक में। काशी के दशाश्वमेघ घाट पर जब निगाह परल एगो अइसना मनई पर, जवन एने से ओने आ ओने से एने ना जाने केकरा खोज में बेयाकुल होके छिछियात रहे, त ओकरा के देखिके एगो साधु का मुँह से अचके में बोल फूटल – 'बावला'। फेरू त इहे तखल्लुस नाँव का साथे जुड़ि गइल, काहें कि ऊ मनई राम जियावन शर्मेजी रहलीं। आजु के दुनियादार समाज में जे सचहूँ के 'बावला' होई, ओकरे नू खाली अपना आ अपने घर–परिवार से ना, बलुक सभकर सुख, कुदरत, जंगल, पहाड़, परिपाटी, सउँसे लोक अउर संस्कार से मतलब होई। 'बावला' जी आपन परिचय देते कहतो रहलीं –

"गँवई क निवासी बनवासी उदासी हम,
घासी में पाती में जिनिगी बिताईला।
बाहु–बल बूता अछूता अस जंगल में,
मंगल के कामना से मंगल मनाईला।
सेवा में फूल फल जल में पहारी के
पाहुन केहू आवे त परान अस जोगाईला।
धूरी में, माटी में अपने परिपाटी में,
बिन्ध्याचल घाटी में बावला कहाईला।"

'बावला' जी तमाम लोकधुनन आ छंदन में अइसन सहज–सरस रचना करत रहलीं कि सुननिहार–पढ़निहार मंत्रमुग्ध हो जात रहे। इहे ओजह रहे कि अपना समय के नामी–गिरामी लोकगायक उहाँ के गीतन के आपन सुर देले रहे आ पचासो साल से ऊ गीत रेडियो का जरिए बाजत आ रहल बाड़न स। 'बबुआ बोलता ना, केहो देहलस तोहके बनवास !', 'हम बनवासी कोल–भील के बेटउवा, तूँ तऽ राजा बाबू हउवऽ' जइसन शोहरत के बुलंदी छुवेवाला गीतन के भला के भुला सकेला ?

'बावला' जी धुन–छंद लोक से लोकिके अपना गीतन के लोकबद्ध सिरिजना करत रहलीं आ रेडियो–कवि सम्मेलन के मार्फत लोक के समर्पित कऽ देत रहलीं। उहाँ नियर फक्कड़ कवि के ना त पुस्तक प्रकाशन के फिकिर रहे, ना साधन–संसाधने रहे। बाकिर धन्य बानीं पुन्नश्लोक रामकथा मर्मज्ञ, ज्योतिषी पारसनाथ मिश्र जी कि उहाँ के एह कवि के प्रतिभा के सम्मान दिहलीं आ सेवक प्रकाशन, ईश्वरगंगी, वाराणसी से कवि के एकल संग्रह 'गीतलोक' के प्रकाशन के बीड़ा उठवलीं, बाकिर ऊ किताब मिश्र जी के देह छोड़ला काबादे जाके 1997 में कवि के पचहत्तर बरिस के उमिर में प्रकाशित हो पावल।

'गीतलोक' के दू खण्ड में बाँटल गइल बा। पहिल खंण्ड भक्तिपरक गीतन खातिर बा, आ दोसर खण्ड युगबोध के गीतन खातिर। 'आपन बात' में कवि के कहनाम बा– 'हम का लिखीं, हमके कुछ बुझइतै नइखे। कवितई के विषय में कइसे कहाँ का रहै के चाहीं, हमरा मालूम नइखे। हम गँवई देहात के रहै वाला, अपने खेती–बारी में समय कटल। कुछ अपने पुरखा पुरनियाँ के द्वारा तुलसी बाबा के पोथी पढ़ै क लगन रहल। पुरखा पुरनियाँ ओही से सुख पावैं, हमरो पोथी बाँचे के कहैं आउर अपने लोग अरथ लगावैं। ऐसहीं सुनत, पढ़त, जानत कुछ भाव अपने अन्दर जागल। कबीर जी क भी कुछ पोथी पढ़ै क मौका मिलल। क्षेत्र के कुछ रामायणिन आउर गायकन के साथे उठत–बैठत लिखै–पढ़ै क मन बनल। कुछ गंवनई भी करै लगलीं।... हमरा के जउन समाज से मिलल बा, जवन सुनले बाटी, ऊ रउवाँ सबके समर्पित करत बाटी...।'

भक्तिपरक गीतन के पहिलका खण्ड में पारम्परिक ढंग से पहिले सुरसती महरानी के वंदना करत बा, फेरू गुरू–वंदना करत विनयी भाव से भगवद्महिमा के बखान कके माथ नवावत बा, भगवान विश्वकर्मों के गुन गावत बा, बाकिर सभसे लमहर आ जियतार प्रसंग बा शिवचरित आउर रामचरित के, जवना का जरिए कवि परम्परा आ आधुनिकता का बीचे पुल बनावे के पुरजोर कोशिश कइले बा। शिव बाबा के बहाना से कवि आज काल्ह के रहनुमा के कथनी–करनी के पोल खोलत ढोंग–आडम्बर के बेनकाब करत बहत बा :

'उद्धारक उद्धार करै क ढोंग रचवले बाटैं,
स्वर्ग बनी भारत क धरती, शोर मचवले बाटैं,
कहीं पै घुट–घुट लोग मरैलें, कहीं रचावैं रास,
जनाला धँसि जाई कैलास।'

कवि शिव के निरास–हतास आम आदिमी का रूप में देखत सवाल ठोंकत बा :

'दलबंदी से घबड़इला या कहुँ देखला घुसखोरी
हार भइल बा कोट में या कि भइल तोरे घर चोरी,
काहें भाँग–धतूरा खाला, कहवाँ जाला बुढ़ऊ ?
बूढ़ बरद बा तूँ सुसुतालाऽ, कहवाँ जाला बुढ़ऊ ?'

कवि भोला बाबा के गुन त गावत बा, बाकिर आजु के हालात देखिके ओकरा बिसवास नइखे होत। तबे नू ऊ कहत बा– 'सुनीला कि भोला बाबा हउवा बड़ा दानी, लेकिन हम का जानी !'

मगर ई अविसवास अकारन नइखे। सउँसे समाज के हाल सोझा बा :

'गाँव के गँवार बस माटी के अधार बाय,
सगरो अन्हार नाहीं पाईं उजियारे के।
कलही समाज दगाबाज के दखल बाय,
कल नाहीं बाय, बोझ बढ़त कपारे के।'

तबो कवि के आँतर में आस्था अटूट बा। ऊ झूमि–झूमिके गावत बा :

'डिम–डिम डमरू बजावेला हमार जोगिया।
गरवा सोहै मुंडमाला, अंग में लपटे नाग काला,
छाला शेर के बिछावेला हमार जोगिया।
नाचै भूत–प्रेत संग, सदा रहे अड़भंग,
भंग धतूरा चबावेला हमार जोगिया।'

रामचरित के केन्द्र में राखिके रामचरित मानसे लेखा जनम, बाललीला, बियाह, कोपभवन प्रसंग, शोकाकुल कौशल्या, बन–प्रस्थान, गंगा वर्णन, केवल प्रसंग, भरत चरित, अरण्य कांड, शेवरी प्रसंग, किष्किंधा कांड, सुंदर कांड, लंका कांड अलगा–अलगा लोकधुन आ छंदन में समेटल गइल बाड़न स। इन्हनीं में इन्द्रधनुषी छंदन के छटा देखते बनत बा। राम के बने जाए के बात सुनते रानी कोसिला बेयाकुल हो जात बाड़ी। अपना सन्तान खातिर महतारी के मन में कइसन उदबेग रहेला, एकर बड़ा मरम छुवेवाला चित्र 'बावला जी' उकेरले बाड़न। एगो बानगी देखीं :

'बादर घेरि घना बरसी, बिजुरी तड़पी तब ऊ डरि जइहैं,
पंड़न के छहियाँ रहिहैं, रतिया अन्हियारी अँजोर न पइहैं,
भूख–पियासि लगी जब तउ लुलुवाइ के पेट दबइहैं,
हाय न साथ नई जिनिगी पुछिहैं लोगवा हमके लुकियइहैं।'

बन में सीता, लखन का संगे राम के देखिके बनवासी चिहा जात बाड़न। किसिम–किसिम के सवाल पुछाए लागत बा। एगो लोकप्रिय गीत के शुरुआती बन्द देखीं :

'कहवाँ से आवेला, कवन ठाँव जइबा बबुआ बोलता ना,
कौन दिहलै तोके बनवास, बबुआ बोलता ना !
कवने करनवाँ बतावा अइला बनवाँ
कोने–कोने घूमेला भँवरवा जइसे मनवाँ
कउनी हो नगरिया में अँजोरिया नाहीं भावै, बबुआ बोलता ना,
कहवाँ रात भावै बरहो मास, बबुआ बोलता ना !'

बनवासी मनई के सेवाभाव आ अतिथि सत्कार के कुदरती सुभाव एगो अउर गीत में देखते बनत बा : राम के वन आगमन पर धधराइल बनवासी एकदम अगराइ गइलें––––––––

'हम बनवासी कोल–भील के बेटउआ, रउआँ राजा बाबू हउवा।
करीं सेवा का खियाईं, कहाँ आसनी बिछाई,
इहाँ बनवा में बाय कन्दमूल फल पतउवा।
....
बनवासी हम लोग, नाहीं सेवा करे जोग,
लोग बावला भइल बा देखि–देखिके सुभउवा।'

'गीतलोक' के दोसरका 'युगबोध' खंड में समाज के निचिला तबका के तंगहाली, तबाही आ रोज–रोज जीए–मूवे के अलचारी पर लोककवि गीत आउर छंद उकेरले बा। एगो साफ–सोझ अभावग्रस्त मनई के दुःख भला केकरा दिल के घवाहिल ना करी :

'घरहू बिपतिया बहरहूँ बिपतिया, न रतिया में कल बा, न दिनहीं में कल बाय,
जहाँ–जहाँ जाईं परिछाईं दुखदाई होत, धरती के अँचरा में पग–पग छल बाय।'

एक ओर बाजारवादी सोच आ विकास के ढिंढोरा पीटत रहनुमा, उहँवे दोसरा ओर किसान–मजूर के बदहाली। समय के नबज टकटोरत 'बावला' के कहनाम बा :

'जाँगर किसाने क आँके न कोई/पातर समइया में झाँके न कोई
हानी पर हानी विकासे क बेला/किस्मत भी होइ जाले बाँव,
ए बाबू, हमरा त माटी क गाँव।'

जब रखवारे बटमार आ गिरहकट हो जाई त देस–दुनिया के का हाल होई। कवि व्यंग्यात्मक लहजा में सचाई के बयान करत सउँसे समाज के आगाह कइल आपन दायित्व बूझत बा :

'एक दिन गइलीं रपट लिखावै घबड़ायल कुछ माने में,
का बतलाईं ए भइया, मोर जेब कट गयल थाने में।
नमो–नमो हे देवता दानी, राउर सब क अकथ कहानी,
लोग कहैं कबिरा क बानी, बरसै कम्बल भीजै पानी।
हम बावला गाँव में रहलीं खेते में खरिहाने में
का बतलाईं ए भइया, मोर जेब कट गयल थाने में।'

अइसना 'जनतंतर' में सभकर हाल बेहाल देखिके कवि कहत बा– 'केकर–केकर लेहीं नाँव, कमरी ओढ़ले सगरो गाँव, का बताईं मितवा, दुख देले परिछाईं, का बताईं मितवा !' एह लोककवि के पारखी नजर भूमंडलीकरण आ उदारीकरनो पर बा आ ओकर नजरिया एगो छंद में साफ–साफ नजर आवत बा :

'वाह रे उदारवृत्ति भारत निवासिन क, चोर चाईं सबके खियावै के हो गइल,
नागिन के बच्चा जे माहुर से घात करै, दूध और चानी पियावै के हो गयल,
केवल परिवार क परपंच रंगमंच भयल, अलग–अलग झोली सियावै के हो गयल,
जोर–जोर गाँठ परदेस के बिलारिन से, घरे–घरे कुक्कुर जियावै के हो गयल।'

संग्रह में बन, पहाड़, गँवई जिनिगी आ सउँसे प्रकृति के जियतार कुदरती छटा बा, त आन–बान–शान वाला भोजपुरिया जवानो बा। एक तरफ लोकसंस्कृति के झाँकी, त दोसरा ओर देश के आबरू खातिर जान कुरबान

करेके आवाहन – 'राखै बदे देश ला सिपहिया क भेष, तलवरिया लेला ना, कस के बाँधिला कमरिया, तलवरिया लेला ना !'

लोकधर्मिता, मनुजता आ संवेदनशीलता 'बावला' जी के सिरिजना के जान बा आ उहाँ के लेखन के मकसद रहल बा इंसान के बेहतरी। भोजपुरी अंचल के ऊबड़–खाबड़ खाँटी जमीन पर खाँटी शब्द, लोकोक्ति, मुहावरा में लोकधुन, छंद आ वाचिक परिपाटी में रचाइल 'बावला' के गीत झर–झर झरत पहाड़ी नदी आ झरना नियर प्रवहमान बाड़न स, जवन भोजपुरी भाषा, संस्कृति आ लोकचेतना के अनमोल निधि बाड़न स। तबे नू हिंदी–भोजपुरी के गौरव–स्तम्भ पुन्नश्लोक डॉ0 विद्यानिवास मिश्र के रेघरियावे जोग टिप्पणी बा– "बावला जी तो निःस्पृह हैं, फक्कड़ कवि हैं और यह देवदुर्लभ गुण उनकी कविचेतना से जुड़कर अपने आपमें सिद्ध रचनाकारों के लिए भी स्पृहणीय है। मैं उनकी कविता को केवल भोजपुरी के लिए बहुमूल्य अवदान नहीं मानता। मैं उसे समस्त हिंदी क्षेत्र ही नहीं, समस्त भारत के लिए बहुमूल्य सांस्कृतिक अवदान मानता हूँ। उनकी रचनाएँ जीवंत वाचिक परम्परा की अभिवृद्धि जिस ईमानदारी और जिस जीवनश्रद्धा से कर रही हैं, उसमें भारतीय प्रतिभा की सनातन सक्रियता का प्रबल प्रमाण मिलता है।"भोजपुरी में कबीर आ भिखारी ठाकुर के परिपाटी के एह जियतार लोककवि के हमार सरधांजलि ! ●●

लघु कथा

के, घर–बाहर ?

❑ **राजगुप्त**

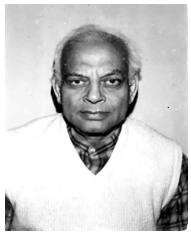

कवनो बाति के लेके मंगल बाबू आ उनका श्रीमती जी मोहिनी के बीच मुँह चोंथउअलि होखे लागल। बाति एतना बढ़ल कि आपुस के उघटा पइँचि बहरी ले सुनाये लागल। साफ सुथर आदमी पर अइसन अछरँग ? मंगल आपा से बाहर हो गइले। जइसे अब्बर मेहरारू के सोझा उनकर मरदानगी जागि गइल होखे, गरजत अपना बेकति से बोलले, ''अब, एको छन खातिर हमरी आँखि के सोझा पड़लू तऽ हमरा से बाउर केहू ना होखी। बस जल्दी से निकल जा घर का बहरी। ना त चउखट के बहरी ठिठिरा के ढकेलि देइब ! हम नइखीं चाहत कि हाथ लगाईं।''

मंगल बाबू के गरमिआइल देखि मोहिनी पहिले त बरफ हो गइली। फेर हाथ जोड़ि विनती करत, कहली ''क्षमा करबि पति परमेश्वर जी ! हमरा के, हमार बाप महतारी माने सासु ससुर जी पुरहर ठोंकि ठेठा के बड़ी पसन्द कइला के बाद, अपना घर के लक्ष्मी बना के लिआइल बाड़े। अइसना में रउरा, हमके घर से निकाले के अधिकार नइखे। ई घर तऽ हमरी सासु ससुर के नाँवे बा।

बेटा पतोहि के किच–किच सुनि बाप महतारी केवाड़ी की लगे आके ठाढ़ हो गइल रहे लोग। अपना बाप महतारी के मुस्किआत देखि के मंगल बाबू खीसि में गोड़ पटकत, घर से बहरिया गइले।

फोटो ग्राफर, लेखक, कवि लोगन से.....

(1) फुलस्केप कागज पर साफ सुन्दर लिखावट में भा टाइप कराके रचना–सामग्री आ साथ में संक्षिप्त–परिचय आ फोटोग्राफ भेजीं।
(2) पत्रिका में रिपोर्ताज (रपट) फीचर सामग्री भेजत खा, साथ में ऊहे चित्र/फोटो भेजल जाव, जवन बढ़िया आ प्रकाशन जोग होखे।
(3) पाठक भाई लोगन से विनती बा कि पत्रिका का बारे में, आपन प्रतिक्रिया/विचार भेजत खा, आपन नाम पता, पिनकोड सहित आ मोबाइल नम्बर भेजीं।
(4) संस्कृति–कला संबंधी आलेख बढ़िया चित्र रेखाचित्र, फोटोग्राफ के साथ प्रिन्ट–आउट का साथे भेजत खा ओकरा तथ्य–परक प्रामाणिकता के जाँच जरूर करीं।
(5) निजी खर्चा पर निकलेवाली आ बिना लाभ के छपेवाली अव्यावसायिक पत्रिकन के सबसे ज्यादा सहयोग ओकरा लेखक कवियन आ पाठकन से मिलेला। ई समझ के एह पत्रिका के पहिले खुद ग्राहक बनी अउरी दुसरो के बनाईं।

समीक्षा

रचना-विधान के बहाने भोजपुरी कहानी के पड़ताल

❑ विष्णुदेव तिवारी

साठ बरिस के ऊपर के अपना विकास काल में भोजपुरी कहानी कई मोड़, कई उछाल, कई भल–अनभल पड़ावन से गुजरत प्रवहमान होत आ रहल बा। एह में अपना समय आ युग के साँच आदर्श रूप में, त कबो तिक्खर यथार्थ रूप में प्रगट होत रहल बा। भोजपुरी कहानी के शुरूआते चूँकि यथार्थ के कोख से भइल, एह से एह में भिन्न–भिन्न यथार्थन के परखे आ पकड़े के कूबत रहल बाकिर भोजपुरी लोक के सोझ आ सिधउवा सोभाव के वजह से एकरा कहानियों में उहे रूप सेसर होत चलत चल गइल, जवन एकरा खून आ परंपरा में रहे, जीवन के सम्यक् आरोह–अवरोह के संवेदना के उच्च धरातल पर उरेह, जवना से कवनो कृति कलाकृति बनेले, मजगर ना हो पाइल। अपवाद जरूर रहले स। चाहे आधार काल होखे चाहे विकास काल चाहे आधुनिक काल युगीन चेतना आ ओकरा धूप छाँह के डिठार के अंकन जरूर 'कुंदन सिंह केसर बाई', 'मछरी', 'हरताल', 'भैरवी के साज' आदि कहानियन से सरत 'हम जरूर आइबि !' तक चलत चल आइल।

यद्यपि भोजपुरी लोक साहित्य में अनघा कथा–कहानी रहली स तथापि अपना आधुनिक रूप में ई निश्चित रूप से हिंदी आ ओकरा संगे–साथ अउर–अउर भाषा सब से, कबो सोझ–सोझउआ त कबो घूम–घुमौउवा बायन लेत चल आइल। खुद आधुनिक हिंदी कहानी पश्चिम से प्रभाव लेके उमगल बाकिर जइसे ऊ पर के लिहलस आ चेतना आ संवेदना भारतीय रहे, ओसहीं भोजपुरियो कहानी प्रभाव त एने–ओने आरी–डँड़ारी से ग्रहण कइलस : रूप लिहलस साँस ना, खड़ा होखे के तकनीक लिहलस, चले–बोले आ छा जाये के सहूर–लूर त ओकर एकदम आपन रहे। अपवाद एहिजो रहे, दबाव एहिजो रहे। ई अपवाद विकास–काल आ आधुनिक काल में ज्यादा लक्षित भइल। आधार काल के लेखक ज्यादा सजग रहले, एह से ऊ विदेशी पचा के देशी दिहले। ऊ सबुर विकास काल आ आधुनिक काल के कहानी लेखकन में ओतना ना लउकल। इहे कारण बा कि बाद के भोजपुरी कहानी अच्छा त भइली स, ओमे युगीन चेतनो मुखरित भइल बाकिर कम कहानी ओह क्लासिकी ऊँचाई पर पहुँचली स, जवना ऊँचाई पर ओकरा के जनमते दण्डिस्वामी विमलानंद सरस्वती, आचार्य शिवपूजन सहाय, रामवृक्ष राय 'विधुर', ईश्वर चन्द्र सिन्हा, रूद्र काशिकेय, चतुरी चाचा (मुक्तेश्वर तिवारी 'बेसुध'), ऋषिश्वर, प्रियरंजन, रामेश्वर सिंह 'काश्यप' आदि दिहलें रहले लोग।

कहानी के सफलता–विफलता के निर्णायक तत्व तीनिए गो होला– पहिलका लेखक, दुसरका कथावस्तु आ तिसरका कथा–भाषा। तीनूं में समन्वय रही त निश्चिते कहानी सफल बनी। समकालीन हिंदी आ भोजपुरी दूनों के कथा–साहित्य में ई समन्वय घटत गइल बा। एही से आजु के अधिकांश कहानी व्यापक स्तर पर पाठकन के बान्हें में समर्थ नइखे हो पावत। मानि लीं कि कथाकार भोजपुरी संवेदना–संस्कार के बा, कथावस्तु बंगला के आ भाषा हिंदी, तऽ जाहिर बा कि रचना में ना त ऊ समन्वय होई आ ना ऊ

प्रभाव होई, जवन तीनों के एकता से होई। त आजु के भोजपुरी कहानी में हिंदी के नकल करके आ हिंदी से होड़ लेबे के जतना बेचैनी देखाता, ओतना तीनों तत्वन के समन्वय के साथ, कहानी लिखे के ललक नइखे देखात। कथा साहित्य के समीक्षों के इहे हाल बा। एह कारण कवनो अइसन कृति नइखे आ पावत, जवन व्यापक स्तर पर लोगन के ध्यान खींचि सके।[1]

एकर कारण कुछ त भोजपुरी ठसक आ परंपरा में आ कुछ भोजपुरी कहानी लेखकन के आपन व्यक्तिगत पहुँच आ हैसियत में खोजल जा सकता बा। हिंदी में कई गो कहानीकारन के रेखांकित करे लायक कहानी अइली सन। ओकरा पाछे भोजपुरी के धड़कन–चिन्तन, सोच, विचार आ संघर्षपूर्ण जीवन रहल ह। बाकिर अपने चिझुइया के अपना भोजपुरी भाषा में सार्थक आ सोद्देश्यपूर्ण ढंग से उकेरे आ सिरजे के प्रयास कथाकार कम कइले हा। जब ले भोजपुरी कहानी अपना समय के नबुज ठीक से ना पकड़ी आ ओकर लेखक सिरजन के मौलिकता से ना जुड़िहें, तब ले ऊ दोसरा भाषा सब के मुकाबले जीवंत रूप में ना खाड़ हो पाई।[2]

हिंदी के 'नई कहानी' के पुरोधन में शिव प्रसाद सिंह विशिष्ट बाड़ें। गाँव, कस्बा आ शहर (नगर ना) के सामान्य जनता के विशिष्ट अनुभवन के उभारे वाली उनकर कुछ विशिष्ट कहानी बाड़ी स। कथाकार शिव प्रसाद सिंह भोजपुरी क्षेत्र के ओह विशिष्ट विभूतियन में से एगो बाड़ें जे हिंदी कथा–साहित्य के (भोजपुरी के ना) अपना अप्रतिम योगदान से समृद्ध कइले। इनकरा कहानियन पर चर्चा करत मधुरेश लिखत बाड़ें कि– 'शिव प्रसाद सिंह पतनशील पश्चिमी संस्कृति की सेक्स और कुंठा प्रधान बीमार आधुनिकता के निषेध से अपनी रचना यात्रा शुरू करते हैं।'[3] शिव प्रसाद सिंह के कहानियन के खासियत बा कि ऊपर से आदर्शवादी लउकत इनकर पात्र दरअसल आधुनिक बोध आ समकालीन युगधर्म के रूपायित करे वाला होला लोग। मधुरेश आगे लिखत बाड़ें– 'शिवप्रसाद सिंह की कहानियों की दुनिया अधिकतर बूढ़े और आदर्श पात्रों की दुनिया है – चाहे वह 'नई पुरानी तस्वीरें' की बुआ हों या 'हीरों की खोज' के बोधन तिवारी। 'दादी माँ', 'देऊ दादा' और 'उपधायन मैया' में भी शिवप्रसाद सिंह ऐसे पात्रों को केन्द्र में रखते हैं, जो अपने चारित्रिक प्रभा–मंडल से भले थोड़ी ही देर को, अभिभूत किए बना नहीं छोड़ते। ऊपर से कठोर लेकिन अंदर से क्षमाशील, शांत और गंभीर किस्म के ये बूढ़े पात्र गाँव के जीवन में अभी भी हतप्रभ नहीं हुए हैं।'

आजुओ भोजपुरी क्षेत्र के कई नामी–गिरामी कहानीकार भोजपुरी से महटियाइ के भा तटस्थ होके, हिंदी के समृद्धि में जीवे–जँगरे लागल बा लोग। मिथिलेश्वर, नीरज सिंह, मधुकर सिंह आदि एही श्रेणी में अइहें। एह में मधुकर सिंह तबो भोजपुरी के प्रति अधिका ममत्व राखेले। एहिल पाठ[4], तिसरकी लड़ाई[5], युग[6] आदि इनकर कुछ नीक भोजपुरी कहानी हई स। मिथिलेश्वर के 'तिरिया जनम जनि दीहऽ विधाता'[7] विकास–काल के श्रेष्ठ कहानियन में गिनाले, जेमे नारी जीवन के बिथा, दंश आ जलालत तथा पुरुषवादी सोंच आ संरचना के क्रूरता के वजह से ओकर मौत के बड़ा हृदय–द्रावक वर्णन कइल गइल बा। नीरज सिंह के कुछ सधल आ आमजन पक्षधर कहानी विभिन्न भोजपुरी–पत्रिकन में लउकली हा स।

शुरूआती भोजपुरी कहानी गाँवे तक सीमित रहली स आ उहनी में नागरी बोध गायब रहे। आजुओ एह में बहुत ज्यादा परिवर्तन नइखे लउकत। जब ई कहल जात बा कि भोजपुरी भाषा देशे में ना

विदेशो में फइलल, पसरल आ लतरल बा, तब देश विदेश के घर, नगर, मल्टीप्लेक्स – जहाँ–जहाँ आदमी बा, खाली भोजपुरिए ना, ओहिजा, ओहिजा के कथा–कहानी पूरा संवेदना आ कलात्मक शिष्टता के साथे आवे के चाहीं। बाकिर ध्यान ई रखे के होई कि देश–विदेश के कहानी बस वर्णनात्मक ढंग से कहि देला भर से ना होई, ओमे संवेदना जनित अनुभव बोध के शिष्ट शिल्प के सहारे सुघरो बनावे के श्रद्धा होई, ना त ऊ कहानी त नाहिंए होई, भले अउर कुछ हो जाव। जब लेखक कहानी लिखे चलल आ ओकर रचना कहानी ना बन सकत तऽ अउरी दोसर का बनीं ? अइसन कि यदि प्रकृति नारी बनावे चले आ नारी ना बन जावे त ओकर रचना पुरुष त नाहिंए बन पाई। तब ऊ नारी आ पुरुष के अलावे कुदरती जवन होला, उहे बन के रह जाई, जेकर त्रासद कलांकन भगवती प्रसाद द्विवेदी अपना प्रसिद्ध कहानी 'ठेंगा' में कइले बाड़ें।

2008 में जमशेदपुर भोजपुरी साहित्य परिषद् से ब्रजमोहन राय देहाती के कहानी संग्रह 'ओरहन' के क्रमशः दू गो कहानी 'छतनार बरगद' आ 'ओरहन' पर चर्चा करत किताब के भूमिका में डॉ0 बच्चन पाठक 'सलिल' लिखत बाड़ें कि एह दूनों कहानियन के माध्यम से देहाती भाई भोजपुरी जगत के अनमोल उपहार दिहलें काहे कि ई दूनों कहानी के परिवेश विदेश बा। 'छतनार बरगद' में जहाँ भारत से अमेरिका तक के चित्रण बा आ पात्र भारतीय बाड़ें, ओहिजे ओरहन में सारा कथानक अमेरिका में घटित होता आ पात्र अमेरिकन बाड़े। 'ओरहन' में एगो सजायाफ्ता बाप के अपना पुत्र के प्रति अछोर प्रेम देखावे के चेष्टा कइल गइल बा, ओहिजे 'छतनार बरगदो' में घुमा–फिरा के अपना धरती आ अपना लोगन के प्रेमे के वर्णन प्रमुख बा, एकरा अलावा जवन बा ऊ अमेरिकी नागरिकता आ उन्मुक्त नारी के उन्मुक्त सेक्स के एगो उछाह देखाऊ साहु के डाल। दरअसल, ई दूनो कहानी ना त कथ्य में, ना त शिल्प में कवनो नया जमीन कोड़ऽ तारी स, न यथार्थपरक दृष्टि से आधुनिक भावबोध के सम्यक् उरेहन में सफल होत बाड़ी स। विषय के ट्रीटमेंट में, कथ्य से ओकरा शिल्प के अलग क के कइसे देखल जा सकत बा ? कथ्य कहे के लूर–ढँग में बासीपना एह कहानियन के प्रभावी नइखे होखे देत आ अंत–अंत तक तयशुदा आदर्श स्थापना त एकनी के कतहूँ के नइखे छोड़त। भाषा में भी बहुत दम नइखे।

असंभाव्य परिस्थितियन आ संजोग के विकृतियन से छोटे–छोटे हाँफत वाक्यन में लिखाइल कहानी विकलांग बोध पैदा करत बाड़ी स। ना त चरित्रन के पुरहर विकासे हो सकल बा, ना कार्य–कारण से कथ्य के स्वाभाविक पूर्णाहुति। डॉ0 सलिल कहत बाड़े कि 'कहानी के माने – 'भूसा छाप' गद्य में घटना लिखल ना होला।' 'भूसा छाप गद्य' आ 'अनाज छाप पद्य' कवनो शास्त्रीय शब्दावली ना ह। तबो भस्मासुर अइसन ई शब्दावली अपने के लीले खातिर तइयार बा काहे कि एहिजा न भाषा–संस्कार बा न भावन के जद्दोजहद। परंपरागत बातन के परंपरागत भाषा–भंगिमा के सहारे कतनो लपेटा–लपेटी करीं, ओकर प्रभाव 'फुस् दे' टाइम बन से इचिको अधिका ना होला। दोसर बात सलिल जी जेकरा के कथानक कहत बाड़न ..... ओरहन में सारा कथानक अमेरिका में घटित होता...) ऊ कथानक ना, कथा ह। शास्त्रीय शब्दन के प्रयोग में त बेसी सचेत–सावधान होखे के जरूरत बा।

आधुनिक कहानी साहित्य प्रेम के लजाधुर आ मथ–मिसउअल रूप के कहिये छोड़ दिहलस आ पेट आ सेक्स के सँड़भेड़ से सृजन के नया–नया क्षितिज गोदे के उतजोग कइलस। एने भोजपुरियों कहानी

में ई प्रवृत्ति चिन्हार हो रहल बा। व्यक्तिगत आ सामाजिक उत्पीड़न–शोषण, नारी–विमर्श, ओकर चतुर्दिक स्वतंत्रता, दलित–मुक्ति, संघर्ष–कथा, राजनीतिक छल–छद्म आ थेथराई में लूटत–बूड़त–उकसत आम–जन, बाजारवाद के चउतरफा चूतर–छिलउअल, गरदन–कटउअल, प्रेम के ऊपर स्वार्थ आ रिश्तन के ऊपर अर्थ के प्रधानता दिहल – ऊ मये, जवना से समाज उद्वेलित आ आक्रान्त बा, भोजपुरी कहानी में आ रहल बा बाकिर जवना रूप–रस–गंध–छुअन..... में आवे के चाहीं, ओकर स्तरीयता पर कबहुँओ–कबो ऊ पहुँच पावत बा ? पारसनाथ सिंह के कई–कई कहानी, कमे समय में, भोजपुरी माटी, माई, परास आदि में छपली हा स, जेमे कथ्य त आज के स्पष्ट लउकल हा, बाकिर विजन के अभाव आ ट्रीटमेन्ट के नवसिखुआ औजारन के सहारे निर्मित कथानक में ऊ धार, ऊ संवेदना आ ऊ सनाक्–दे छू जाये वाला युगबोध जे ढेर देरी ले बेचैन–बेचेत राखे खाली अँखुआइए के रह जात बा, उकसत नइखे। श्री सिंह के ताबर–तोर छपल कहानियन में से कुछ एह प्रकार बाड़ी स – वोट[8], माई[9], पाकिटमार[10], हम पढ़ब[11], एहसान[12] आदि। कहानी के शीर्षको कहानीकार के बल–बेंवत आ मंशा उजागर करे में समरथ बाड़े स। उमेश कुमार पाठक 'रवि', भगवान सिंह 'भास्कर', प्रो0 प्रेम कुमार सिंह आदि लोग एही कटेगरी में अइहें। तबो कुछ कहे के रूप में, अभिव्यक्ति स्वातंत्र्य के दिसाई, इहनो लोग के योगदान के सकारल अनुचित ना होई।

निःसन्देह भोजपुरी कहानी साहित्य के फलक बढ़ल बा। एह में अब ओकरा सामने सरहद आ सीमा के कवनो पाबंदी नइखे। फ्रायड आ मार्क्स प्रेरित विचारधारा के अलावे राजनीति के सड़ांध से उपजल नया सामाजिक–आर्थिक परिवेश के यथार्थ–चित्रण का ओर ई विशेष रूप से उन्मुख भइल बिया। डॉ0 रामदेव शुक्ल के 'चंपा परधान', लव शर्मा प्रशांत के 'फेर चिरईं खोंता में' आ अनिल ओझा 'नीरद' के 'गुरु–दक्षिणा' जइसन बढ़िया कहानी एकर परतोख बाड़ी स। बिगड़ल नक्सलवाद के दू अलग–अलग कोणन से मानवी रूप में परखे–बूझे में डॉ0 अशोक द्विवेदी के कहानी 'अकेल हंस रोवेला ए राम', मिथिलेश्वर के कहानी 'सच के सोर पाताल में' आ गिरिजाशंकर राय 'गिरिजेश' के कहानी 'नक्सली'[13] मदद करत बाड़ी सऽ, यद्यपि शिल्प आ संवेदना में 'गिरिजेश' के कहानी अपना जानल–पहचानल घोरदवान से आगे नइखे बढ़ पावत। आजुओ, नक्सलवाद के उद्भव (ओकर विकास ना) के सम्यक् दृष्टि से उरेहल गइल कहानियन में प्रियरंज के 'बैजुआ' के तथ्यगत आ ऐतिहासिक मूल्य अक्षुण्ण बा। सामंतवादी आ महाजनी सभ्यता के विकृति के प्रतिक्रिया के रूप में उपजल एह लोक–क्रांति के दशा अउर दिशा के बारे में तरह–तरह के साँच–झूठ आज पँवरत बा आ जनता से सरकार तक सब एकरा दंश से टभक रहल बा, बाकिर समाधान के दी ? साहित्य त ना। साहित्य राह देखावे के भूमिका में होला, मंजिल के सहोथ के पावे के जुझमझार में ऊ ना अझुराई।

1990 के पहिले के भोजपुरी कहानियन के काया में लघुता रहत रहे। एने.... हिंदी आदि भाषा के कहानियन के प्रभाव से भा खुदे आज के सामाजिक–सांस्कृतिक–राजनीतिक आ आर्थिक शक्तियन के अपना आ अपना इर्द–गिर्द पड़े वाला तत्कालिक आ दीर्घकालिक प्रभावन के दबाव से, लमहर काया के कहानी प्रकाशित होखली हा स, प्रकाश उदय के 'कथा सतनैरना' के आठवाँ अध्याय' में सन् 1977 के बाद के सामाजिक–राजनीतिक–सांस्कृतिक कालखंड समाविष्ट बा। एह कहानी में एगो गाँव, ओकर टोला,

ओकर जाति आ जातियन के बनत–बिगड़त समीकरणन के बीचे पिछड़ा–दलित आ ओकरा बीच से पनकत नया तरह के सामाजिक–राजनीतिक गठजोड़, जेकर कारस्तानी सामंती मन–मरजी का कठकरेज व्यवहारो के सहमे–ठिठुर खातिर छोड़ देता, के रूपांकन देखल जा सकत बा। कुछ अउरियो लमहर काया वाली कहानी अइली स, जेमे अढ़ाई कोस (कृष्ण कुमार), तिसरकी आँख के अन्हार, डुगडुगी आ सुग्गी (तीनों रामदेव शुकल के) विशेष ध्यान खिंचली स।

23 जुलाई 1989 के अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के ओर से बोलवल गइल 'भोजपुरी कथाकार संगोष्ठी' में श्री नागेन्द्र प्रसाद सिंह एगो आलेख पाठ[14] कइले रहले, जेमे भोजपुरी कथा–साहित्य के चालीस बरिस के यात्रा में से 100 सशक्त कथाकरन के नाँव के उल्लेख भइल रहे। ई आलेख, बाद में, 'पाती' मार्च 1990 में प्रकाशित भइल रहे। हो सकऽता, एहमें, कुछ नाँव उनका से छूट गइल होखँऽस। दरअसल सूची ना, प्रवृत्ति महत्त्वपूर्ण होले, कवनो नाँव से ओकर कृति महत्त्वपूर्ण होले, काहे कि कृतिए में कृतिकार जिंदा रहेला, जइसे शरीर में साँस। भोजपुरी कहानी में क्रमशः कहानीकारन के लमहर काफिला गँवे–गँवे घटत गइल। आज संभवतः नीक कहानीकारन के संख्या चउथाइए बाँच गइल बा।

समकालीन भोजपुरी कहानी के कुछ महत्त्वपूर्ण कहानीकारन के नीक–जबून के आलोचनात्मक चर्चा डॉ0 बलभद्र अपना एगो आलेख 'भोजपुरी कहानी के फिलहाल'[15] में कइले बाड़े। ओह में मोटा–मोटी निम्नलिखित कहानीकार शामिल बाड़ें– सुरेश कांटक, अशोक द्विवेदी, तैयब हुसैन पीड़ित, लव शर्मा 'प्रशांत', चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह, कृष्ण कुमार, भगवती प्रसाद द्विवेदी, कृष्णानंद 'कृष्ण', रामदेव शुक्ल, रमाशंकर श्रीवास्तव, प्रकाश उदय, प्रेमशीला शुक्ल, रामलखन विद्यार्थी, जितेन्द्र कुमार, सुमन कुमार सिंह, जितेन्द्र कुमार वर्मा, रामनाथ पाण्डेय, सीमा स्वधा, अंकुश्री, प्रो. ब्रजकिशोर, गिरिजा शंकर राय 'गिरिजेश', मिथिलेश्वर, पाण्डेय आशुतोष्ज्ञ। समकालीन भोजपुरी कहानी में सक्रिय कुछ नाँव डॉ0 बलभद्र से छूट गइल बाड़े, जवन स्वाभाविक बा। देखे जोग त ई बा कि भोजपुरी कहानी में क्रमशः कहानीकारन के संख्या घटल बा अउर रचनाशीलता के प्रति निष्ठो उत्तरोत्तर घटल बा।

जवना त्याग, तप, संयम, निष्ठा आ मिशन भाव के साथ भोजपुरी के पूर्ववर्ती कहानीकार रचना कर्म में लागत रहे, आज के कहानीकार नइखे लागत। एकर फल ई होत बा कि आजु के कहानीकार बढ़िया कहानी लिख सकला के बस संभावना बन के रह जात बा। ओकरा नाँवे कवनो उपलब्धि नइखे जुट पावत। एकर कारण आर्थिक दबाव आ सांस्कृतिक छीजन में खोजल जा सकत बा। टीवी चैनल्स, विज्ञापन, गीत–गवनई, कैसेट्स, फिल्म, काज–परोज, धार्मिक अनुष्ठान आ जातीय–विजातीय समागम– हर जगहा, हर वस्तु आ व्यक्ति में छीजन बदस्तूर जारी बा। अइसना स्थिति में जब कहानी–लेखन से कुछुओ भेंटाये के नइखे, के झूठो को कपरबथी पाला ? जब हर आदमी अस्तित्व संकट आ काल्हु के चिंता से जूझ रहल बा, त नीक बा चार गो एने–ओने वाला (लोक) गीत लिख के कैसेटीकरण। दू पइसा मिलो, कइसहूँ मिलो, प्रेमचंद बन के प्रेमचंद के मउअत मँगला से त भोजपुरी के सइ कथाकारन में शामिल होखल मुश्किले जनाता।

पाती (बलिया), समकालीन भोजपुरी साहित्य (देवरिया), परास (बोकारो), सम्मेलन पत्रिका

(पटना) आदि कुछ पत्रिका अपना सामान्य आ विशेष अंकन के माध्यम से स्तरीय कहानी लेखन के बढ़ावा देबे खातिर विशेष रूप से प्रयत्नशील बा। कुछ पत्रिका विशेष आयोजन के तहत कई–कई कहानी–विशेषांक निकलली स। भाषा आ महतारी पइसा से ना सजे, ह्रदय के निःस्वार्थ प्रेम आ संस्कार से ओकर महिमा बढ़ेले। अगर भोजपुरी कहानीकार लोग मातृभाषा के अन्तरात्मा से कुछ दिहल चाहत बा, त उहन लोग के सार्थक, सोद्देश्यपूर्ण आ पोढ़ कहानी रचे पड़ी। पुरनको लोगन के तनी केंचुल उतार के कुछ अच्छा, कुछ मौलिक लिखे के संकल्प लेबे परी। कतने पुरनका जना जनाला कि पहिले आपन कहानी हिंदी में लिखेला, फेर बाद में भोजपुरी में अनुवाद कर देला। रचना धर्म में निष्ठा आ अनुशासन ना रहला से उच्छृंखलता आवेला आ सतही रचनन के जन्म होला।[16]

बाकिर अइसनों नइखे कि सब धान बाइसे पसेरी बा। समसामयिक परिवेश आ परिस्थितियन का साथ बदलल हाल आ खेयाल के असर से भोजपुरी कहानियन में नया कथ्य, नया विचार आइल बा, आ कहानी के ढाँचागत रूपो में एगो नयापन आ ताजगी लउकत बा।[17] भगवती प्रसाद द्विवेदी के 'ठेंगा', डॉ0 अशोक द्विवेदी के 'छुटकारा' आ 'परित्राणाय च दुष्कृताम्'[18] बरमेश्वर सिंह के 'मकड़जाल'[19], कृष्णानंद कृष्ण के 'कालो दी', प्रो0 ब्रज किशोर के 'सजाय' आ विजयन के 'मिरजापुर' भोजपुरी में बदलत समय के, बदलत सत्य के, नया शिल्प संस्कार से रचल गइल अइसने कहानी हई स। डॉ0 रामदेव शुक्ल के 'सुग्गी' आधुनिक भावबोध के अइसन कहानी बिया, जेमे बहिन अपना भाई पर हाथ उठावत बिया आ कामचोर भाई भिहिला जात बाड़े। इनकर भिहिलाइल परिवार के भिहिलइला के ना, फेर से नया सिरा से उठ खड़ा होखे के काम करत बा। सधल हाथ से सिरजल कहानी भोजपुरी मे दुर्लभ नइखे, कम बा।

भोजपुरी कहानियन में अधिकांश खटक जाला – ओकरा शिल्प कौशल या रचना विधान में शास्त्रीयता आ व्यावहारिकता के समन्वय के अभाव। सइ में पाँचे कहानी कथ्य आ शिल्प के, रूप आ हुनर के, सौन्दर्य आ ओकरा चमक के आ दोसरा शब्दन में शरीर आ साँस के समन्वय पर रचल बा। कथ्य ठीक त शिल्प गायब – वर्णन, वर्णन खलिसा वर्णन, जइसे समाचार लिखल गइल होखे। कहानी कला ह, समाचार भा सूचना मात्र ना। कहानी में सत्य त रहबे करेला बाकिर ऊ सत्य सौंदर्य समन्वित होखेला एह से कल्याणकर होला। आज अखबार पराड़कर जी वाला नइखे, एह से ओहिजा सब चलेला।

'भैरोनाथ के अखबार' (विनय बिहारी सिंह)[20] आ 'हाथी के दाँत' (गिरिजाशंकर राय 'गिरिजेश') कहानियन से आज के पत्रकारिता के दशा आ दिशा खुलत बा। कहानी (आ साहित्य मात्र) के 'सत्य' आ सौन्दर्य साधन ह, 'शिव' साध्य। अखबार में पइसा साध्य। धर्म में जवन स्थान आस्था आ विश्वास के बा आ राजनीति में मूल्यन के, उहे स्थान साहित्य में सत्य आ सौन्दर्य के बा। धर्म में श्रद्धा आ विश्वास शोषण के रोजगार हो सकत बा आ राजनीति में मूल्यन के दबेरल जा सकत बा, बाकिर साहित्य से सत्य आ सौन्दर्य के निकालल नइखे जा सकत। यदि अइसन हो जाई त साहित्य मू जाई। भोजपुरी कहानियन में सत्य आ सौंदर्य के जरिस 'शिवत्व' के प्राप्ति के चेष्टा हो रहला बा बाकिर शिल्प के दिशा में अब बहुत कुछ करे के बा। प्रदीप तिवारी के विचार बा कि भोजपुरी कहानी के भीतर कतना कला बा – ई बतावे चलीं त अंगुरिए पर गिना जाई। कमी गिने चलीं त अंगुरी के बाहरे हिसाब–किताब राखे के परी। एतना जरूर कहल

जा सकेला कि भोजपुरी कहानी में रूप–रंग के, शिल्प के मामला में प्रयोग के अभाव बा। आज जहाँ हिंदी कहानी में डायरी शैली, आत्मवृत्त शैली, रिपोर्ताज शैली, निबंध शैली जइसन अनेक विधि–विधान के प्रयोग हो रहल बा, उहें भोजपुरी कहानी में शैलीगत प्रयोग में नयापन कम देखे के मिलेला।[21]

प्रदीप तिवारी के कहलका अर्द्ध सत्य बा। प्रायः हिंदी के हर शैली के प्रयोग भोजपुरी कहानी में भइल बा, बस कमी बा त कुशलता, श्रेष्ठता आ संवेदना के उच्चतम धरातल पर सृजन के टापा–टोइयाँ हालत। चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह के निनानबे प्रतिशत कहानी आत्मवृत्तात्मक बाड़ी स। 'छल', 'माथ मुड़ाते ओला परल', 'सत्यमेव जयते', 'विपासना' आदि कहानी एकर परतोख बाड़ी स। एकरा अलावे ठेंगा (भगवती प्रसाद द्विवेदी), परित्राणाय च दुष्कृताम (डॉ0 अशोक द्विवेदी), गाँब बहुते गरम बा (कृष्णानंद कृष्ण), आगे से दू लगा लेब (रमाशंकर श्रीवास्तव), इहे साँच बा (बरमेश्वर सिंह), बंद केवाड़ी (रामेश्वर प्रसाद सिन्हा पीयूष), पगलेट (सीमा स्वधा), लीला : एक खंड (जितराम पाठक) जइसन अनघा कहानी आत्मवृत्तात्मक शैली में लिखल गइल बाड़ी स। 'चितकबरा पहाड़' आ 'परित्राणाय च दुष्कृताम्' (अशोक द्विवेदी), 'चढ़त–चढ़ावत भँड़हर फोरी' (अरुणेश नीरन), दादी अम्मा के उत्तर (डॉ0 शत्रुघ्न कुमार) आदि कहानियन में रिपोर्ताज शैली के दर्शन होता। अतने ना, प्रकाश उदय के लमहर कहानी – 'कथा सतनरैना के आठवाँ अध्याय' में वृत्तगंधी शैली के सफल प्रयोग भइल बा। भोजपुरी कहानी के रचना विधान हिंदी से प्रभावित होइयो के आपन निजी वैशिष्ट्य बरकरार रखले बा, जेमे आरंभ, विकास, चरम–बिन्दु, उतार आ अंत के बेसी महत्व नइखे दिहल गइल। भोजपुरी कहीन के जनम ओह घरी भइल रहे, जब हिन्दिए में पाँच तत्वन के ढाँचा चरमरा गइल रहे। आधुनिकता अउर ओकरा बाद उत्तर–आधुनिकता जेह तरी से हिंदी कहानी के आँख चमकवलस ओह तरी से भोजपुरी कहानी के ना। हिंदी कहानी के कलेवर में सहज–स्वाभाविक विकास भइल। भाषा का गाय के दूध (कहानी) सुई मार के ना गारल गइल। बरमेश्वर सिंह के कहानी 'दुखदेवन बहू' में कहानी के दू–दू गो उच्च बिन्दु बा।

हिंदी में चलल विभिन्न कहानी आन्दोलन से प्रभावित होइयो के भोजपुरी कहानी के रवानी में फरक ना परल आ ऊ बे गोलधावर बन्हले आ गुटबाजी कइले अपना मुकाम का ओर बढ़त गइल। (हिंदी में) अलग–अलग कथाकार समूह (कथाकारन के गिरोह ?) आपन–आपन अश्वमेध के घोड़ा छोड़त रहेला लोग। इनकरा जुलूस में शामिल होके बगटुट भागेला नवतुरिया कहानीकार आ जल्दिए थउस जाला। हवा बान्हहीं में हवा निकल जाला। **मसलन आजकल जादुई यथार्थवाद के नाम से पुकारल जाय वाला कहानी के दौर चलत बा एक तरह से हिंदी में।** ई लहर स्पेनिश भाषा में लिखे वाला मार्खेज आ बोर्खेस जइसन कथाकारन के अगुआई में उठल आ भारतीय मूल के अँगरेजी कथाकार सलमान रश्दी वगैरह से होत–हवात हिंदी के उदय प्रकाश नियन सुत्थर कहानीकार तक पहुँचल। एकर कुछ सम्बन्ध त वैचारिक क्षेत्र के उत्तर आधुनिकतावादी मनोदशा से भी बा, जेकरा तहत पुरातन के पुनरूत्थान हो रहल बा। तथाकथित वैज्ञानिक दृष्टिकोण के अवैज्ञानिक जकड़बन्दी से छूट के कल्पनाशक्ति के अभिनव खेल खेले खातिर अपना के स्वतंत्र महसूस करे, एकरा में त कवनो बुराई नइखे, बाकिर ई भुलाय के ना चाहीं कि हर देश–समाज के आपन सांस्कृतिक अतीत होला – आपन सामूहिक स्मृति। **अपना इहाँ पुरानन से लेके**

कथा सरित्सागर तक में कल्पना के जे कथा–विलास बा आ ओकरा साथे–साथ सत्यान्वेषण के टेक, ओकर जोड़ीदार कवनो अउर महादेश में, कवनो दोसर भाषिक समाज में ढूँढले ना मिला गोया, जादुई यथार्थवाद के कुंजी अपने घरे मिल सकेला, धीरज के साथ ओकर खोज त कइल जाय, अपना स्मृति के उलट–पुलट के, आ ऊहे कुंजी असली होई, असत्य पर समकालीन समय के केतनो जटिल आ कुटिल ताला जड़ल होय, ओकरा लगवते खट से खुल जाई – हिरण्यमय पात्र के ढक्कन आ सत्य उघर जाई – सुबरन। एह सिलसिला में, निकट के उदाहरण के रूप में, एगो स्पृहणीय कथाकार के इयाद कइल जा सकेला, ऊ हवे राजस्थानी के विजयदान देथा। लोकचित्त से उनकर जुड़ाव बड़ा गहिर बा, आ ओतने अचूक बा समकालीन काल–गति के उनकर समझ। राजस्थान में रात–रात भर बल्कि कई–कई दिन रात तक चले वाला कहानी के कहन के लोकचलन रहल बा, पेशेवर कहानीकार लोग रहल बा, पुरखा–परम्परा से। उनकर कहन शैली के आत्मसात करत आ ओकरा में आज के बेधक युग–सत्य के घोलत विजयदान देथा जे कथा–संसार रचले बाड़ें, ऊ जतना मनोरम बा, ओतने बेलौस। देथा के ध्यान यथार्थ से अधिक 'सत्य' पर टिकल रहेला। भोजपुरिया जमीन पर लोककथा, गाथा आ लोकगीतन के बेहद्दी मैदान फैलल बा, ओकरा में जड़ रोप के जवन कथाकार प्रतिभा अँकुरी ओकर फूल–फल में जवन गंध–रस होई ऊ अनुपमे होई, विश्वात्मा ओकरे से तृप्त होई। काहे कि ओकरे में ऊ जातीय चरित्र के अभिव्यक्ति मिली जेकरा करने भोजपुरिया के गिरगिटिया हजूर बनल मंजूर ना ह, गिरमिटिया मजूर बनल बेशक कबूल ह।[22]

बेशक् भोजपुरी कहानी के अबे बहुत कुछ करे के बा। संख्या आ मात्रागत अधिकाई से उबर के, गुण आधारित रचाएव बिनाव में उत्कृष्टता ले आवे के बा, बाकिर अइसनो नइखे कि एकरा खाता में उपलब्धि कम बा। अपना कम्मे जीवन काल में भोजपुरी कहानी कहानीगत, शिल्पगत, भाषागत, चेतनागत आ समग्रतः जीवनगत विकास कइले बिया। खासकर सदी के अंतिम दशक से लेके आज तक के भोजपुरी कहानी अपना के हर मोरचा पर लायक साबित कइले बिया। एह लायकी के सफर अपना स्वाभाविक गति से जारी बा। आज के भोजपुरी कहानी माने ना खाली डॉ0 अशोक द्विवेदी के कहानी आ ना आज के भोजपुरी पत्रिका माने खाली 'समकालीन भोजपुरी साहित्य', जइसन कि डॉ0 शुकदेव सिंह कबो कहले रहलन। अपना विद्वता, अनुभव, लोक संस्कार के समझ आ मौलिकता के बावजूद डॉ0 सिंह के कहलका ना तब साँच रहे ना अब एह ठोस सत्य के साथ खाड़ होखला के बादो कि ''आधुनिक भोजपुरी कहानीकारन आ पत्रिकन के लिस्ट तब तक पूरा ना होई जबतक ओमे डॉ0 अशोक द्विवेदी आ 'समकालीन भोजपुरी साहित्य' शामिल ना होई लोग। डॉ0 सिंह के कथन के कवनो पूर्वाग्रह कहल ठीक ना होई, बाकिर ई जरूर कहाई कि तत्कालीन भोजपुरी कहानी आ स्तरीय पत्रिका उनका आँख के सोझा से ढेर ना गुजरल होइहें स। बाकिर भोजपुरी कहानी के बारे में उनकर बाकी कहलका आजुओं बहुत हद तक सांच बा, बहुत कुछ बदलला के बादो। डॉ0 सिंह कहले रहले –

"भोजपुरी कहानी से आपन अपेक्षा के बारे में बतावे के पहिले हम 'समकालीन भोजपुरी साहित्य' आ डॉ0 अशोक द्विवेदी के कहानियन के छोड़त बानीं, एसे कि एह पत्रिका में हिंदी के समानान्तर सब–सब संभावना बा आ ''डॉ0 द्विवेदी में हिंदी के कवनों समकालीन लेखक के बराबर लेखकीय जागरूकता आ

भाषा–संबंधी बेंवत बा। ऊ निहायत ठेठ भोजपुरी शब्दन के ताकत के पहचाने वाला लेखक हवे।'' दरअसल अशोक द्विवेदी हिंदी के लेखक हवे एह से भोजपुरी के लेखक हवे। ई समझ किन्तु–परन्तु के साथे सुरेश कांटको में जोहल जा सकेला, बाकिर उनका भोजपुरी लेखक कहानी लिखत समय या त शिक्षित भोजपुरिया मतिन लिखेला भा अशिक्षित भोजपुरिया मतिन। ओ लोग में लेखकीय प्रशिक्षण के निछुने अभाव बा। कभी ऊ लोग लोकगीत–लोककथा के जुठारत लिखेला, त कभी खड़ी बोली के पाँव पखारत।...."

"....अचरज त ई बा कि जहाँ भोजपुरी क्षेत्र में मिथिलेश्वर जइसन लेखक समकालीन गाँव के खड़ी बोली में सही–सही, समय के साथ रच लेत बा, उहें, एगो भोजपुरी लेखक अपना समय के सच नइखे लिख पावत। एम. सी. सी. पार्टी यूनिटी, माले, नक्सलाइट– सब सही, बाकिर का केहू ई सवाल उठावल कि दरिद्र लोगन का लगे अतना महँगा हथियार कहाँ से आवेला, वर्ग–संघर्ष गाँवें में काहे होता, जहाँ बड़–बड़ पूँजीपतियन के धन–बल दूनो बढ़ल जाता, ओह इलाका में नर–संहार काहे नइखे होत, कवना बड़ पूँजीपति के सँउसे–के–सँउसे परिवार मार देहल गइल ? जादे–से–जादे छोट–छोट नव–धनिकन में से कबो–कवनो के अपहरण क लियाइल, फिरौती मिलल त त वापस, ना मिलल त कवनो कच्चा–बच्चा के मार देहल गइल। शहर के तुलना में गाँव के जादे खतरनाक भइल, साँझ के अन्हार, चौबीस घंटा के डर, हवा से, पानी से, पेड़ो–पतई से डेराइल – डर भोजपुरी क्षेत्र के प्रकृति बनल जात बा, जबकि निडर भइल भोजपुरियन के सबसे बड़ ताकत ह, ओकर पहचान ह। ओकरा लाठी के हूरा में कवनो बड़बोला के थुथुन थूर देबे के बल रहे, बड़ी निरापद नाच गान चलत रहल बा। बभनौटी से लेके चमरौटी तक बबुआ, काका, चाचा, बाबू, बड़का बाबू, छोटका बाबू, मउसा, मउसी, नइहर, ससुरार, नेवता–हँकारी के एगो प्रबल संस्कृति रहे। बियाहल बहिन के गाँव के नाउओ पाहुन होत रहे आ ससुरार के गाँव के पाँडहूँ जी सार। दुलहा कवनो जात के होखस दुलहा राम रहन आ दुलहिन सीता। बाकिर शहर के सुविधन के तुलना में दीन–हीन होत भोजपुरिया गाँव निर्धनता के धन से धनी होत जात बाड़न स, बहरियो से गायब, भितरियो से गायब, एगो अइसन ढोलक जवना पर थाप देबे खातिर कुछुओ नइखे मढ़ल। अइसन खोंखड़ होत जात मानव जाति के कहानी काहे नइखे लिखात ? कब लिखाई ? सचाई से अतना भागमभाग कब तक चली ? हम ना लिखइला के दर्द के बड़ा आवेश से कहल चाहत बानीं – रउरा चाहीं त एकरा के दलिद्दर खेदल कह सकत बानीं।"[23]

मौलिकता, संवेदना के सहज स्फरण, शिल्प के सुघरता, तटस्थता के साथ आत्मीयता, युग के पदचाप, संस्कृति के निर्माण आ क्षरण के पहचान के साथ–साथ दृष्टि के स्वच्छता आ हर हाल में सामान्य शोषित जन के पक्ष में खाड़ होखे के हियाव के लेहाज से भोजपुरी साहित्य के 25 गो सर्वश्रेष्ठ कहानी, जे संसार के कवनो सभ्य भाषा के कहानी के समतुल्य बाड़ी स, नीचे दिहल जा रहल बाड़ी स। कहानी के चयन विभिन्न साहित्यकारन से मोबाइल पर बात क के आ पर्याप्त समय पश्चात् आइल निष्कर्ष के रूप में कइल जा रहल बा।[24]

1. दफा–302 (कहानीकार : दण्डिस्वामी विमलानंद सरस्वती) : एह में भूख, गरीबी आ कुछ काम ना मिलला के वजह से अपने पतोह आ ओकर जनमतुआ के खुदे हत्या कर देबे वाला दीन रामनाथ नोनिया के मर्मांतक कथा कहल गइल बा।

2. कुंदन सिंह केसर बाई (कहानीकार : आचार्य शिवपूजन सहाय) : देश खातिर पति–पत्नी के बलिदान के त्रासद कथा ह ई कहानी।

3. हरताल (कहानीकार : पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय) : एगो अछूत द्वारा गाँधीवादी तरीका से अपना अपमान के बदला लेबे के श्रेष्ठ रचना ह 'हरताल'।

4. मछरी (कहानीकार : रामेश्वर सिंह 'काश्यप') : एह कहानी में मयभा महतारी द्वारा प्रताड़ित कुंती नाँव के एगो युवती के कहानी कहल गइल बा।

5. अलबम (कहानीकार : ऋषिश्वर) एगो अजगुत प्रेमकथा।

6. भइँस के दूध (कहानीकार : मुक्तेश्वर तिवारी 'बेसुध' 'चतुरी चाचा') : घरकच के बीच महाजनी शोषण के व्यंग्य कथा।

7. हम कुंती ना हईं (कहानीकार : पी. चन्द्र विनोद) : पर–पुरुष से उत्पन्न संतान के हृदय से लगा के परिवार छोड़ देबे वाली आदर्श नारी के कथा।

8. मिरजापुर (कहानीकार : विजयन) : एगो नपुंसक जमींदार आ ओकरा से प्रताड़ित ओकर रूपवती पत्नी के कहानी।

9. पह ना फाटल रहे : (कहानीकार : रामलखन विद्यार्थी) : एगो दलित के शोषण आ ओकर त्रासद मौत के कथा।

10. मिरिगजल (कहानीकार : कन्हैया सिंह 'सदय') : क्रूर अमानवीय स्थितियन के बीच पनपल नेह कथा।

11. सिद्ध साँप (कहानीकार : तैयब हुसैन पीड़ित) : देश के लूटे वाला राजनीतिक नेतन के तिकड़म के फैंट्सी कथा।

12. चितकबरा पहाड़ वाला गाँव (कहानीकार : अशोक द्विवेदी) : प्रकृति के गोदी में पले वाला पहाड़ी लोगन के, सभ्य समाज (तथाकथित) द्वारा शोषण आ उनका बीच से उठत जबरजस्त प्रतिकार के मर्मस्पर्शी कथा।

13. सजाय (कहानीकार : ब्रजकिशोर) : अय्यास जमींदार के जननेन्द्रिय काट के अपना पति के अपमान आ आँख फोरला के बदला चुका लेबे वाली एगो गरीब बाकिर स्वाभिमानी नारी के जीवंत कथा।

14. तृष्णा (कहानीकार : बरमेश्वर सिंह) : अलक्षित परंपरा आ लक्षित शोषण के बीच पसरत दाम्पत्य प्रेम के अजगुत कथा।

15. कालो दी (कहानीकार : कृष्णानंद कृष्ण) : सर्वहारा के पक्ष में खाड़ एगो महंथिन के लोमहर्षक अंत के कथा।

16. काहें कहनी कि हम आएब (कहानीकार : रमाशंकर श्रीवास्तव) : एगो अशरीरी प्रेम कथा।

17. तिसरका कुल्ला (कहानीकार : प्रकाश उदय) : जातीय वर्चस्व के समरसता में बदले वाली व्यंग्य कथा।

18. फगुआ (कहानीकार : सुधा वर्मा) : वित्तरहित कॉलेज के दीन–हीन लेक्चरर् के घर, परिवार,

पत्नी से प्रताड़ना आ अपमान के कथा।

19. ठेंगा (कहानीकार : भगवती प्रसाद द्विवेदी) : हिंजड़ा जीवन के दुखद कथा।

20. कजरौटा (कहानीकार : पुष्पिता) : जातीय द्वंद्व, डर, आतंक आ राहत के बीच नदी प्रदूषण आ प्रेमिल सुधियन के श्रेष्ठ कथा।

21. बहाली (कहानीकार : सुरेश कांटक) : बेईमानी, छल–कपट से सिधवा लोग के परेशान करे वाला मतलबी लोगन के बीच से बहाली खातिर जाए वाला नवयुवक के फायरिंग में मौत के दुखद कथा।

22. जाए कि बेरिया (कहानीकार : प्रेमशीला शुक्ल) : निम्न वर्ण के नारी के उच्च वर्ण के बिअहल पुरुष से प्रेम आ अंत में मउअत के साथ वाजिब हक से बेदखली के कथा।

23. उनकर आपन घर (कहानीकार : सुमन कुमार सिंह) : वृद्धावस्था के सोंच, दुःख, संतान के प्रति अछोर प्रेम आ एह सब के बीच उभरल बीतरागिता के कथा।

24. सुग्गी (कहानीकार : डॉ0 रामदेव शुक्ल) : एगो बोल्ड युवती के कथा जे अपना मेधा के वजह से दिल्ली पुलिस में बड़हन अधिकारी चुनल जात बा।

25. 'झूठा मोकदमा (जितेन्द्र कुमार) जातिवादी राजनीति में रँगाइल पियक्कड़ के कहानी, जे पियला से बरिजला पर अपना मेहरारू के मुवा देता, बाकि सत्ता के दुलरूवा का नाते पुलिस ओकरा पर कुछ नइखे करत।

(भोजपुरी कहानी, निश्चित रूप से, अपना समय, साँच से मुठभेड़ करत, लोक–मन–सोच आ अस्मिता के ऐना बनत, जिनगी के विविध रंगन के झलक देखे–देखावे खातिर प्रयासरत बा। आशा कइल जा सकत बा कि जीवन–यथार्थ में रचल–बसल कहानी भोजपुरी कथा–साहित्य के विस्तृत फलक दीहें। कुछ नवहा कहानीकारन में ई संभावना गाहे बेगाहे लउकि जात बा। सिद्धहस्त कथाकारो लोगन के नया सिरजन आगा चलि के शायद एह अंतराल के भरे में मदद करी।)

: संदर्भ–सूची :

1. वशिष्ठमुनि ओझा, भोजपुरी कहानी : अपार संभावना के दुआरि पर : समकालीन भोजपुरी साहित्य : अंक–4 (कथा–विशेषांक) अप्रैल–जून 1997, पृ0 सं0 : 129।
2. पाती (बलिया) 'हमार पन्ना' में डॉ0 अशोक द्विवेदी, अंक–6, जून 1993, पृ0सं0 : 3।
3. हिंदी कहानी का विकास : सुमित प्रकाशन, अलोपी बाग, इलाहाबाद, पृ0सं0 : 45।
4. सेसर कहानी भोजपुरी के, पृ0सं0 : 190–197।
5. भोजपुरी कहानी हाल साल के, पृ0सं0 : 32–35।
6. समकालीन भोजपुरी साहित्य : अंक–4 (कथा–विशेषांक) अप्रैल–जून 1997, पृ0सं0 : 118–119।
7. भोजपुरी अकादमी पत्रिका, बरिस–1, दिसंबर 1978, अंक–1, पृ0सं0 : 26–29।
8. भोजपुरी माटी, वर्ष–30, अंक–3–4, अप्रैल 2007, पृ0सं0 : 89।
9. उहे, वर्ष–1, अंक–2, मार्च 2011, पृ0सं0 : 27।
10. उहे, वर्ष–1, अंक–9, दिसंबर 2011, पृ0सं0 : 18। ●●

11. उहे, वर्ष–1, अंक–11, फरवरी 2011, पृ0सं0 : 15।

12. उहे, वर्ष–1, अंक–7, नवंबर 2011, पृ0सं0 : 25।

13. उहे, वर्ष–1, अंक–1, फरवरी 2011, पृ0सं0 : 21।

14. समकालीन भोजपुरी कथा–साहित्य : स्वरूप, समस्या आ संभावना : सोच–विचार, लोग प्रकाशन, पटना–4, पृ0सं0 : 94।

15. ई आलेख समकालीन भोजपुरी साहित्य के तीन अंक, अंक–23, वर्ष–2006, अंक–25, वर्ष–2006 आ अंक–28,
वर्ष–2008 में क्रमशः छपल रहे।

16. डॉ0 अशोक द्विवेदी : पाती (हमार पन्ना), अंक–6, जून 1993।

17. पाती : अंक–4–47, मार्च 2004 में डॉ0 अशोक द्विवेदी के संपादकीय, पृ0सं0 : 3।

18. गांव के भीतर गांव, पृ0सं0 : 83–87।

19. अमर–कथा, पृ0सं0 : 119–127।

20. पाती, अंक–10, (दृश्य श्रव्य आ प्रिन्ट मीडिया पर केन्द्रित : 1994), पृ0सं0 : 27–38।

21. परिचर्चा : भोजपुरी कहानी से का चाहीं हमरा, समकालीन भोजपुरी साहित्य, अंक–14, पृ0सं0 : 153।

22. परिचर्चा : समकालीन भोजपुरी साहित्य, अंक–14, पृ0सं0 : 150–151।

23. परिचर्चा : भोजपुरी कहानी से का चाहीं हमरा, समकालीन भोजपुरी साहित्य, अंक–14, पृ0सं0 : 153।

24. श्रेष्ठ कहानी चयन खातिर जवना साहित्यकार लोग से बात कइल गइल रहे, ओमे शामिल बाड़ें– सर्वश्री गिरिजाशंकर राय 'गिरिजेश', प्रो0 ब्रजकिशोर, डॉ0 रामदेव शुक्ल, कृष्णानंद कृष्ण, भगवती प्रसाद द्विवेदी, बरमेश्वर सिंह, सुरेश कांटक, डॉ0 बलभद्र, डॉ0 जीतेन्द्र वर्मा, शुरू से खाली दसे कहानी के चयन के बात रहे, साहित्यकार लोग दसे कहानी के बतावल, बाकिर सबसे ताल–मेल बइठ सको आ कवनो नामित कहानी छूटऽ स मत – एह से कहानियन के घेरा पच्चीस तक कइल गइल। कुछ अइसनों कहानी एह सूची में शामिल कइल गइल बाड़ी स, जेकरा के कवनो साहित्यकार नामित ना कइले रहले, बाकिर ई कहानी कथ्य, तथ्य, शिल्प आ संवेदना तथा गहिर अंतर्दृष्टि के वजह से हमरा के मजबूर कइली स कि इहनी के सादर हम पच्चीस कहानियन के सूची में शामिल करीं। अइसने कहानी ह 'कजरौटा' जेकर लेखिका संजोगे वश भोजपुरी में लिखली (या अनूदित कइली ?)। साहित्यकार लोग से आपन कहानी ना नामित करे के अनुरोध कइल गइल रहे आ ऊ लोग सहर्ष अइसने कइल। डॉ0 बलभद्र भोजपुरी कहानियन पर काम कर रहल बाड़न, शेष साहित्यकार लोग भोजपुरी के अगिली पाँत के कहानीकार हवे लोग।

25. हंस, सितंबर 1992।

26. हंस, दिसंबर 1995।

●●

बाहुबली

❑ शशि प्रेमदेव

हे बाहुबली ! तहरे अइसन, हमनो के बँहियन में दम बा।
बाकिर तहरा पाले लाठी, भाला, बनूखि, गोली, बम बा।।

तहरे चरचा बा घरे–घरे !
बाजे सगरो डंका तहरे !
काहें ना जोम देखइबऽ तूँ–
तहरा पेसाब से दिया जरे !
–चउकी से लेके चउका तक, तहरे तऽ फहरत परचम बा !!

ऊपर से केतना निरमल तूँ !
भीतर कल–छल कऽ जंगल तूँ !
जग बूझे बाहुबली बाकिर–
हरमेस रहेलऽ चिहुँकल तूँ !
–जहँवे लउके झाड़ी–झूँटा, तूँ सोचेलऽ – बइठल जम बा !!

ईमान बचवले बानीं हम !
सम्मान बचवले बानीं हम !
ए कलजुग में इहे, एतने
सामान बचवले बानीं हम !
– अवगुन में आगे बाड़ऽ तूँ, बाकिर गुन तहरा में कम बा !!

हम झंझट के भरसक टालीं !
झूठो–मूठो ना अझुरालीं !
तूँ तिकड़म कऽ मेवा खालऽ–
हम जाँगर कऽ रोटी खालीं !
– पटरी ना बइठी हमनी में, ना तन सम बा, ना मन सम बा !!

बबुआ, बहुते पछितइबऽ तूँ !
आखिर एक दिन मरि जइबऽ तूँ !
माटी के देहि लरकि जाई–
सोचऽ, कइसे ढो पइबऽ तूँ ?
–पीठी तहरा लादल बोझा, कुकरम कऽ, भारी–भरकम बा !!

●●

रोटी ले बेसी तूँ खालऽ दवाई !

❑ **ओमजी 'प्रकाश'**

रंडी–पतुरिया का पाछा फुँकाई !
चोरी के पइसा तऽ मोरी में जाई !!

तिकड़म भिड़ा लिहलऽ, धनवो कमा लिहलऽ
मड़ई का जगहा तूँ, कोठी उठा लिहलऽ
नोकर आ चाकर क
गाड़ी आ मोटर क
दुअरा प' रेला बा
चमचन कऽ मेला बा
– बाकिर ना अँखिया में बाटे उँघाई !! चोरी कऽ...

भरली जवानी में, सइ गो बेमारी बा
नीमक से यारी ना, चीनी से यारी बा
सूगर दबावेला
बी0पी0 धिरावेला
जेवना परोसल बा
मुसकिल भकोसल बा
– रोटी से बेसी तूँ खालऽ दवाई !! चोरी कऽ...

तहरा ले लाख गुना, नीक बा करिमना
चोकर के लिट्टी, ना भाजी, ना तियना
टमटम चलावऽता
जाँगर डोलावऽता
कुंजी ना ताला बा
ठनठन गोपाला बा
– केहू का ओकर खजाना चोराई ?? चोरी कऽ...

●●

विदेशिया शैली क एगो गीत

❑ बृजमोहन प्रसाद 'अनाड़ी'

चढ़ली जवनिया में, गइल पुरइनियाऽ से,
जाड़वाऽ कँपावऽता, बदनिया, बलमुआऽ...
कवन रोजिगार होलाऽ, का बाटे मजूरी तहार,
करतारऽ, कवन, कमिनिया, बलमुआऽ....
फाटि गइल साया–सगरी, करुती हजार, छेद,
जइसे झाँझर, होखेली, चलनियां, बलमुआ !....
मारतारे तानाऽ मये, गँऊँवा, जवार, टोला,
नाँव धइले बाड़े, भीखइनियां बलमुआ....
डर इहे बाटे की, जमाना बेदरंग बाटे
मोहलसि ना, नू सवतिनिया बलमुआ....
नाहीं काम गहना, खँचोली भर रूपया के,
राखऽ एहबतिया के पनिया बलमुआ....
घरवाऽ 'अनारी' बिनाऽ, अइसन भकसावन लागे,
दुकल होखे जइसे, नगिनिया बलमुआ.... ●●

गंउँवाँ में ना लउके गउँवाँ

❑ हीरालाल 'हीरा'

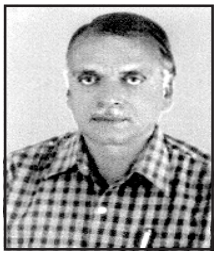

अब मुड़ेर ना कागा उचरे ना देला संदेस।
गौरइयो अँगना ना फुदुके, बदलि गइल परिवेस।

निमिया अमवाँ पाकड़ि सूखलि, सगरो बाग कटाइल,
नाँवे बरियरका लोगन के, ग्राम समाज लिखाइल,
गड़ही पोखर खेत हो गइल, चिरई छोड़ली देस !

अदिमी के अब डँसल देखिके, विषधर बा भकुआइल,
देखि कुकुरहो हमनी के, कुकुरो बाटे सरमाइल,
गीध चील्ह ले हारि मानि के चलि गइले परदेस !

सँझलवके सभ घर में घुसुरे, डरे ना झाँके बहरा
कदम–कदम पर धोखा इहवाँ, साँस–साँस पर पहरा
गउवाँ में गउवाँ ना लउके, बदलल भाषा भेस ! ●●

'आदमी बनल सैतान'

❑ शिवजी पाण्डेय 'रसराज'

छतिया से साटि जेके, दूधवा पियवनी,
उहे छीने मोर मुसुकान, चान बबुआ।।
खोदि–खोदि घाव देला, मारि–मारि हाड़ तूरे,
आदमी बनल सैतान, चान बबुआ।।
काटि–काटि फेड़–रूख, देत बाटे बड़ा दुख,
हर घरी करे अपमान, चान बबुआ।।
हवा–पानी नास करे, नस–नस बिख भरे,
एही में बघारऽ ताटे, सान चान बबुआ।।
गरदन काटऽ ताटे, बीता–बीता नापऽ ताटे,
खण्ड–खण्ड करे अरमान, चान बबुआ।।
मीठ–मीठ बोलऽ ताटे, रिस्ता–नाता जोरऽ ताटे,
करे लागी पाछे परेशान, चान बबुआ।।
अबो से सम्हरिजा तूँ, तहके चेतावऽतानी,
मानी नाहीं कुछु एहसान, चान बबुआ।।
एक दिन धावा बोली, बिख के पिटारा खोली,
हति दिही तहरो परान, चान बबुआ।।
मनवा सँकाइल बाटे, भितरे डेराइल बाटे,
लागे मोरा कठिन बिहान, चान बबुआ।।

●●

एह अंक के रचनाकार -

आनन्द सन्धिदूत, पदारथ लाल के गली, वासलीगंज, मिर्जापुर (उ0प्र0)। **रामेश्वर प्रसाद वर्मा**, अधिवक्ता, बक्सर (बिहार)। **भगवती प्रसाद द्विवेदी,** पो0बा0 115, पटना 800001 (बिहार)। **डा0 रमाशंकर श्रीवास्तव,** आर–7 वाणी बिहार, उत्तम नगर, नई दिल्ली–59 । **रामेश्वर प्रसाद सिनहा**, शंकर भवन, सिविल लाइन्स, बक्सर (बिहार)। **भोला प्रसाद आग्नेय,** टैगोरनगर रघुनाथपुरी, सिविल लाइन्स, बलिया (उ0प्र0)। **शशि प्रेमदेव,** कुँवर सिंह इण्टर कालेज, बलिया। **ओऽम जी 'प्रकाश'** गवर्नमेन्ट मिडिल स्कूल, मेबो वाया पासीघाट, ईस्ट सियांग (अरूणांचल प्रदेश)। **बृजमोहन प्रसाद 'अनाड़ी',** सुखपुरा–बलिया। **शिवजी पाण्डेय 'रसराज',** ग्राम व पो0 मैरीटार, बलिया (उ0प्र0)। **डा0 आशारानी लाल**, 823, टाइप–4, लक्ष्मीबाई नगर, नई दिल्ली–23। **विष्णुदेव तिवारी,** तिवारीपुर, दहिबर, बक्सर (बिहार)। **डा0 अरुण मोहन 'भारवि'**, हिन्दी विभागाध्यक्ष पी0सी0 कालेज, बक्सर (बिहार) 802102। **सान्त्वना,** शोधाछात्रा, जे0एन0यू0, नई दिल्ली। **रामनवल मिश्र,** डुमरी (मिश्र), पो0–विशुनपुरा, वाया–बरहीं, जिला–गोरखपुर (उ0प्र0)। **राजगुप्त,** राज साड़ी घर, बलिया (उ0प्र0)।

यात्रा–वृत्तान्त

बदरी-धाम

❑ डा0 आशारानी लाल

चुहानी में अबे खयका बनवते रहनी कि फोनवा बाजे लागल, पिसाने के हाथे हाली–हाली ओके उठवनी–तले चार–पाँच बेर ले बाज गइल। मन त झोंझिया गइल कि रामोजी के बोलावा से बढ़ के ई हो गइल बा। कबो कवनो बेरा केहू कुछउ करत रहो, ई बाज–बाज के बोलावे लागेला। फोनवे पर कहनी कि– 'के हऽरे' कि काने में गोंजियाइल– माई रे – गोड़ लागतानी। कहिया तूँ इहाँ आवतारे। कहनी – 'आँय'। तले फेरू पुछलन कि तूँ चउबीस ले एइजा पहुँचतारे। तऽ ई बताउ कि – ओह दिने त तूँ थकले रहबे कि कहीं चल सकेले। 'कँहवाँ ए बबुआ' ? विचार होता कि ओही दिने साँझ के हमनी के इहाँ से चलके राती में हरिद्वार पहुँचल जाव आ उहाँ तीन–चार घंटा ले रहिके, फिर बदरीनाथ चल दिहल जाव। तऽ का कहऽतारे अइसहीं आपन तइयारी हम करीं।

अरे ए बचवा हम ना थाकब।

हमरा के बदरीबाबा बुझाता कि बोलवले बाड़न। तूं चलऽ। ऊ पहाड़े पर रहेलन तऽ तनी हमार हथवा तूँ पकड़ लीहऽ। हमहूँ चल चलब। ओइजा निहोरा करब कि ए बाबा हमरा बचवन के नीके सुखे बनवले रहीं।

अबे इहे कुल कहते रहीं कि का जाने कब ऊ फोनवा काट देलन कि रख दिहलन। अब हमार पेट फूले लागल। भीतरे–भीतरे, मने–मने लावा फूटे लागल। गोड़वा भुइंया परते ना रहे। धउरल चउका में गइनी, तऽ बुझइबे ना करे कि का करीं। कुल इयाद भुला गइल। रास्ता में खाए खातिर नून, अजवाइन आ मंगरइल डाल के पूरी बनवतीं – तऽ इयादे ना परे कि कवना डिब्बा में ई कुल धइले बानी। इहाँ ले कि नूनवा आ चिनियों में फरक ना बुझात रहे। केतनो अपना के सहेजत रहीं, ई मन आँवक में अवते ना रहे। केहू तरे गिरत–परत उठत–बइठत रेलगाड़ी से बबुआ लगे पँहुचिए गइलीं आ कहलीं कि चल नऽ कब चले के बा ?

ई सुन के कि ऊहाँ पहुँचे में दू दिन लाग जाई, हमार मन तनिको मुरझाइल ना। ई तऽ जानते रहीं कि दिल्लिए से मोटरगाड़ी में बइठा के बबुआ ले जइहन। ढेर चढ़े उतरे के ना परी। सही में हरिद्वार हमनी के चारे घन्टा में पहुँच गइनी जा आ अब बुझाइल कि साँचो बदरीनाथ जात बानी। हरिद्वारे से गंगाजी के लमहर लमहर घाट लउके लागल। घाट पर नहाये वालन के भीड़, तऽ गजबे रहे। जय गंगा माई–जय गंगा माई सभे कहत रहे। उहाँ बहुते कार आ बस खड़ा रहे। उहें से सब लोग बस में भर–भरके पहाड़े पर तिरथ करे जाला। ऊँहँवां जेके 'हरके पौड़ी' कहल जाला, ऊ त लागे कि गंगाजी के बीचे में बनल बा। उहें गंगा माई के मंदिरो रहे, जहाँ जाएवाला सब पुजारिए लउके।

भगीरथ बाबा अपना घनघोर तप से गंगा माई के एह धरती पर बोलवलन। एह तप में केतना जोर रहे– ई बात गंगा माई के कलकल–छलछल करते हड़हड़ा के धरती पर उतरत पानिए बतावत रहे। ओह पानी के उजर–उजर फेन जवन दूधवो के मात देत रहे, देख के त तनी देर खातिर हमरो भुला गइल कि उहाँ से आगहूँ जाए के बा। हम त अपन लुगा के अँचरा पसार के गंगा माई के गोड़ लाग–लाग के अपना बचवन के खुशी उनका से माँगत रहीं, कि बबुआ झकझोर के कहलन– 'ए माई ठीक से बइठ ना' अब आगे चलल जाव। गाड़ी चलल बाकिर

हमरा बुझाइल कि हमार मनवा ओहिजा भुला गइल बा, आ खाली देहिए आगे चलल जाता।

आँखी के सोझा ऊ ऋषिकेश के रास्ता जेमें लागे कि गंगा मइया गड़िया के साथे–साथे चलत बाड़ी। एक ओरी सड़क रहे आ एक ओरी गंगा माई। जब उहाँ से आगे बढ़ल गइल त माई ना लउकँस, खाली पहाड़े के चढ़ाई लउके लागल, बाकी ऊ माई जवन अँखिया में समा गइल रही बहरा ना भइली। जगहे–जगह उनही के ध ाार बहत रहे। थोरही देर खातिर ई माई अलोत हो गइली बाकी फेरू सोझे लउके लागँस। हम इहे सोचत रहीं कि माई के पानी केतना तरल आ नरम बा, आ ई पहाड़ के पत्थर केतना कड़ेर बा – दुनू के ई कइसन नाता बा कि लमहरे से माई जेने चलत रही ओने ओने पत्थरो लउके लागता। माई के राहे में ई पहाड़ के पत्थर आके चाहे कि उनकर गोड़वा छान लेव–बाकी काहेला ऊ केहू के आवक में आँवस। ऊ त चलते चलल जाँस–तिरहे–मिरहे, टेढ़े–मेढ़े होके निकलिए जाँस। जइसे जइसे गंगा मइया टेढ़े–मेढ़े चलत रही ओसहीं हमनी के गाड़ियों चलत रहे। गड़िया के एह ओरी ऊँचका–उँचका पहाड़ लउके त दूसरा ओरी गहिर से गहिर गंगा माई। अइसन लागे कि हरिद्वारे से ई माई हमनी के साथही चल रहल बाड़ी। जइसे माई अपना बचवन के ना छोड़ेले ओसही धाम करे जाये वाला केहू के साथ गंगा माई ना छोड़त रही।

एक ओरी पहाड़ के ऊँचाई त दूसरा ओरी गंगा के गहिराई। दूनो अथाह रहे। दूनो अपना–अपना ऊँचाई आ गहिराई के एक दूसरा के सोझा सीना तान के आ करेजा फाड़के धऽ देहले रहे। पहड़वा कहे कि हम ऊँच त नदिया कहे कि हम गहीर, केहू के थाह केहू ना पावे। इहे लीला देखते–देखते जब हमनी के गाड़ी आगे बढ़े लागल त का लउकल कि एगो पहाड़ पर से दूसरा पहाड़ पर जाए खातिर ओपर पूलो बनल रहे, जवना पर गड़िया चढ़के नदियों के फान जात रहे। इहे नाही कबो पुल त कबो पहड़वा के गोलाई में घुमरावत–घुमरावत गड़िया आगे बढ़त चलल जाय, तबो गंगाजी सब ओरी लउकबे करँस। ऊ बदरीबाबा लगे जाये वाला सब लोगिन के साथे–साथे चलत रही।

पहाड़ आ गंगा माई के निहारते–निहारते हमनी के जहाँ पहुँचनी जाँ ओके देव–प्रयाग कहल जात रहे। लोग ओके संगमो कहे। **ऊँहाँ अलकनन्दा आ भागीरथी जी एक दूसरा के भेंटत रहीजा, एहसे ऊ संगम बन गइल रहे। इहाँ ई दुनू बहिना लोगिन के नेह–छोह देखते बनत रहे। धऽधाके ई लोग एक दूसरा के अँकवारी में धके अह्क–अह्क के चिल्ला–चिल्ला के आ गा–गाके रोवत आ भेंटत रहे। अइसन बुझात रहे कि दुनू बहिना लोग एक जुग के बाद मिलल बा, तबे एतना चिचियात बा आ राग धके भेंटत बा।**

देवप्रयाग से कुछ दूर अवरी गइला पर रूद्र–प्रयाग आइल, त पता चलल कि इहाँ मन्दाकिनी आ अलकनन्दा जी के मिलान भइल बा। एह राहे में गंगा माई अपना बहिना लोगिन के गले मिलके अँकवार भेंट करत चलत रही बाकी हमरा त खाली उहे लउकत रही। हम सबके गंगे माई कहत रहीं। ई अलकनन्दा, भगीरथी, मन्दाकिनी कुल्ही बहिना लोग त पियरे–पियर सड़िया पेन्हले रहे त जब ऊ लोग एक दूसरा के भेंटे लागे त बुझइबे ना करे न चिन्हाते रहे। एही से हमरा खाली गंगा माइए लउकँस। ई बहिना लोग जहाँ भेंट के रोवे–सिसके लागे तऽ उहाँ आँसू के जोर–जोर से बौछार होखे लागत रहे।

रूद्र प्रयाग में अइला पर हम जनलीं कि इहाँ से दूगो राह निकलेला–एगो केदारनाथ बाबा किहाँ जाला तऽ दुसरका बदरीनाथ बाबा ओरी। जवन पहिले केदार नाथ बाबा ओरी जाला ऊ मंदाकिनी बहिना के तीरे–तीरे चले

लागेला आ दुसरका रहवा रूद्र–प्रयाग, कर्ण प्रयाग आ विष्णु–प्रयाग ओरी होते चल देला।

बदरी बाबा के राहे में चलते–चलते ई त बुझाइए गइल कि एह धरतिए पर स्वर्ग बा, चाहे जेतना देवता आ ऋषी–मुनी लोग रहे कुल्ही लोगवा त एही जगहियन पर बइठ के अपन तप पूरा कइले बा। ब्रह्मा, विष्णु आ महेश के घर एही हिमालय पहाड़ पर रहे। नारद भगवान त दिन–रात एह देवता ऋषी लोगिन के घरहीं धावत रहत रहन। जेतना अपन ऋषी–मुनी लोग रहे, ओही लोग के नाँव पर इहाँ के जगहि के नाँव पड़ल बा। जइसे बशिष्ठ, कश्यप, अत्रि, जमदग्नि, गौतम, विश्वामित्र, अगस्त ई सभ ऋषी लोग इहें आके एही पहाड़ के गुफा में बइठ के अपन तपस्या करत रहत रहे – इहे बात भइल कि सभ लोगिन से भेंट मुलाकात करते आ बोलते बतियवते गंगा माई एह धरती पर अइली। भेंटे करेके चलते गंगा जी के ई पहाड़ बड़ा घुमरावे के पड़ल रहे। कहीं देवता लोग त कहीं ऋषी लोग सबसे ऊ बतियवते चलत रही। उहाँ देव प्रयाग में त लोग बतावत रहे कि रामोजी अलकनन्दा आ भगीरथी के तीरे उनसे भेंट करे आइल रहन। सहिए में बदरी बाबा किहाँ जायेवाला ई लमहर रहिया के धूरियो देवता लोग के रहला से चन्दन बन गइल रहे। ऊहाँ के नदी–पहाड़, फेड़–रूख, झाड़–झंखाड़, जुंगल–वन कुल्ही से चन्दने आ केसर के बास निकलत रहे, काहे कि चारो ओरी गंगाजी अपन अंचरा झटकार–झटकार के इत्र छींटत चलत रही।

एह पहाड़ के लीला अपरम्पार लउकत रहे। ओह राह में कवनो एगो दुगो त पहाड़ रहे नाहीं–ऊ गिनला मान के रहबे ना कइल। जइसे बुझाय कि ई पहाड़न के एगो गाँवे बसल बा। एगो पहाड़ पर अबे चलते रहीं जा कि दुसरका पहाड़ पर के रास्ता लउके लगे, जेपर खाली कार, जीप, बस कुल चलते नजर आवत रहे। कहीं एह गड़ियन के कतार उपर लउके त कहीं नीचे। बात ई रहे कि एह कुल पहड़वन के हमनी का ओसही घुमरावत रहीं जा जइसे कवनो मन्दिर आ देवता के परिक्रमा करीलाँ जा। एह पहाड़न के घरे में एक से एक खजाना लउकत रहे। कहीं कहीं त अपन मुँह निहारे खातिर ई पहाड़ लोग शीशा नियर चमकत पत्थरे के शीश बना लेले रहे–जेके स्फटिक के पत्थर कहा जाला। इहे नाहीं ओह पहाड़ लोग के घरे में पानियों के कमी ना रहे। जगहे–जगहे पत्थर फोड़ के सोता बहत रहे। ओह बइसाख के महिना में ऊ पानी त अइसन ठंढा रहे कि सब पिये वालन के हृदया जुड़ा जात रहे। लागत रहे कि पहाड़ पर के पूरा बर्फ सोता के पानी बन के गंगा माई के गोदी में आराम करे खातिर दउड़ लगावत रहे। एह पहाड़ पर के जीव जन्तु, साधु–महात्मा आ राही लोग के खूब न राजा हिमालय खाये–पीए के खैरात लुटावत रहत रहन। आपन फल–मूल खाए खातिर देत रहन त सोता के ठंढ़ा पानी पीए के। एसे बेसी कवनो जीव के का चाँहीं। खाए–पीए के देबहीं वाला न राजा कहाला आ इहे राज–पाठ के धरमो होला। एतना बड़हन पुन्न जब हिमालय बाबा कइनी तबे न गंगा माई नियर बेटी पवनी।

गंगा अपन लइकाईं ओही हिमालय राजा घरे बितवली। एही पहाड़ पर गंगाजी खूब घूम–घूम के धउर–ध ाउरके–अंखमुदउवल, लुका–छिपी आ ओल्हा–पाती खेलले रही। अपना माई–बाप के घरे में त लइकवन के कईगो नाँव होइबे करेला, ओसही एह गंगोजी के उनका नइहर में हम कइगो नाँव सुनलीं आ देखलीं – जइसे मन्दाकिनी, अलकनन्दिनी, भगीरथी, जान्हवी आ अवरियो कइगो। इहे कुल नउवाँ न कबो–कबो अपना नइहरो के इयाद दियावत रहेला। गंगा माई के नइहर बड़ा भरल–पूरल लउकत रहे। चारों ओरी ठंढ़ई, गुन्जन, कलरव आ छितराइल हरियरी इहे लउकत रहे।

गंगा जी के नइहर के भिनुसार त गजबे के लउकल। ऊहाँ जवन उज्जर बरफ पहाड़ पर जमल दिन में लउकेला ऊ भोर होते लाल हो जाला आ लागेला कि चारों ओरी लाल–लाल पहाड़

सजावल बा। थोरहीं देर में चारों ओरी पीयर–पीयर सोना बिछ जाला, फेरू ऊ चाँनी बन जाला। जेकर जेतना मन चाहे लाल उठावे चाहे सोना चाँनी बटोर ले। ई माई के नइहर बा जहाँ धन–दउलत बिछा दिहल जाला। भोरहीं भोरे खूब सोना–चाँनी लुटावल जाला। अबे सब धने–दउलत के देखे में मगन रहेला, तले कुल्ही गाँछ बीरिछ अपन फर–फूल भोर होतहीं भुइयाँ बीछा देला कि उहो सब लोग बटोर लेव। धन–दउलत देख के आ फल–मूल खाके औरी ना तऽ ठंढ़ा पानी पीके राही लोग जुड़ा जाला। ई कुल देख के आ जीभर सबकुछ लूट के हमरा त बुझाइल कि हम अपना बुढ़ापो के भुला गइल बानी। कुछु देखे सुने में हम थाकत रहबे ना कइलीं। गंगा माई के नइहर के ई कुल लीला देखते हमनी के आगे बढ़त चल दिहलीं जाँ। हमनी के अपना मन के झोरी में उहाँ के राजा हिमालय के घर के केतनो दउलत भर लिहलीं जाँ बाकी तबो संतोष ना होत रहे। हिमालय राजा के राज आ गंगा माई के महिमा निहारते निहारते हमनी के गाड़ी जोशी–मठ पहुँच गइल।

ई जोशी–मठ का हऽ– त लोग कहेला कि बदरी बाबा जाड़ा के दिन में इहें आके छव महिना ले रहिलाँ – यानी इहो बदरी बाबा के एगो ठहराव बा। इहाँ शंकराचार्य जी के पहाड़ में एगो घर बनल बा। इहे शंकराचार्य भगवान अपना तप के बले बदरी–बाबा के कुन्ड से बाहर निकलले रहन। शंकराचार्य जी इहें रहि के आ तपस्या कके कईगो किताब लिखले रहीं जेके वेद–पुराण कहल जाला। बदरीनाथ जायेवाला सब भक्त लोग इहाँ एक बेर रूकेला आ एह पवित्र धाम के दरसन घूम–घूम के करेला। जोशी मठ से बदरी बाबा किहाँ जाए वाला रास्ता बड़ा पातर रहे एही से ओइजा से एके बेरी सब उहाँ जा ना सकत रहे। बेरी–बेरी लाइन बना के बाबा घरे जाए के अनुमती मिलत रहे। ओह रास्ता में एक बेरी एकेगो गाड़ी चली चाहे एने से चाहे ओने से। हमनियों के ओही कतार में लाग के चले लगलीं जा त डेढ़ घन्टा में बाबा घरे पहुँच गइलीं जाँ।

बदरी बाबा घरे पहुँचते हम लगलीं चारों ओरी निहारे आ कहे– जय बदरीबाबा रउवा केने बइठल बानीं– 'अब त हम आइए गइनी रउवा लगे' कहते हम गाड़ी से उतरलीं। घर से चलत रहीं त सोचत रहीं कि पहाड़ पर चलब कइसे, बाकी एइजा अवते हमरा कहँवा के बल आ गइल कि बचवा कहलन कि– धीरे धीरे चलऽ माई, ई पहाड़ी रास्ता बा उबड़–खाबड़ बा, कंकड़–पाथर बा–तू गिर जइबू।

बदरी विशाल मंदिर के जे सबसे बड़ पुजारी होला ओके रावल जी कहला जाला। बाबू के मदद से हमार भेंट रावलजी से भ गइल, त हम उनका गोड़ लगे गिर के लगलीं रोवे। काहे रोवलीं ई हमरो ना बुझाइल। रावल जी बाल ब्रह्मचारी होलन। पुजारी जी के चेहरा बड़ा चमकत रहे जवन आजो हमरा सोझा लउकत रहेला। हम रोवत रहीं त ऊ हँसत रहन। पुछलन कि बात का बा–एह पर हमरा मुँह से बोलीए ना निकसल। तब रावल जी हमके बाबा के दरसन करे के आदेश दिंहली आ कहलीं कि सुदामो जी ना बतवले रहन कि काहे खातिर ऊ द्वारिकापुरी गइल बानऽ, तबो उनके सबकुछ भेंटा गइल, जवन उनका चाहत रहे। बदरी बाबा के दरसने से सब प्राप्ति हो जाला इहे बुझाइल। मन के बड़ा संतोष भेंटाइल आ उहाँ से उठ के जाके गरम सोता में हमनियो के नहइलीजाँ 'जय हो बाबा बदरी विशाल के मने–मने गोहरावत। उहाँ चना के दाल, फरूही, मेवा मिश्री के परसाद बिकात रहे आ तुलसी जी के माला खूब मिलत रहे–हमनियों के इहे एब कीन–खरीद लिहलीं जा आ तब जाके कतार में खाढ़ हो गइलीं सभे। ओह कतार में केहू धनी आ गरीब ना रहे, केहू बड़ आ छोट ना रहे, नऽ तऽ केहू ऊँच आ नीच रहे। सब बाबा के दरसन करे गइल रहे भिखारी बनके।'

सांझ के बेरा रहे, कतार धीरे–धीरे बाबा के अंगना में सरके लागल, काहे कि सब उनकर आरती देखल

चाहत रहे। बदरी बाबा घरे कइगो आरती होला, जेके सोना के आरती, चानी के आरती आ ताँबा के आरती त एगो सादा आरती। बाबू के लगे आरती के टीकट रहे त हमनी के सोना के आरती में भीतर जाए के मोका मिल गइल।

मंदिर के भीतर बाबा के दरबार लागल रहे। बाबा के रंग करिया लउकल जेमें आँखे खाली पीयर–पीयर लउकत रहे। उहाँ के भर देहें कपड़ा आ तुलसी के माला पहिनले रहीं जेमे हीरा–मोती आ जवाहिर लड़ल रहे। बाबा ई कुल पहिन ओढ़ के बइठल रहीं आ सबके टुकुर–टुकुर ताकत रहीं। उनका एक बगल कुबेर जी आ गनेश जी रहीं त बायां ओरी लछिमियों जी बइठल रही आ नर आ नारायन के साथे नारदो बाबा ओइजा खड़ा रहीं। बड़ा सुन्दर आ मनभावन ई भगवान के दरबार लउकत रहे–जहाँ सब पंडिजी लोग मिलके आरती उतारत रहे। एही दरबार में रावलजी जे इहाँ के पुजारी रहीं हाथे में एगो लमहर सोना के सोटा लेले ठाढ़ रहीं।

देखे में आइल कि बदरी विशाल के एह मंदिर के नीचे से अलकनन्दा जी बहत रही। उहें उनकर पक्का घाट बनल रहे आ दूगो पहाड़न के बीच में एगो पूलों बनावल गइल रहे। बाबा के मंदिर के ऊपर सोना के कलस धइल रहे। हमनी के राती में उहें रूकलीं जा तब फेरू तीन बजे रात के उठ के फिर बाबा के सिंगार आ महाभिषेक देखे के मोका मिलल। **महाभिषेक करत घरी भगवान के सोना–चाँनी के बरतन में दूध, दही, मधु, अमृत आ गंगाजल से नहवावल गइल आ केसर आ चन्दन लगावल गइल। फिर सब देवता लोग नया कपड़ा पहिनल तब फूल आ तुलसी के माला से उनकर सिंगार कइल गइल। तब आरती भइल। देखे में ई सब इहे कहब कि भाग से मिलल रहे। जइसे गूँगा गुड़ के सवाद ना बता पावेला ओसहीं हम ओह सब बात के बरनन नइखीं कर पावत।**

मन त ऊहाँ से आवे के नाहिए करत रहे, बाकी लौटे के त रहबे कइल तऽ फिर जोशी मठ लवट के आ गइनी जा। लवटत के रास्ता में पहाड़ पर के बरखा देखे के मिलल जहाँ हवा एतना तेज रहे कि फेड़न के पुलईं धरती के बार–बार छुए लागे। बड़ा भय लागे ऊ बरखा देख के। बरखा जल्दिए बन्द हो गइल त हमनी के ओही दिने दस बजे रात ले हरिद्वार पहुँच अइनी जा। ई हरिद्वार साँचे न भगवान लगे जाए के दुआर बा सबका बुझा गइल। राती ऊहें के एगो धर्मशाला में सुतल गइल त लागे कि सुतलो में गंगाजी लउकतारी। ई गंगा जी पहाड़े से उतर के हमनी के साथे–साथे जमीन ले एह हरिद्वार में अइली तब लागल कि थिरा के सोचे लगली। गंगा जी माइए न रही जे बदरी बाबा के लगे से उनकर चरनया धोके अपना संगे ले–ले रही आ सगरो दुनिया जहान के उहे परसादी बाँटत रही। एह चरनामृत के सब लोग बोतल आ डिब्बा में भर–भर के अपना घरे ले जाला।

हरिद्वार में धर्मशाला में एक जानी हमके मिलली त इहो बतवली कि बड़ा अच्छा कइलीं हँ कि रउवा बदरीधाम गइल रहलीं हँ। जानऽ तानी कि ना –

जे जाला बदरी, कबो ना आवे ओदरी।
अगर आवे ओदरी, कबो ना होखे दलिदरी।।

ई बात सुनते हम सोचलीं कि वाह रे बाबा के महिमा जवन बिना मंगले हमनी के भेंटा गइल बा आ तबे रावल जी के बतिया हमार इयाद आ गइल कि – सुदामा जी कुछो मँगले ना रहन। बे मँगले उनके सब कुछ मिल गइल।

जै हो बाबा बदरी बिशाल...

●●

कसौटी

[एक] जिनगी के बहुत करीब के कथा : 'अमर-कथा'

❑ डॉ0 अरुण मोहन भारवि

'अमर–कथा' (भोजपुरी कहानी संग्रह) : **बरमेश्वर सिंह** : भोजपुरी संस्थान, पटना, मूल्य ₹ 150, संस्करण : 2012।

'अमर–कथा' बरमेश्वर सिंह के 2001 से 2011 तक के बीच विभिन्न पत्र–पत्रिकन में प्रकाशित कहानियन के संग्रह हवे। भूमिका लेखक विष्णुदेव तिवारी का नजर में बरमेश्वर सिंह मध्यम मार्ग अपनावत, आम आदमी के राह पर, आम आदमी के सरोकार के बात कइले बाड़े। लेखक के 'आपन बात/हम आ हमार कहानी' में ओकर क्षोभ आ पीड़ा दूनो प्रगट हो जात बा, जब ऊ भोजपुरी में सतही समीक्षा लेखन आ 'यश चबावन प्रवृत्ति' के बयान करत बा।

संग्रह के पहिलकी कहानी 'इस्तिंजा के ढेला' हऽ, जेकर माने होला मुस्लिम रेवाज में पेशाब कइला के बाद, पानी ना मिलला पर, शुद्धि खातिर ढेला के उपयोग कइ के, बाद में फेंकाइ जाला। कहानी में औरत मरदन द्वारा आपन उपभोग हवस भा वासना पूरा करे वाली चीज बिया। ऊ मरद के जीवनसंगिनी, सुख–दुख के साथी नइखे, बलुक खाली भोग के, चीज बिया आ सेकरा बाद ओकर स्थिति जूठ पत्तल भा फाटल–पुरान जूती के हो जाला। कहानी में धर्मांध मरद के मानसिकता आ नारी जाति के भयावह हालात के बखान भइल बा, जवन रोवाँ खाड़ कर देता। पुरुष मानसिकता के रेखांकन फिरोज में देखेके के मिलऽ ता, बइसाखी के सहारे चले वाला अपाहिज खालू में मिलता, जे तलाक के मारल आपन भतीजी शौकत जहाँ के देखि के लार टपकावता ओकरा से निकाह करे के धिन बरेवाला बात, आपन बकील बीबी खाला से कहता। शरीयत के खिलाफ शौकत जहाँ के ताल ठोक के खड़ा होते फिजा बदलता। कहानी के अंत 'ढेर दिन के बाद आज शहर में बिजुली आइल बा। सड़क पर अंजोर छितराइल बा' से होता, जे एगो नया भोर के गवाह बने के संकेत देता।

संग्रह के अधिकांश कहानी गँवई जिनगी के जियतार बखान करतिया। 'दुखदेवन बहू' में नायिका के मिलनसार आ सबका सुख–दुख में अगहर रहला के बखान देखते बनता, बाकिर उहो नान्ह जाति, गँवार आ निरक्षर भइला के कारण मुखिया के भ्रष्टाचार के शिकार बनि के आपन जमा–पूंजी बुढ़ापा के पिनसिन पवला के झांसा में लुटवा देत बिया। ई कहानी पंचाइतीराज के भ्रष्टाचार के नया अध्याय लिखत बिया, जेकरा खातिर बरमेश्वर सिंह बधाई के पात्र बानीं। असहीं 'जोजना' कहानी में मुसहरन के दू–दू हजार रुपया के बदले दू–दू सइ दिआवे के, मुखिया से लेके दारोगा, बी0डी0ओ0, बैंक मैनेजर सबका सउनइला के मजगर बखान भइल बा, आ गरीबन–नान्हन के हकमारी के उजागर करता। 'हैलो कामरेड' आ 'पोस्टकार्ड' में व्यंग्य के धार मनई के चिउंटी काटल नीन से जगावता। 'कामरेड' में साम्यवादी विचारधारा के मुर्दघटिया खड़ा देखा के अमेरिकी साम्राज्यवाद आ पूंजीवाद के बढंती का ओर इसारा कइल गइल बा ओहिजे 'पोस्टकार्ड' में लेखक बाजारवाद के ओह दिन के कल्पना कइले बा जब भ्रष्टाचार संस्थागत स्वरूप धइ ली आ बाजारबाद से आम लोगन के जियल मोहाल हो जाई। 'सूत्रधार' कहानी में कहानीकार बाबू जोधा सिंह के तिकड़मी शतरंजी चाल में फँस के महापातर जमादार पांडे द्वारा आपन घर–दुआर सबकुछ गँववला के कहानी बा। कहानी में गंवई जिनगी में सातिर तिकड़म रचेवाला वर्ग के जोधा सिंह के रूप में बेबाक, जियतार बखान भइल बा। असहीं 'मकड़जाल' में प्रगतिशील, वर्गवादी

आन्दोलन के जातिवादी दलदल में फँसला, साम्यवादी विचारधारा के निछावर ईमानदार कामरेड बासुदेव सिंह के चरित्र के मूल्यांकन जातिवाद के धरती पर अझुरइला के बेबाक चित्रण भइल बा, जवन साम्यवाद आ वर्गवादी आंदोलन के बेमौत मौत के कहानी कहऽता।

'तस्वीर साफ बा' में गँवई भाईचारा, सरोकार, आत्मीयता आ प्रेम व्यवहार पर जातिवादी पांकी के दलदल में सउनइला के दागदार–चेहरा उजागर भइल बा। गँवई जिनगी के साफ–साफ तस्वीर खींचे में कहानीकार के महारत हासिल बा। 'इहे साँच बा' में देशभक्ति पर रोटी आ अनुदान राशि के मार के दर्दनाक आ लाद खखोरू तस्वीर खींचल गईल बा, जेकरा खातिर कहानीकार के जतना सराहल जाव कम होई। 'पूरक बजट' में सरकारी कर्मचारी सिन्हा जी के बेटी श्यामली पर सड़क छाप नेता के बेटा बंटी के मानसिक, आर्थिक, शारीरिक शोषण के कहानी के माध्यम से मिडिया में एह घरी के पँवरत नेता अपराधी गँठजोड़ के दागदार चेहरा के उजागर करता। एह कहानी में बाप के खीझ पर लाचारी के धूरि पड़ जाता, जवन बाप भा भाई के गुस्सा के परशुराम बने से रोक के हिजड़ा बना देता। ई कहानी पढ़ि के कंचनबाला आ गीतिका शर्मा के घटना टटका हो जाता। 'चरित्र' कहानी में सामंत–पुरोहित गँठजोड़, गँवई जिनगी के भाईचारा पर सवालिया निशान लगावता। रामबदन अस लम्पट, कामुक के धोती खुलला के बादो पुरोहित के मदद खातिर आगे आइल त समझ में आवता बाकिर राम भरोसा, ओकर बीबी रामरतिया के जे रामबदन अस लुच्चा के धोती खोल देतिया आ इन्द्री काटे खातिर हँसुआ ले तइयार बिया ओकरा भा ओकरा जाति–जमात के मुखिया के सोझा दुबक के सटकल समझ में नइखे आवत। ए कहानी में रामभरोस–रामरतिया के खीझ आ आक्रोश पाठकन के प्रेमचंद के युग में खिंच ले जाता, जबकि आज के गंवई जिनिगी के जागरूकता बहुत आगे निकल गइल बा। एह कहानी में आज के ग्रामीण जिनगी के बिद्रोही तेवर के घोर अभाव अखरता। आज त गाँवन में नान्ह जाति आ वर्ग के एकता आ आक्रोश अतना अधिका बा जेकरा सोझा बड़–दबंग सामंतन के जान के लाला पड़ जाता। गाँवन के अइसने घटना नक्सलवाद के पैदा करता, जेकरा सोझा दबंग सामंतो अलचार बाड़न।

संग्रह के आखिरी कहानी 'अमर–कथा' ह जवन नकली स्वतंत्रता सेनानी के शव–यात्रा से जुड़ल बा। सचहूँ ई कतना अजीब बात बा कि देश के असली–स्वतंत्रता सेनानी जहाँ रोग–शोक आ दवा–दारू के अभाव में धुसुकुरिया काटत जिनगी जीये के मजबूर बाड़न, ओहिजे नकली लोग जिनगी के मजा लूटत, माल चाभत, दाम बटोरत, सोहरत सरपोटत जी रहल बाड़न। ई कहानी देश के आजादी पर, सरकार के नीयत आ नियति पर सवाल खड़ा करता, जवना भ्रष्टाचार का ओर अन्ना हजारे के आंदोलन इसारा करता।

कवनो दमगर, मजगर, रसगर, सफल कहानी के सबसे बड़ खासियत ई होला कि पाठक खुश होखे भा दुखी, ऊ पाठकन के एगो नया दुनिया में पहुँचा देले, जवन एकदम अलग होला, बाकिर तबो ऊ पाठकन के अपना जिनगी के बहुत करीब बुझाला। एह कसौटी पर बरमेश्वर सिंह के 'अमर–कथा' सफल रचना कहल जाई, जवना में आज के गँवई जिनगी के अत्याचार, लम्पटई, भ्रष्टाचार, व्यभिचार, शोषण के दागदार चेहरा के उजागर करे में कथाकार के जोरदार सफलता मिलल बा। उम्मीद बा, पाठकन द्वारा एकर मजगर स्वागत होई। किताब भोजपुरी कहानी में दम खोजे वालन के निराश ना करी, हँ सोचे खातिर मजबूर जरूर करी !

●●

[दू] लोकधर्मी काव्य-परिपाटीके समृद्ध कविता संग्रह : ''सूखि गइल नेह कऽ नदी''

❑ सान्त्वना

सन्दर्भ– **''सूखि गइल नेह कऽ नदी''** (काव्य–संग्रह) कवि– **पं0 राम नवल मिश्र**, प्रकाशक– सुधा संस्मृति संस्थान, बशारतपुर, गोरखपुर। मूल्य रु0 100/– पहिल संस्करन 2012 पृ0 111 ।

भोजपुरी के वरिष्ठ कविता– संग्रह ''सूखि गइल नेह कऽ नदी'' उनका शुभचिन्तकन का लमहर अगोरिया आ सुप्रयास का बाद, उनका छियासी बरिस उमिर बितला का बाद प्रकाशित भइल त सुभाविक बा कि भोजपुरी के हरेक नेही लोगन के खुशी होई। बाकी उनकर कविता संग्रह अतना देरी से छपला का पाछा सबसे पहिल कारन ई बा कि भोजपुरी–साहित्य के प्रकाशन खातिर कवनो सबल प्रकाशन संस्था भा सहकारी प्रकाशन संस्था नइखे, ना छपल, साहित्य के कवनो प्रचार प्रसार बा ना विश्वसनीय बढ़िया लायब्रेरी बा।

हिन्दी अंग्रेजी लिखे पढ़े वाला भोजपुरियो लोग भोजपुरी के ना खतियावेला। भोजपुरी के अच्छा साहित्य के विक्रय खातिर कवनो 'नेटवर्क' भा सरकारी गैरसरकारी सहजोगो नइखे। मर्मी आलोचना आ मूल्यांकन त दूर, ओकरा प्रोत्साहन आ प्रसार खातिर कवनो ढंग क पक्षपात रहित मंचो नइखे। मिश्रजी पूर्वांचल का कवि–सम्मेलनन आ आकाशवानी–दूरदर्शन के चर्चित–सराहल कवि रहल बानी– ओहू में यशस्वी हिन्दी लेखक रामदरस मिश्र के बड़ भाई, तबो काव्य संग्रह अतना देरी से काहें ? कवि जी खुदे अपना ''आपन बाति'' में लिखले बानी कि ''ताबरतोर कवि–सम्मेलन के नेवता आवे लागल आ हम जगजगा गइनी। साथे–साथ आकाशवानी आ दूरदर्शन से भी कवितन के प्रसारण होखे लागल।'' चर्चा प्रोत्साहन, सराहना आ पूछ से जवन तृप्ति आ तोख कवि का मिलेले, ऊ चुपचाप अपना टेंट क पइसा खरच कऽ के संग्रह छपववला आ घूमि–घूमि बँटला मे कहाँ बा ?

काव्य–संग्रह देरी से आ एतना बढ़ियाँ से इहे छपल, बहुत बड़हन उपलब्धि बा भोजपुरी खातिर। साहित्य के तीन गो चर्चित विद्वान आ वरिष्ठ साहित्यकार के (डा0 रामदेव शुक्ल, डा0 विश्वनाथ प्रसाद तिवारी आ डा0 अरुणेश नीरन जी) नवल जी का एह काव्य–संग्रह के भूमिका एके साथ लिखि के, काव्य संग्रह क मान आ वजन बढ़वले बा। ई भोजपुरी का प्रति ओह लोगन का मन में छिपल लगाव आ प्रेम के परिचायक बा। एहसे भोजपुरी के अच्छा साहित्य के हिन्दी जगत में चर्चा में आवे के उमेद जागऽता !

राम नवल मिश्र जी लोक भाषा के ताकत आ सामरथ के नीक से चीन्हे–जाने वाला, गँवई मन–मिजाज के कवि हउवन। जिनिगी के उतार–चढ़ाव मे अपना संवेदन शीलता आ अनुभूति के सीधा, सरल उरेहे में एकदम बेबाक। जनभावना के सनेसवाहक का भूमिका में, ऊ कहीं कहीं बेवस्था आ राजनीति के विसंगतियन पर तिक्खर टिप्पनी करत बाड़न। आधुनिकता में फैशन आ नकल का नाँव पर लोक–संस्कृति आ परम्परा के दरकिनार करे वालन पर ऊ क्षोभ प्रकट करत बाड़न। अंग्रेजियत का चलते, मातृ भाषा आ मातृ–संस्कृति के अपमान उनका सहन नइखे होत। गाँव–घर बचवला आ सहेजला के जवन भाव उनका भीतर से उमगत बा, ऊहे पुरखन क परिपाटी रहल बा, एही परिपाटी में मानवता के रच्छा कइल जा सकेला––

पहिले करि के अँजोर घरवा – अँगना
तब जाके मन्दिरवा जराउ दियना !
.... जहाँ रहेला अन्हार उहाँ बसेले पिचास
जहाँ हउवे उजास उहाँ देवतन के बास
उनके पुजले पुरेला मनकामना !

XX XX XX

रस भेली भूजा लगल करछावे/चाय बिना हाय मचे बिस्कुटवे भावे
सोन्ह–सोन्ह सतुवा कऽ महकल बुताइल !

माई हऽ मम, चाची भइल अन्टी
बीना ह बेटी, त हो गइली बन्टी
पिता जी क 'पापा' ह नउँवाँ धराइल !

xx xx xx

कँकरी क कतरी भइल घर बखरी जबसे बँटल परिवार
आसनी भइल कटि कटि के अँगनवा, चटई भइल दुआर !

xx xx xx

संयुक्त परिवार क टूटल आ टुकड़ा–टुकड़ा बँटात खेत, गाँव आ ओकरा खेती–बारी के चउपट कऽ दिहले बा। शहरीकरन, विकास आ आधुनिकीकरन अगर सबसे बेसी कवनो नोकसान कइले बा त ऊ ह मानवी संवेदन–शीलता, सहअनुभूति आ संबंधन का मिठास के। एकरा वजह से भइल स्वार्थी बदलाव, प्रकृति के सहजता आ अदिमी के रागात्मकता के संतुलने गड़बड़ा देले बा–

जाने बहलि बाटे कइसन बयार मितवा
माली बगिया से करे ना पियार मितवा !.....
आस लगवलें हवें लोग, पी जालें पानी बादर
भोर बा भइल अँजोरवा के सउदा कइलें सौदागर
सूरुज बेचत बा किरिनिया बजार मितवा !

बिना सोचल–समझल बे जानल–बूझल विकास, आधुनिकीकरन का नाँव प बाजारीकरन खातिर अगुताइल नई बेवस्था के ई नतीजा बाग–बगइचा, खेत खरिहान आ गाँव–गिराँव के रहन–चाल कूल्हि बदल दिहलस। बन्दरबाँट के एह नया बेवस्था में कुछ लोगन के चानिये–चानी बा, बाकिर जनता क जवन हालत बा ऊ भेंड़ो–बकरी से बदतर। इहाँ त बस ''नेता, अधिकारी आ बैपारी के गँठजोड़ सउँसे फायदा खुल के चरि घालत बा––

'उनकर चानी, इनकर चानी, गोटी इनकर लाल बा
हमरे खातिर एगो टुकड़ा रोटी भइल मुहाल बा ! .....
नेता अधिकारी बैपारी उनकर चमचा आ दरबारी
साँठ गाँठ आपुस में कइके मिलिजुल काटत माल बा !

xx xx xx

बारी के बारी कोइलाँसी, कइसे फल कऽ आस करीं
मेड़वे खेत चरत हवे त केपर अब विश्वास करीं ?
जेके जनसेवक जनलीं बैपारी ठहरि गइल !

xx xx xx

रोज क बाटे इहे कहानी / कुँआँ खोदि पीयल जात पानी
दिन भर धावे, दिया भर पावे/मरि मरि हऽ जाला हुमास

मेहनत मजूरी आ खेती करे वाला क हालत अगर आजु ले नइखे सुधरल तऽ ओकर कारन इहे बेवस्था क भ्रष्टाचार आ बनरबाँट बा। मिश्र जी किसान आ मेहनत मजूरी करे वालन के पीर एहसे समुझ पवले बाड़न काहें कि ऊ ओही लोगन का बीच घाम–बरखा आ बाढ़ के अनुभव कइले बाड़न। नियति के चक्कर कबो सूखा, कबो बाढ़ जइसन आफत लियावेला आ कूल्हि कइल–धइल ब्यर्थ हो जाला–––

मछरी भइलि जिनगानी, भरल घरे अँगना बा पानी !
.....लुटि गइलें सपना तरइली फसिलिया
काम करत नइखे कवनहूँ अकिलिया

भुखिया–पियासन, ह अँतड़ी झुराइल
तड़पेले लरिके परानी भरल घर अँगना बा पानी !

लोक प्रचलित कवनो भाषा के आपन ठेठ–ठाट होला, मोहावरा कहावति लोकोक्तियो होला। भोजपुरियो में ऊ मिठास, गर्मी आ ठेठ–ठाट बा। लोकज शब्दन के सार्थक इस्तेमाल से भोजपुरी कवि अपना अभिव्यक्ति के जियतार त बनइबे करेला, साथे साथ अपना भाषा के क्षमता भा सामरथो क परिचय करावेला। भोजपुरी काव्य–परम्परा का लोकधर्मी रूप में जिनिगी आस्था–विस्वास, स्रम–साधना, प्रेम आ प्रकृति से विलग नइखे। एह संग्रह में मिश्र जी के रागात्मकता आ सौन्दर्यबोध के अच्छा गीत बाड़न स, जवना के पढ़ि के एकर परतीति कइल जा सकेला। डा0 अरुणेश नीरन लिखले बाड़न, ''लोधर्मी काव्य की परंपरा में ऋतुओं और संस्कारों के वे गीत आते हैं जिसमें खेतिहर जीवन से उर्वरता और स्फूर्ति ली गई है। यह पूरी परंपरा अपने पूरे वैभव के साथ मिश्र जी के काव्य में उपस्थित है।''

'नेह कऽ नदी' भोजपुरी मन–मिजाज, ओकरा बात–व्यवहार आ सोच–सरोकार के गीतन से भरल एगो पढ़े जोग काव्य संग्रह बा। ●●

[तीन] 'चिमनी के धुआँ' : एगो पठनीय कहानी संग्रह

❑ **सुशील कुमार तिवारी**

['चिमनी के धुआँ' (कहानी संग्रह), कथाकार– **रमेश चन्द्र,** प्रकाशक– सूर्यश प्रकाशन, आनन्दनगर, बलिया– 277001। पृ0 सं0– 124, मूल्य 120/– **]**

''अन्धकार के का धिक्कारीं, अच्छा बा एगो दिया जराई'' के सिद्धान्त वाक्य पर जिनगी जिये के हौसला वाला कथाकार रमेश चन्द्र बहुत सहज सरल आ समर्पित कथाकार हउवन। भोजपुरी में उनकर दू गो उपन्यास 'बालम परदेशी' प्रकाशित हो चुकल बा। 'चिमनी के धुआँ' एगारह गो भोजपुरी कहानियन के संग्रह ह ऽ एकर भूमिका भोजपुरी के वरिष्ठ कवि–कथाकार डा0 अशोक द्विवेदी लिखले बाड़न। उनका मोताबिक ''रमेशचंद बिना लाग लपेट, बिना भाषिक कलात्मकता के किस्सागोई' करे वाला कथाकार हउवन, जवन बदलत समय में बदलत समाज के मानव चरित्र के सिरजन का जरिये, मध्यवर्गी–परिवार में ढुकल विसंगतियन के उधार देलन। समाज के रूढ़ियन आ छुद्र मानसिकता पर चोट करत कथाकार रमेशचन्द्र अपना कहानियन में लेखकीय जागरूकता के बार–बार परिचय देत लउकत बाड़न।''

''मलिकार'' आ 'लइकिया पसन्ने नइखे' जइसन कथ्य आ विषय वस्तु से संपन्न कहानियन के जरिये रमेशचन्द्र एकोर, लड़की के बियहि आ दहेज आदि के समस्या पर अर्थवान कहानी बुनले बाड़न त दुसरा ओरि 'लोकतंत्र बिका गइल' आ 'सबेर के भुलाइल आंदि कहानियन के जरिये स्वतंत्र भारत आ ओकरा राजनीतिक माहौल के जियतार तस्वीर देखावत लउकत बाड़न। सेवा का नाँव पर स्वारथ सिद्धि, तिकड़म, छल जइंसन राजनीतिक कुवृत्तियन का चलते, समाजो के विघटन आ बिखराव बढ़ल बा। '' लखैरा बेटा'' एक दिन एही गोटी–बइठाव आ तिकड़म से विधायक बन मंत्री बने का चक्कर में भिड़ जाता कि समाजो ए घरी अइसनके लोगन के सफलता आ सामर्थ्य के आदर्श मान लेले बा। त्याग, निष्ठा लोक हित, पर दुख कातरता जइसन पुरान मानव मूल्यन के भिहिलात संरचना में प्रेम आत्मीयता आ सह अनुभूति से भरल संवेदनशीलता आ सम्बन्धन क मिठास बिला रहल बा ''लोकतंत्र बिका गइल'' 'सबेर के भुलाइल'', ''छूत'' जइसन कहानी एही साँच के उकेरत बाड़ी सन।

कुल मिलाइ के ई कहानी संग्रह भोजपुरी के आम पाठकन खातिर पढ़े–पढावे लायक बाड़ी स ऽ। एह कहानियन में सहज प्रवाह कहानियन के खास विषेशता बा। एह लिहाज से 'चिमनी के धुआँ' कहानी संग्रह, एगो अच्छा पठनीय किताब बा।

●●

मैथिली–भोजपुरी अकादमी दिल्ली के चार–दिनी संगोष्ठी

❑ सान्त्वना

दिल्ली सरकार के मैथिली–भोजपुरी अकादमी 03 नवंबर से 06 नवंबर तक रवीन्द्र भवन (मंडी हाउस) के कौस्तुभ सभागार में मैथिली आ भोजपुरी के चार–दिनी संगोष्ठी के आयोजन कइलस। एह स्तरीय आ सार्थक आयोजन में शामिल भोजपुरी मैथिली साहित्य प्रेमियन आ साहित्यकारन के उछाह देखि के लागल कि अकादमी अपना पिछला कार्यशैली से अलग हटि के, वाकई, मातृभाषा में लिखल साहित्य का प्रति गंभीर आ जागरूक भइल बिया। एह सफल आयोजन पर आखिरी दिन डॉ0 प्रमोद कुमार तिवारी भोजपुरी अकादमी के सचिव आ उनका स्टाफ के सराहना करत कहलन कि, 'मैथिली–भोजपुरी गीत में प्रकृति आ लोक के तरल आत्मीय रिश्ता का सहारे लोक जीवन के जियत–जागत साक्षात्कार करावे में समर्थ बा। मैथिली आ भोजपुरी दूनो ताकतवर आ समृद्ध भाषा हई सन इन्हनी के उर्वर परंपरा हिंदी के समृद्ध करत आइल बिया। ए कल्पना के माँग करत रहे वाला एह बाजारवादी समय में एह लोकभषन के बचावल, अपना भाषाई विविधता आ अपनो के बचावल होई।'

पहिला दिन 03 नवंबर के 'मैथिली साहित्य आ बाबा यात्री' विषय पर संगोष्ठी के अध्यक्षता प्रसिद्ध नाटककार श्री महेन्द्र मंगेलिया कइलन। श्री वीरेन्द्र मलिक आ डॉ0 देवशंकर नवीन आपन विचार रखलन। कवि रमन सिंह कार्यक्रम के संचालन कइलन। दुसरा दिने 'भोजपुरी साहित्य आ रघुवीर नारायण' विषय पर संगोष्ठी के शानदार संचालन वरिष्ठ पत्रकार श्री ओंकारेश्वर पाण्डेय करत डॉ0 रघुवीर नारायण के जीवन से जुड़ल कई प्रसंगन क चर्चा करत डॉ0 प्रमोद कुमार तिवारी के आलेख पाठ खातिर आमंत्रित कइलन। तिवारी जी भोजपुरी समाज के ओह परिस्थितियन के विश्लेषण करत कहलन कि 'बिदेशिया' आ 'बटोहिया' गीतन का रचना का पाछे ओह समय के राष्ट्रीय संदर्भ रहे। 'बटोहिया' गीत में भोजपुर के ना, बलुक भारत क वर्णन कइल गइल बा, जवन रचनाकार के व्यापक सोच के सूचक बा। भोजपुरी समाज खाली अपने ना, अपना देश का बारे में सोचत आइल बा। 'बटोहिया' गीत भोजपुरी लोगन में 'राष्ट्रगान' मानल जाला। दूसर वक्ता डॉ0 रामनारायण तिवारी ठेठ भोजपुरी के बात करत, भोजपुरी के सांस्कृतिक पारंपरिक संदर्भ आ काव्य–प्रतिमानन का आधार पर डॉ0 रघुवीर नारायन के 'बटोहिया' गीत के समीक्षा करत, कहलन कि हर भाषा के आपन रंगत होला, जवना के बचावे, के चाहीं। 'बटोहिया' गीत एक तरह से 'लोक' से लिहल चीझ लोके के समर्पित हऽ। डॉ0 अशोक द्विवेदी 'बटोहिया' गीत का संदर्भ में डॉ0 रघुवीर नारायण के अमर कवि क संज्ञा देत ओकरा महत्व पर प्रकाश डललन। श्री अजीत दुबे, दिल्ली में भोजपुरी के विकास आ अकादमी का भूमिका पर आपन विचार रखलन। रघुवीर नारायण के पौत्र श्री प्रताप नारायण अध्यक्षीय भाषन देत कुछ सवालन के जबाब दिहलन जवन श्रोता वर्ग से पूछल गइल।

श्री राजेश सचदेवा एह गोष्ठी के संकल्पना आ एकरा सफल आयोजन पर आपन विचार रखत आगन्तुक साहित्यकारन का सहयोग पर आभार प्रगट कइलन।

तिसरा दिन मैथिली में श्री धरम के कहानी पाठ आ बिभा रानी के काव्य–पाठ रहे। श्रीधरम वर्तमान समाज के विसंगतियन पर रचल कहानी सुनवलन जवना में बेरोजगारी आ गरीबी से आजिज आदमी कइसे अमानवी आ स्वार्थी पशु बन के अपना बाप के एह खातिर हत्या क देत बा कि अनुकंपा का आधार प, ओके नोकरी मिल जाय। श्रीमती विभा रानी मैथिली समाज के स्त्री के स्थितियन पर कुछ गीत सुनवली। आखिरी दिन **06 नवंबर** के डॉ0 आशारानी लाल के कहानी पाठ भइल। सौतन क जरिये लगातर उपेक्षा सहे वाली आ अपना पूरा जिनिगी पति के सुख से वंचित स्त्री के शान्त भाव से सबकुछ सहत जाये वाली मार्मिक जिन्दगी के सूक्ष्म अंकन कइली। डॉ0 रमाशंकर श्रीवास्तव का सुझाव पर, कहानी पर चर्चा करत डॉ0 प्रमोद तिवारी भोजपुरी समाज आ ओह विसंगति पर सवाल उठवलन जवना में स्त्री के 'वस्तु' का रूप में देखल जाला। डॉ0 रमाशंकर श्रीवास्तव कहानी में बिम्बविधान पर प्रकाश डललन। साहित्य अकादमी के उपसचिव श्री ब्रजेन्द्र त्रिपाठी भोजपुरी समाज के यथार्थ के चर्चा करत कहानी के विश्लेषण कइलन। युवा आलोचक श्री सुशील कुमार तिवारी भोजपुरी समाज में स्त्री के स्थिति आ ओकरा जकड़न में बन्हाइल औरत के विद्रोह ना कइला पर सवाल उठावत कहानी के रेखाचित्र का कोटि में रखलन।

दुसरा सत्र में आधुनिक चेतना आ लोकजीवन के समेटले मधुर गीतन के सुना के डॉ0 अशोक द्विवेदी एगो समाँ बान्ह दिहलन। बिल्कुल अछूता बिम्ब आ नया संवेदना से लैस गीत, परंपरा का नाँव पर चलत जड़ता के तूरत, अनुभूति आ संवेदना के नये जमीन पर खड़ा क दिहलस। लोकजीवन में मौसम आ प्रकृति से सामान्य जन के संबंध आ विपरीत परिस्थितियन में ओकरा मानसिक उद्वेग, सोच आ सरोकार के परोसत अशोक द्विवेदी के मर्मस्पर्शी गीतन से श्रोता मंत्रमुग्ध हो उठलन स।

अंत में सचिव राजेश सचदेवा एह सफल कार्यक्रम पर हर्ष प्रगट करत डॉ0 प्रमोद तिवारी के बोलवलन। श्री तिवारी आपन उद्‌गार प्रगट कइलन, 'जवना रस, आत्मीयता आ तरलता के अभाव एह शहरी जीवन में बा, ओकर मूल सोत जड़ से जुड़ले में बा। भोजपुरी भाषा मूल जड़ हवे। आज एह सरस काव्यपाठ से भोजपुरी भाषा के ऊ सामरथ आ ताकत सबके समझ में आइल होई। एह लिहाज से ई आयोजन सफल आ सराहे लायक बा।'

●●

राउर पन्ना

अइसे त हम 'पाती' के बहुत पहिलहीं से बड़ा चाव आ उत्साह से पढ़ेनी, मित्र मंडली में ओकरा विषय–वस्तु पर चरचा करीलें आ ओकर प्रत्येक अंक के सहेज के रखीले, बाकिर आज जब सितम्बर 2012 के अंक पवनी ह त ओकरा कवर पृष्ठ के साज–सज्जा देख के मन रउवा के लिखे के भइल ह। लिखे के पीछे इ कतई इच्छा नइखे कि हमार पत्र 'पाती' में छपे, हा हम इ जरूर चाहत बानी के हमार इ विचार सम्पादक जी तक पहुँचे। कवनो भाषा के साहित्यिक पत्रिका के प्रत्येक दृष्टिकोण से जवन मानक होखे के चाहीं, ओसे हमन के इ 'पाती' उनइस के त सवाले नइखे, इकइस बिया एमे कवनो शक–सुबहा के गुंजाइस नइखे। चाहे मुख पृष्ठ के साज सज्जा के बात होखे, छपाई, अक्षर संयोजन, कागज के क्वालीटी आ विशेषकर के ओकरा भीतर के विषय वस्तु, सगरीन के कवनो जबाब नइखे।

आनन्द 'संधिदूत' जी के 'इ चनन वन गउवाँ सरप लटके' आ ओकरा साथे के ग्राफिक्स देखि–पढ़ के एगो सुखद अनुभूति भइल आ भाव गहिरे तक उतर गइल। अइसे त हरेक कविता, कहानी, आलेख आ स्थायी स्तम्भ स्तरीय आ हरेक दृष्टिकोण से पूर्ण बा लेकिन पाण्डेय कपिल जी, जिनका दोहा के त बहुत पहिलही से कायल हईं, गजल, विष्णुदेव तिवारी जी के कहानी 'जमीन', शशि प्रेमदेव जी के 'जिनिगी के गीत' सीधे भीतर तक गहिरे पइठ गइल आ हम समझत बानी कि केहु भी संवेदनशील व्यक्ति के भीतर तक झकझोर देबे वाला इ रचना बाड़ी सन। संपादक जी के 'हमार पन्ना' त हमेशा के तरह समाज आ देश के आइना दिखावत सच के झंडा गाड़त बा, 'शिलीमुख' जी के 'फेरू वैतलवा डाल पर' सोना में सुगंध नियर लागल। कुल मिला जुला के हमरा 'पाती' के स्तर, कवनो भाषा के साहित्यिक पत्रिका से आँख में आँख मिला के ओकरा सामने सर उठा के बेहिचक खड़ा होखे वाला लागल।

'फेरू वैतलवा डाल पर' के सच्चाई जइसे ऐना देखत होखीं ओइसने लागल। 'शिलीमुख' जी के बारे में जाने खातिर एह अंक के रचनाकार कालम के बड़ा अखिआँव से पढ़नी, बाकिर निराशा हाथे लागल। अन्त में हम अपना ए पाती के माध्यम से समस्त 'पाती' परिवार के साधुवाद देत बानी कि आप सभ के प्रयास सराहनीये ना बलुक प्रयास से हासिल एकदम अउव्वल आ अनुकरणीय बा। लाजबाब, उम्दा 'पाती' खातिर, इहे 'शब्द' हमरा जानकारी का भंडार में बा।

❑ **कौशलेन्द्र कुमार सिन्हा**
एस.बी.आई. सिटी, बलिया

पाती के अंक 65 मिलल। कवर आ भितरी कवर के कविता आ चित्र के संजोजन बहुते बढ़िया। संधिदूत जी के ई रचना हम बहुत पहिले सुनले रहलीं, बाकिर ओकर भाव चित्र अद्भुत। अक्षय पाण्डेय के गीत नया किसिम क लागल, कुछ हिन्दी लेखा। बाकिर कविता क विषय वस्तु प्रभावित करे वाला रहे। विष्णुदेव के कहानी शिलीमुख आ राजगुप्त के भोजपुरिया अंदाज वाला लेख जोरदार बा। रमेश चन्द्र के कहानी 'मलिकार' कहानी के थीम अच्छा रहे। अउर सभ स्तम्भ का साथे संपादकीय हमेशा लेखा गम्हीर आ बेबाक। एगो बात फिर खटकल। एह अंक में समीक्षा आ पुस्तक चरचा के कालम 'कसौटी' ना लउकल। भोजपुरी साहित्य के प्रचार प्रसार आ जानकारी खातिर ई स्तम्भ चलत रहे के चाहीं।

❑ **ऋचा**, C/o- **विजय दुबे**
रतनगंज, मिर्जापुर

गजल

■ रामेश्वर प्रसाद सिन्हा 'पीयूष'

वक्त पर आँटे चलल बा लोग
दर्द दे, बाँटे चलल बा लोग

काँट पर केकरो नजर नइखे
फूल के छाँटे चलल बा लोग

साथ बा हँसुआ अन्हारा के
रोशनी काटे चलल बा लोग

बढ़ रहल खाई जमाना के
आग से पाटे चलल बा लोग

जिंदगी के फटल जब पन्ना
थूक से साटे चलल बा लोग

रेत के 'पीयूष', मिलिहें गाँव
धुन में ओह बाटे चलल बा लोग।

भोजपुरी भाषा, समाज, संस्कृति आ साहित्य पर केन्द्रित 'पाती' के विशेषांक जून 2013
शोधकर्ता, रचनाकार आ विद्वान लोगन से भोजपुरी अथवा हिन्दी में विशेष आलेख आमंत्रित बा

रजि0 नं0– आर0एन0 3548/79 (वर्ष 1979)

पाती अंक–66/दिसंबर, 2012

BIG SEA MEDIA PUBLICATION

40/76, LGF, C.R. PARK, NEW DELHI-110019

Ph.: 09310612995 E-plyreportersubscription@gmail.com

स्वामित्व, प्रकाशक– सम्पादक डॉ0 अशोक द्विवेदी, टैगोर नगर, सिविल लाइन्स, बलिया (उ0प्र0)

रवि आफसेट, द्वारिकापुरी कालोनी, सिविल लाइन्स, बलिया से मुद्रित

श्रीराम विहार कालोनी, बलिया 277001 से प्रकाशित